Government Ranbir College, Sangrur

Supportive Documents

Criterion-3

Sub-Criterion-3.3.1

GOVT. RANBIR COLLEGE SANGRUR (PUNJAB)

ਸਥਾਪਿਤ:1939

Criterion - 3.3.1 **Sub Criterion :**

SR. NO	CONTENT	PAGE
1.	2018-19	3-20
2.	2019-20	21-31
3.	2020-21	32-37
4.	2021-22	38-46
5.	2022-23	47-59

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.pramanaresearchjournal.com
Impact Factor : 4.005

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2249-2976

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :

Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241

Year : 7
Issue : 30
October-December 2018
www.chintanresearchjournal.com

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

Pramāna
International Refereed

Impact Factor : 4.005

Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-7, Issue-30 (Oct-Dec. 2018) (Page No. 120-123)

समाज में शिक्षक की भूमिका: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. रणधीर कौशिक (उपाचार्य)
अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर (पंजाब)

शोध-आलेख सार

आधुनिक समय में कुछ अध्यापकों के पथभ्रष्ट होने के कारण ही ऐसी समस्यायें उत्पन्न हुई है कि समाज में शिक्षक के प्रति अध्यापक समाज को दोषी नहीं मान सकते, आज भी अधिकतर शिक्षक ऐसे है जिनका समाज में अपना स्थान है, वे लोगों के लिए अध्यापक अपने शिष्यों से एवं समाज से सदा सम्मान पाते है। आज राजनेताओं के निकृष्ट आचरण से जो शिक्षा नीति का खाका तैयार किया गया है वह ही समाज के नष्ट करने वाला है। जैसे कि कठोपनिषद में कहा गया है जैसी शिक्षा नीति होगा वैसा ही समाज होगा अविद्या के मध्य में फंसे हुए अपने आपको विद्वान एवं बुद्धिमान मानने वाले मूर्ख लोगों अर्थात अन्धे व्यक्ति के पीछे चलने वाले अन्धों की भान्ति समाज भटकता ही रहेगा।[11] यदि समाज एवं राष्ट्र को विकास के पथ पर ले जाना है तो शिक्षक की गरिमा को बहाल करना होगा उसको सामाजिक सुरक्षा प्रदान करनी होगी। हमें अपने समृद्ध प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति में से नैतिक मूल्यों को जोड़ना होगा।

मुख्य-शब्द : सर्वांगिण विकास, मितभाषी ।

भारतीय संस्कृति में पुरातन काल से ही अध्यापक का स्थान सर्वोपरि रहा है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक अध्यापक के अनेक रूपों से हमें अध्यापक की भूमिका का वर्णन प्राप्त हुआ है। अध्यापक को समाज ने सदैव सम्मान की दृष्टि से ही देखा है, उसने गुरू के रूप में आचार्य के रूप में, शिक्षक के रूप में अध्यापक ने सदैव समाज को नई दिशा प्रदान की है। वह सदैव शिक्षा प्रक्रिया का महत्वपूर्ण बिन्दू रहा है। सभी संस्कृतियों में शिक्षक (अध्यापक) की आवश्यकता एवं महत्व को आदर्शवादी अध्यापक (शिक्षक) को शिक्षा प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दू माना गया है। वेदों में अध्यापक (शिक्षक) के विषय में कहा गया है कि जो असत्य से सत्य की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर तथा मृत्यु से अमरता की ओर ले जाता है वह शिक्षक है।[1]

उपनिषदों में जहां अध्यापक को देवता के समान मानकर उसको पूजनीय बताया है, तीनों लोकों में (शिक्षक) की तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती, माता पिता के साथ-साथ आचार्य (शिक्षक) को भी परम वन्दनीय माना है।[2]

पुराणों एवं धर्म शास्त्रों में तो शिक्षक को साक्षात् ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश मानकर इनको प्रणाम किया गया है।[3] उनके अनुसार एक शिक्षक उस दीपक की भांति है जो स्वयं जलकर दूसरों को रोशनी ही नहीं देता अपितु अनेक दीपों को भी प्रकाशित करता है। आचार्य (शिक्षक) एवं विद्यार्थी दोनों मिलकर शिक्षा समाप्ति पर प्रार्थना करते है

"सह नौ अवतु, सहनौं भुनक्तु, सह वीर्य करवावाहै।
तेजस्वि नौ अधीतमस्तु, मा विद्धिषावहै।[4]

अर्थात् हम दोनों परस्पर एक दूसरों की रक्षा करें, विद्या रूपी प्रसाद का परस्पर मिलकर उपभोग करें, आपस में मिलकर अविद्या रूपी अन्धकार को दूर करने के प्रयत्न करें, हमारी विद्या तेजस्विनी हो तथा हम दोनों परस्पर कभी भी एक दूसरों से विद्धेष न करें। इस प्रकार शिक्षक ऐसे विद्यार्थी तैयार करता था जो आगे हजारों दीपों को प्रज्जवलित करते थे। योगवशिष्ठ में गुरू की परम्परागत संकल्पना चरितार्थ हुई है जिसके अनुसार गुरू गुणों का पूंज व पूर्णता प्राप्त मानव होता है जैसे शिष्य द्वारा गुरू वशिष्ठ की स्तुति करते हुए कहा गया है कि परम सुख देने वाले ब्रह्म नंद रूप अद्धितीय ज्ञान मूर्ति, द्वन्द्वों से शून्य आकाश के सामान स्वच्छ, समस्त बुद्धियों के साक्षी, भाव से अतीत तीनों गुणों से रहित महा मुनि वशिष्ठ को मैं प्रणाम करता हूँ।[5] इस प्रकार योगवशिष्ठ गुरू (शिक्षक) को उच्चतम स्थान प्रदान करता है। अध्यापक या शिक्षक के विषय में आचार्य यास्क लिखते है कि - आचारं ग्राहयति इति आचार्य अर्थात जो विद्यार्थियों के अच्छे आचरण अच्छे व्यवहार का ज्ञान देता है वह आचार्य होता है। आगे ओर भी कहते हैं कि अचिनोति बुद्धि इति आचार्य अर्थात् जो बुद्धि का चयन करता है वही आचार्य या अध्यापक है।[6] मनु महाराज ने तो आचार्य या अध्यापक को ब्रह्मा की मूर्ति माना है। अर्थात जो ज्ञान की रोशनी फैलाता है वह आचार्य होता है।[7] भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में अध्यापक की भूमिका समाज को सुधार की ओर ले जाने वाले मार्ग दर्शक के रूप में होती है। महात्मा कबीर भी आचार्य को आदर्शो का समूह मानते है वे तो ज्ञान देने वाले आचार्य को ईश्वर का प्रतिनिधि मानते हैं इनके अनुसार यदि गुरू सही मार्ग का चयन करता है तो ही व्यक्ति (शिष्य) परम तत्व को प्राप्त हो सकता है। वह तो अपने गुरू पर ही बलिहारी है जिन्होनें शिष्य को गोबिन्द तक पहुँचने का मार्ग बतलाया है।[8] कबीर जी आगे और भी कहते है -

सब धरती कागद करूँ लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मस्सी करूँ गुरू गुण लिखान जाये।[9]

अर्थात् सारी पृथ्वी कागज बन जाए, सभी बन लेखनी बन जाये सात समुद्रों का पानी स्याही बन जाये तो फिर भी गुरू के गुणों को लिखा न जाये, अध्यापक का पद बहुत ऊँचा है, वह अपने शिष्य पर बिना किसी भेद भाव के प्यार एवं वात्सल्य का खजाना लुटा देता है। वह उसको आपने पुत्र से भी अधिक स्नेह करता है। उसे उसके कर्तव्यों का पालन करने का ज्ञान देकर उसको जीवन में आने वाली हर कठिनाई का सामना करने के योग्य बनाता हैं, उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना अपना वात्सल्यपूर्ण अधिकार समझता था। मनु महाराज ने भी कहा है

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशो बलम्।[10]

अर्थात शिक्षक अपने विद्यार्थी को सिखलाते हुए कहता है कि जो शिष्य नित्य प्रातः उठकर अपने बड़ों को प्रणाम करता है, नमन करता है उनकी सेवा करता है, स्वाभाविक रूप से उसकी आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते चले जाते है। समाज में कब, क्या कैसे करना है यह अध्यापक अपने विद्यार्थियों को सिखलाता रहता है। अध्यापक निराशता के अन्धकार में स्वयं ही घिरता जा रहा है। गुरूकुल शिक्षा पद्धति के समाप्त होने के बाद तो मैकाले द्वारा बनाई गई शिक्षा नीति एवं आधुनिक राजनैतिक एवं सामाजिक परिवेश ने अध्यापक को शून्य बना दिया है, प्रतिदिन प्रिन्ट मीड़िया एवं टी.वी. आदि पर प्रतिदिन ये समाचार आते है कि विद्यार्थियों ने अपने ही अध्यापक को गोली मार दी, सभी जगह से अप्रिय घटनाओं से अखबार भरे रहते है। शिक्षक बेचारा वेतन न मिलने के कारण प्रतिदिन हड़ताल, धरने आदि में लगा रहता है, उसको अपने परिवार को पालने के लाले पड़े रहते है। सरकारें प्रतिदिन शिक्षकों को दौड़ा-दौड़ा कर पीटती हैं, याद रखिये

जिस देश का शिक्षक अपने अधिकारों की लड़ाई के लिये सड़क पर उतरेगा तो उस देश की शिक्षा प्रणाली को क्या हो सकता है। आज के युग में सौशल मीडिया व प्रिन्ट मीड़िया के माध्यम से विद्यार्थियों के पास इतनी सामग्री उपलब्ध है कि अब उसे सम्भवत: शिक्षक की आवश्यकता ही कम लगती है फिर भी यह आंकडा कुछ अच्छे शिक्षक पर ही निर्भर रहता है। भारत गावों की अधिकतर आबादी वाला राष्ट्र है वहां की शिक्षा शिक्षक पर ही निर्भर करती है।

आधुनिक समय में कुछ अध्यापकों के पथभ्रष्ट होने के कारण ही ऐसी समस्यायें उत्पन्न हुई है कि समाज में शिक्षक के प्रति अध्यापक समाज को दोषी नहीं मान सकते, आज भी अधिकतर शिक्षक ऐसे है जिनका समाज में अपना स्थान है, वे लोगों के लिए अध्यापक अपने शिष्यों से एवं समाज से सदा सम्मान पाते है। आज राजनेताओं के निकृष्ट आचरण से जो शिक्षा नीति का खाका तैयार किया गया है वह ही समाज के नष्ट करने वाला है। जैसे कि कठोपनिषद में कहा गया है जैसी शिक्षा नीति होगा वैसा ही समाज होगा अविद्या के मध्य में फंसे हुए अपने आपको विद्वान एवं बुद्धिमान मानने वाले मूर्ख लोगों अर्थात अन्धे व्यक्ति के पीछे चलने वाले अन्धों की भान्ति समाज भटकता ही रहेगा।[11] यदि समाज एवं राष्ट्र को विकास के पथ पर ले जाना है तो शिक्षक की गरिमा को बहाल करना होगा उसको सामाजिक सुरक्षा प्रदान करनी होगी। हमें अपने समृद्व प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति में से नैतिक मूल्यों को जोड़ना होगा। विद्यालय से लेकर महाविद्यालय, विश्वविद्यालय तक जो आधुनिक समय में केवल व्यापरिक संस्थान बने हुए है। राजनेताओं एवं अफसरों के रहमो कर्म पर चल रहे है, उनको इस चुगल से मुक्त कराना होगा। तभी शिक्षक की गरिमा बहाल हो सकेगी। शिक्षक एवं अध्यापक समाज को भी अपने अन्तकरण को लोभ एवं स्वार्थ से मुक्त होकर, तर्कशक्ति, कुशलता एवं उच्च नैतिक मूल्यों को स्थापित करना होगा। कहा जाता है कि माता-पिता के बाद बच्चे के निर्माण में सब से बडी भूमिका अध्यापक की हो जाती है। चाणक्य, द्रोणाचार्य एवं परशु राम आदि शिक्षकों को कोन नहीं जानता जिन्होने अपने बुद्वि बल से किसी सामान्य छोटे से बच्चे चन्द्रगुप्त मौर्य को चक्रवती सम्राट बना दिया। बली, एकलव्य, अर्जुन, कर्ण, कृष्ण, सुदामा, राम, लक्ष्मण जैसे अनेक शिष्यों को अध्यापकों ने ही उच्च आदर्शो तक पहुँचाया है।[12] यदि एक शिक्षक अपने विद्यार्थियो को अच्छा इंसान बनाने में कामयाब हो जाये तो राष्ट्र में व्याप्त सम्पूर्ण बुराईयों का समूल नाश स्वयं हो जायेगा। आधुनिक युग में ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब समाज एवं सरकारें शिक्षक को सम्मान दें उसके आर्थिक पक्ष को मजबूत करें। बच्चों की पूर्ण जिम्मेदारी शिक्षक के ऊपर ही छोड़ दें, छोटी-2 बातों पर हस्तक्षेप न करें। माता पिता अपने बच्चों को ऐसी सीख दें कि वे अपने शिक्षक का सम्मान करें, उनके कहे अनुसार ही आचरण एवं व्यवहार करे। सरकारों एवं शिक्षा नीति बनाने वालों को भी ऐसे कदम उठाने होगें, जिससे शिक्षक का सम्मान बना रहे। पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों वाली पुस्तकों का समावेश करें, अपने गौरवमयी इतिहास एवं सभ्यता, संस्कृति का अनुसरण करें। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा से अच्छी बातों को ही ग्रहण करें। आज शिक्षक के प्रति समाज का नज़रिया बदला है। शिक्षक अब समाज की आखों में खटक रहा है। वह भौतिकवाद में फंसकर शिक्षा क्षेत्र में व्यापारी की भूमिका निभा रहा है। वह आदर्श अध्यापक ईमानदारी, सदाचार, प्रेम, निष्पक्षता आदि गुणों को भूलकर लालची अपने कर्तव्य के प्रति उदासीन हो गया है। शिक्षक स्वयं भूल गया है कि वह समाज की व शैक्षणिक व्यवस्था की रीढ़ को ठीक करने वाला डाक्टर है। वह संस्कृति का प्रवक्ता है सम्यता का संरक्षक है, जीवन मूल्यों का पैगम्बर है, वह इतिहास का निर्माता है। अध्यापक के गुणोंसे ही समाज़ को नई दिशा मिलती है। अध्यापक या शिक्षक के गुणों के विषय में योग वशिष्ठ में बताया गया है कि शिक्षक विशिष्ट ज्ञान से युक्त व प्रज्ञावान होना चाहिए, उसमें उतम मानव बनने के सभी गुण होने चाहिए शिष्य के प्रति प्रेम व सहानुभूति का भाव अवश्य होना चाहिए। शिक्षक का तत्व ज्ञानी होना आवश्यक है तभी वह शिष्य को तत्व ज्ञानी बना सकता है। नहीं तो उससे बढ़कर कोई

मूर्ख नहीं है। और भी कहा गया है कि शिक्षक सदैव समान दृष्टि युक्त होना चाहिए। समस्त शिष्यों के प्रति समानदृष्टि से युक्त शिक्षक ही उतम शिक्षक की श्रेणी में आते है। अध्यापक का उदारहृदय होना भी अति आवश्यक है क्योंकि -

अयं वंधुयंनेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु विगताववरणवाधी।।

अर्थात् यह मेरा है यह अन्य का है यह गणना तो तुच्छ चरित्र वाले मानव करते है। उदार व महान चरित्र वालों के लिये तो रस प्रकार की आवरण बुद्धि नष्ट हो जाती है। इसके साथ ही शिक्षक को गुणग्राही, दुर्गणों का एवं दुराचरणों का त्याग करने वाला होना चाहिए।

योग वशिष्ठवर के अनुसार शिक्षक के लिये उसका विद्वान होना उवं मानवीय गुणों से सम्पन्न होना परम आवश्यक है। दोनों गुणों से सम्पन्न शिक्षक ही पूर्ण शिक्षक है।

इस प्रकार आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण दायित्व यह है कि वह निष्पक्ष भाव से ईमानदारी, सहयोग, धैर्य, सहनशील मितभाषी, समय का पाबन्द, अनुशसित, चरित्रवान, पथ प्रदर्शक का आदर्श प्रस्तुत करें। विद्यार्थियों में पनप रही अनुशासनहीनता, उद्दडता व आकोश को रोकने के लिये उनके अन्दर नैतिक मूल्यों का सृजन करें। किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिकता भी दर्शन कराये। उनको पूर्णरूप से तकनीक से जोड़कर उनके ज्ञान को बदलते समय के साथ मोड़कर उनका सर्वागिण विकास करे। ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब एक शिक्षक अपनी महता स्थापित करें, अपने जिम्मेदारी समझे और विद्यार्थियों का आदर्श एवं प्रेरणास्त्रोत बनकर अपने उतर दायित्व का निर्वहण करें। तब इस देश की शिक्षा प्रणाली का स्तर स्वयं ही उपर उठेगा और मेरा देश स्वयं ही विश्व गुरू की पदवी को धारण करेगा।

संदर्भ

1. असतो मा सद् गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतम गमय
2. मातृदेवो भव पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव: अतिथिदेवो भव:। तैतिरिय उपनिषद् शिक्षा बल्ली
3. गुरूर्ब्रह्मा: गुरूर्विष्णु: गुरू: देवो महेश्वर:
   गुरू साक्षात परं ब्रह्मा तस्मै श्री गुरवे नम:। पुराण विमर्श पृ. 79
4. निरूक्त, पृ. 123
5. आचार्यो ब्रह्मणों मूर्ति: पिता मूर्ति: प्रजापते। मनुस्मृति - 2/215
6. गुरू गोबन्द दोऊ खड़े काके लागू पाय।
   बलिहारी गुरू आपनो जिन्ह गोबिन्द दियो मिलाय । कबीर दोहावली-2
7. कबीर दोहावली - 13
8. मनुस्मृति - 2/12
9. अविद्यायामन्तरे वर्तमाना: स्वयंधीरा: पण्डित मन्य माना:।
   दन्द्रम्यमाण: परियति मूढा अन्धेनैवनीयमाना यथान्धा:।। कठोपनिषद 1/2/5
10. हिन्दू संस्कृति, पृ. 172
11. अतत्वज्ञमनादेयवचन वाग्विदां वर।
    य: पृच्छति परं तस्मात्रस्ति मूढ़तरोपर:। योग वशिष्ठ 2/11/45
12. हिन्दु संस्कृति, पृ. 172
13. योगवाशिष्ठ, 2/11/46
14. योगवाशिष्ठ, 5/18/61
15. योगवाशिष्ठ, 1/27/11

6

INSIGHT

(An International Journal of Humanities and Management)
A Peer-Reviewed Referred Research Journal

Annual Vol. V Issue 5

Chief Patron: **S. Balwant Singh Randhawa**
Secretary, College Trust

Patron: **Dr. Swinder Singh Chhina**
Principal

Editor-in-Chief: **Dr. Balbir Singh**
Associate Prof. & Head
Department of Economics,
Commerce & Management

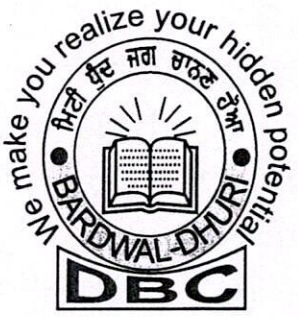

DESH BHAGAT COLLEGE

BARDWAL – DHURI

Ph. : 01675-265248, 98151-34094

ISSN : 2394-7462

राष्ट्र निर्माण में वर्तमान समय में श्रीमद्भगवद् गीता की उपादेयता

डॉ. रणधीर कौशिक, (उपाचार्य)
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर। (पंजाब)

श्रीमद्भगवद् गीता भारतीय वाऽमय का एक देदीप्यमान रत्न है। विश्व के सम्पूर्ण आध्यात्मिक साहित्य एवं दर्शन में इसका स्थान सर्वोच्च है। यह एक ऐसा सर्वमान्य ग्रन्थ है जिसका स्वदेश एवं स्वधर्म से ही नहीं अपितु विदेशों एवं सभी धर्मों में भी सर्वाधिक मान्य है। श्रीमद्भगवद् गीता सर्वशास्त्र मयी है। इसमें सम्पूर्ण शास्त्रों का सार सन्निहित है। महर्षि वेदव्यास का यह कथन – ''गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यै शास्त्र संग्रहै1 सत्य ही है। भगवान श्री कृष्ण के द्वारा दिया गया यह दिव्य सन्देश (उपदेश) किसी काल, क्षेत्र या परिस्थिति तक सीमित नहीं है अपितु यह समस्त कालों में सम्पूर्ण विश्व के लिये प्रासडिक एवं उपादेय है, इसका ज्ञान सर्वकालिक एवं सर्वदेशीय है। इसमें भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान है।

यद्यपि श्रीमदगीता सदा से ही उपयोगी ग्रन्थ रहा है फिर भी वर्तमान युग में इसकी प्रांसगिकता और भी अधिक हो गई है। आधुनिक समाज में अनेकों विसंगतियाँ विषमताऐं, उद्विग्नता, क्लेश, कष्ट के साधन सुरसाकृति में दिखाई पड़ते है। सम्पूर्ण विश्व आज हिंसा, आंतकवाद, भूखमरी, आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार एवं चारित्रिक पतन आदि अनेकों समस्याओं से ग्रस्त है।

वैज्ञानिक प्रगति की आड़ में मूलभूत समस्याओं की ओर शासक लोगों का ध्यान नहीं जा रहा है। शासक एवं व्यापारी धन संग्रह एवं विलासिता के लिये अमर्यादित आचरण कर रहे हैं, आदर्श एवं नैतिक मूल्य जीवन शैली से नष्ट होते जा रहे हैं, विशेष रूप से युवा पीढ़ी में वैचारिक, चारित्रिक एवं परम्परागत मूल्यों का ह्रास हो रहा है। ये आज कुछ ऐसे यक्ष प्रश्न है? जो हमारे सामने विकटतम रूप धारण किये हुए है। इन सभी समस्याओं के समाधान में आज का नागरिक अपने आप को असहाय मान रहा है। उस के मन में निराशा के भाव आ रहे है। आज का युवा उसी चौराहे पे खड़ा है, जहां जीवन के अन्तर्द्वन्द्व में फंसा हुआ अर्जुन खड़ा था। वह सोच रहा था कि क्या करें क्या न करें? क्या उचित है? क्या अनुचित है? इसी समस्या को हल करने के लिये भगवान कृष्ण ने समस्त मानव जाति के कल्याण के लिये एक नूतन एवं अद्भूत विचार (ज्ञान) को जन्म दिया उन्होने दुविधा में पड़े हुए अर्जुन को जिस तरह से बाहर निकालने का प्रयास किया, उसी प्रकार उन्होनें मनुष्य को समस्याओं का समाधान निकालने का सुगम मार्ग भी बतलाया है। भगवान कृष्ण बताते है कि मनुष्य को सदैव अपने धर्म का पालन करना चाहिये, उनके अनुसार यदि मनुष्य अपने धर्म का पालन नही करता, तो वह पाप का भागी होता है, गीता में श्री कृष्ण कहते है कि –

स्वधर्मपि चावेक्ष्य न विकम्पितुभर्हसि।
धर्म्यादि युद्धाच्छ्रेयोऽन्य त्क्षत्रियस्य न विधते।।1

अर्थात् हे अर्जुन यदि तुम अपने क्षत्रिय धर्म का पालन नहीं करोगे तो तुम्हे पाप लगेगा और लोग तुम्हारे इस व्यवहार की निन्दा करेगें जो कि मृत्यु से भी कष्टकारी होगी। अतः गीता हमें यही सन्देश देती है कि मनुष्य को कभी भी अपना धर्म नहीं छोड़ना चाहिये।

आज हमारे देश की युवा पीढ़ी विषम परिस्थितियों से गुजर रही है। यदि आज हम अपने मन की

विवशता के वश में होकर अपने आप को दुर्बल कर समाज एवं अपने राष्ट्र के लिये कुछ नहीं करेगें तो आने वाली पीढ़िया हमें कभी भी माफ नहीं करेंगी तथा आज हम समाज में अपयश के भागी बनेगें। आज सबसे पहले हमें अपने आप से जीतना होगा। हमारे मन में छुपी हुई बुराईयों रूपी कायरता से लड़ना होगा। अपने देश का वह खोया हुआ गौरव वापस लाना होगा। ईश्वर के द्वारा दिया गया प्रत्येक कार्य हमें निष्काम भाव से करना होगा। जैसा कि भगवान कृष्ण ने कहा है –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भूमा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।2

अर्थात् भगवान कृष्ण ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि हे अर्जुन तु केवल कर्म कर फल की ईच्छा मत कर। निष्काम कर्म में कितनी शक्ति होती है हमें ज्ञात नहीं है। मनुष्य द्वारा किया गया कर्म पूरे विश्व को सकारात्मक उर्जा दे सकता है। जो कर्म हमारे ऋृषियों मुनियों ने किया था उसका गुणगान हम आज भी करते है, आज हम भी कुछ ऐसा ही कार्य करे जिससे हमारी आने वाली पीढ़िया याद रखें। कर्म सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि प्रत्येक प्राणी कर्म बन्धन में बंधा हुआ है, वह एक पल भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता है, कोई भी मनुष्य कर्म अकर्म से नहीं बच सकता, कर्म तो करना ही होगा, वह कर्म जो फल की ईच्छा के बिना किये जाते हैं निष्काम कर्म कहलाते हैं, जो कुछ भी तुम कर्म करो उसको मेरी ईच्छा मान कर करो क्योंकि मेरे आदेश का निर्वहन समझकर किये जाने वाले कर्मो का मनुष्य को पाप–पुण्य नहीं लगता। इस प्रकार श्रीमद् भगवद गीता के अनुसार सभी को अपने–अपने वर्ग धर्म के अनुसार कार्यों का निर्वहन करना चाहिये। उनसे विमुख नहीं होना चाहिये क्योंकि भगवान श्री कृष्ण कहते है –

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विह्य कर्त्तरमव्यम्।।[3]

अर्थात् ये चार वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र इन चारों वर्णो की व्यवस्था ईश्वर के द्वारा गुण और कर्म के भेद पर ही निर्धारित की गई है, जिस वर्ण का जो स्वाभविक कर्म है वही उसका अपना धर्म है, स्वभाव के अनुसार जो विशेष कर्म निश्चित है, वही स्वधर्म है, इसी को मनुस्मृति में मनु महाराज ने भी कहा है कि –

वरं स्वधर्मो विगुणों न पारक्यः स्वनुष्ठितः।
परधेर्मण जीवन हि सद्यः पतति जातितः।।[4]

अर्थात् जो व्यक्ति अपने धर्म का पालन नहीं करता है वह सदैव पाप का भागी होता है। इसलिये गीता में शास्त्र विहित कर्म करने, नियत कर्म करने और फल की आशा से रहित होकर कर्म करने को श्रेष्ठ माना गया है।[5] इसी प्रकार भगवान श्री कृष्ण अर्जुन के माध्यम से सम्पूर्ण मानव जाति को बिना किसी अपेक्षा, राग–द्वेष, लाभ–हानि, जय–पराजय की भावना के बिना ही कर्म होगा तो वह सम्पूर्ण राष्ट्र के लिये लाभदायक होगा। इसमें न तो हर्ष होगा और न हि शोक की भावना होगी और न ही व्यक्ति पाप का भागीदार होगा। जैसा कि गीता में कहा गया है –

सुख दुःखे समेकृत्वा लाभालाभौ जयाजयों।
ततो युदाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।[6]

इस प्रकार गीता में कर्मयोग को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है, व्यक्ति यदि आसक्ति रहित होकर, निष्काम भाव से कर्म करता है तो वह अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। इसी को भगवान कृष्ण

गीता के द्वितीय अध्याय में कहते है कि हे अर्जुन कामनाओं (इच्छाओ) को त्यागकर सफलता एवं असफलता को एक समान मानकर तु अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित रहो।

कर्म का कोई फल मिले ना मिले, दोनों ही मन की अवस्थाओं में जब व्यक्ति एक समान रहता है उसी स्थिति को समत्व योग अर्थात् कर्मयोग की स्थिति कहा गया है।[7] व्यक्ति के कर्मो में कुशलता तभी आती है, जब व्यक्ति मन, बुद्धि को अन्य विषयों से हटाकर शुभ कर्मो में लगाता है अर्थात् जब मन, बुद्धि और शरीर इन तीनों को एकसाथ जोड़कर जब हम कोई कार्य करते हैं तो निश्चित ही उस कार्य में हमें कुशलता या सम्पूर्ण दक्षता प्राप्त होती है।8

गीता के इस सिद्धान्त से हमें नई ऊर्जा मिलती है, इसी से हम राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देते हैं। हम अपने कर्मो को योजना अनुसार करते है, क्योंकि किसी कार्य के लिये योजना बनाना ही योग है, योजनायें बनाते समय यदि हम कामनाओं का संकल्प त्याग कर विचार करें तभी कर्मों को सही दिशा मिलेगी। हम ऐसी ईच्छायें या कामनायें न रखें जो केवल स्वयं के सुख, सुविधाओं और हितों के लिये हो अपितु ऐसी कामनायें करे जिससे हमारे समाज एवं राष्ट्र का कल्याण हो।[9]

यदि हम विचार करें तो आज हमारा राष्ट्र इस परिस्थिति में है कि उसे सभी क्षेत्रों में केवल श्री कृष्ण की आवश्यकता है, क्योंकि आज हमारी युवा पीढ़ी अर्जुन की तरह कशमकश में है कि क्या करें? क्या न करें? हमारे राजनीतिज्ञ, अफसरशाही एवं व्यापारी वर्ग कौरवों की तरह दीमक बन हमारे राष्ट्र को खोखला कर रहे हैं, आज हमें जगाने के लिये सही राह पर लाने के लिये, अर्जुन रूपी युवा पीढ़ी का अन्धकार दूर करने के लिये हमें गीता के सिद्धान्तों की आवश्यकता है। आज हमारा शिक्षक, इंजीनियर, चिकित्सक देश की रक्षा करने वाला सैनिक, कामगार एवं हमारी युवा पीढ़ी अर्जुन की तरह मोहग्रस्त है उसे कोई मार्ग दिखाई नहीं दे रहा है। आज हमारा राष्ट्र विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है, जीवन के हर क्षेत्र में हमें कौरव एवं कंस ही दिखाई दे रहे है।

आज यदि हम अपने समाज एवं राष्ट्र के भीतर दृष्टिपात् करते है कि हमें चारों और अन्धकार ही दिखाई देता है, इस घोर अन्धकार को आज केवल गीता के ज्ञान के आलोक से ही दूर किया जा सकता है, भगवान श्री कृष्ण के मुखारविन्द से निकला हुआ अमृत ही आज समाज एवं राष्ट्र में नई चेतना पैदा कर सकता है। देश के भटके हुए लोगों एवं युवाओं को भगवद्गीता रूपी संजीवनी से जागृत किया जा सकता है, क्योंकि श्रीमद भगवद गीता का व्यावहारिक वेदान्त ही हमारी संस्कृति का मूल आधार है तथा उसी के अनुरूप आचरण करने से ही हमारे समाज एवं राष्ट्र की उन्नत्ति सम्भव है। यदि सभी मनुष्य अपने स्वाभाविक एवं नियत कर्म करते रहे तो किसी भी प्रकार का सामाजिक असन्तोष नहीं पनप सकता। गीता में कहा गया है कि जिस वर्ग का जो स्वाभाविक कर्म है वही उसका स्वधर्म है, स्वभाव के अनुसार जो विशेष कर्म निश्चित है वही स्वधर्म है, स्वधर्म अपना–अपना कर्म है, इसके पालन से ही मनुष्य परम सिद्धि का भागी होता है, जैसा कि कहा भी है –

स्वस्वकर्मण्यभिरतः संसिद्धि लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धि यथा विन्दति तच्श्रृणु।।
यतः प्रवृति भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तपश्चटर्य सिद्धि विन्दति मानवः।।[10]

स्वकर्म का अनुष्ठान ही मनुष्य के लिये कल्याणकारी है। इसीलिये गीता में कहा गया है कि स्वधर्मानुसार प्राप्त होने वाले कर्म को ही मनुष्य को कर्त्तव्य समझकर उसका पालन करना चाहिये। जो

कर्म अपने–अपने धर्म के अनुसार स्थिर कर दिये है, उनका त्याग करना तथा दूसरे के धर्म में रूचि दिखाना किसी के लिये भी न्यायोचित नहीं है। पर धर्म सहज धर्म नहीं है, न ही वह अपने स्वभाव के अनुकूल है। पर धर्म के पालन से ही मनुष्य ईश्वर एवं अपने राष्ट्रीय कृर्तव्यों से विमुख हो जाता है। इसी लिये गीता में कहा है कि अच्छी तरह से न किया गया विगुण स्वधर्म अच्छी तरह किये गये पर धर्म से श्रेष्ठ है क्योंकि स्वभाव से नियत कर्म को करता हुआ मनुष्य कभी भी पाप का भागी नहीं होता है। कहा भी है –

श्रेया–स्वधर्मो विगुणः पर धर्मात्स्यनुष्ठितात्।
स्वभावनियत कर्म कुर्वन्नापनोति किल्विषम्।।[11]

इसी तथ्य को मनुमहाराज ने मनुस्मृति में भी कहा है।12 भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को भी यही कहते है कि हे अर्जुन यदि तु अपने नियत क्षत्रिय धर्म का पालन नहीं करेगा तथा यह धर्म संग्राम नहीं करेगा तो तू स्वधर्म को नष्ट करके पाप का भागी होगा। जैसा कि कहा भी है –

अथ चेत्वमिमं धर्म्य संग्राम न करिष्यसि।
ततः स्वधर्म कीर्ति हित्वा पापमवाप्स्यतिः।।[13]

इस प्रकार भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को स्पष्ट शब्दों में कहते है कि कोई भी व्यक्ति इस व्यवाहारिक जीवन में क्षणमात्र भी कर्म का त्याग नहीं कर सकता। गीता पूर्णता की अवस्था में भी मनुष्य के लिये कर्म करते रहना आवश्यक बताती है। क्योंकि बाह्म सक्रियता का आन्तरिक शान्ति के साथ ही सम्बन्ध होना चाहिये। इस प्रकार गीता में निष्काम कर्म को इतना ऊँचा स्थान दिया गया है कि किसी भी स्थिति में कर्म का पूर्ण त्याग सम्भव नहीं है। गीता अकर्म को कुकर्म के सामान ही मानती है। आज यदि हम विश्व सभ्यता के विकसित देशों पर दृष्टिपात् करते है तो उन देशों का कोई भी व्यक्ति बिना कर्म किये नहीं रहता। प्रत्येक व्यक्ति अपने राष्ट्र ही समृद्धि के लिये कर्म करता है इसीलिये वो देश इतने विकसित है परन्तु आज हमारे राष्ट्र में यहां के लोग अपना–अपना कर्म नहीं करते है चोरी, ठगी, भ्रष्टाचार एवं आंतकवाद के मार्ग को ही श्रेष्ठ मानते है, इसलिये सोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत आज विकसित से विकाशसील राष्ट्र बन गया है, जिसका सबसे बड़ा कारण है, यहां के लोगों का कर्महीन होना, आज परिवार में एक व्यक्ति काम करता है। दस व्यक्ति फ्री घर बैठ कर खाते है।

इस प्रकार यदि हमें अपने राष्ट्र एवं समाज का विकास करना है, इसको समृद्ध बनाना है तो युवाओं को निष्काम कर्म से जुड़ना होगा, सम्पूर्ण कर्मो को अपने देश के निमित्त करना होगा अपने अहं एवं स्वार्थ का त्याग करना होगा। अपने–अपने स्वधर्म का पालन करना होगा, भगवान श्री कृष्ण की अमृतवाणी श्रीमद्भगवद् गीता का सम्पूर्ण सिद्धान्तों विशेषकर निष्काम कर्म एवं स्वधर्म का पालन करना होगा तभी हमारा राष्ट्र समृद्ध बन सकेगा तभी उसका खोया हुआ पुराना नाम 'विश्वगुरू' फिर से प्राप्त हो सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- श्रीमदभगवद् गीता – 2/31
- वही – 2/47
- वही – 4/13
- मनुस्मृति – 10/97

ISSN : 2394-7462

- योगस्थः कुरू कर्माणि सगं त्सक्त्वा धनञ्जय।
  थ्सद्वियोसिद्वयोः समोभूत्वा समत्वं योग उच्यते। गीता – 2/48
- वही – 2/50
- वही – 5/8, 9
- वही – 3/33–34
- वही – 3/35
- वरं स्वधर्मो विगुणो न पारक्यः स्वनुष्ठितः
  परधर्मेण जीवन हि सद्यः पतति जातितः। मनुस्मृति
- श्रीमदभगवद् गीता – 2/33

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

website : www.chintanresearchjournal.com

Impact Factor : 4.012

यतेमहि स्वराज्ये

ISSN : 2229-7227

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)

(Indexed & Listed at : Copernicus Poland)

(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)

(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))

(Indexed & Listed at : UGC Journal List No.41243)

वर्ष : 8 अंक : 32

विक्रमी सम्वत् : 2076

अक्तूबर-दिसम्बर 2018

संपादक

आचार्य (डॉ०) शीलक राम

आचार्य अकादमी

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी, भारत

ISO 9001 : 2008

International Refereed
UGC List No.41243
Impact Factor : 4.012

'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN : 2229-7227)
वर्ष 8, अंक 32 (पृ.सं. 491-494)
विक्रमी सम्वत्: 2076 (अक्तूबर-दिसम्बर 2018)

बाल्मीकि रामायण में सीता -एक आर्दश नारी

डॉ. रणधीर कौशिक
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरुर (पंजाब)

शोध आलेख सार

सीता का प्रत्येक कर्म आदर्शो का भण्डार है उन्होंने जीवन में कठोर परीक्षाएं देकर यह सिद्ध किया कि जो स्त्री विपात्ति के समय अपने धर्म का पालन करेगी वह तीनो लोको में पूजनीय होगी, उसकी कीर्ति सदा के लिए संसार में अमर हो जाएगी। सीता की पति भक्ति, सास शवशुर के प्रति सेवा भावना, सभी का सम्मान करना, ऋषियों की सेवा करना साहस तथा धैर्य, तप, वीरत्व, धर्मपरायणता, क्षमा आदि सभी गुण पूर्ण रुप से अनुकरणीय है। ऐसी सती शिरोमणि पतिव्रता स्त्री दर्शन एवं पूजन के योग्य है और अपने चरित्र से जगत को पवित्र करने वाली है।

मुख्य शब्दः पवित्र जीवन, जीवन चरित ।

भारतीय संस्कृति में अनादि काल से आज तक किसी भी साहित्यिक रचना ने इतना प्रभाव नहीं किया होगा, जितना के महर्षि बाल्मीकि जी के अनुपम दिव्य ग्रंथ श्री रामायण जी ने । चौबीस हजार श्लोकों की इस मुक्तावाली में श्री सीता जी के जीवन चरित नायक श्रीराम के जीवन चरित के साथ-साथ इसकी नायिका श्री सीता जी के जीवन का भव्य एवं हृदयस्पर्शी वर्णन प्रस्तुत किया है, बाल्मीकि कि के इस अनुपम काव्य की नायिका सीता का चरित्र समस्त स्त्री पात्रों में पूर्णतः सर्वाधिक प्रभावशाली है। सीता के माध्यम से महाकवि ने नारी जाती के समक्ष ऐसा आदर्श उपस्थित किया है जो अन्यत्र विश्व धरातल के किसी भी स्थान पर अविनीत नहीं दिखाया गया है। सीता के चरित्र का सर्वोत्कृष्ट पक्ष उनकी औजस्विता दीप्ति एवं गरिमा है। जब भी उन पर कोई आपेक्ष आता है तब वह अपने तेज के बल पर अपनी रक्षा स्वयं करती हैं।

आरम्भ से लेकर अन्त तक सीता जी की सभी बातें पवित्र हैं उनके समान पवित्र जीवन और अनुपम पति भक्ति का उदाहरण जगत के इतिहास में मिलना कठिन है। बन के लिए प्रस्थान करते समय जब श्री राम जी सीता से मिलने जाते हैं तो वह वन गमन की बात कहकर अपने कर्तव्य का पालन करती हैं । वह अपने पति धर्म का पालन करती हुई कहती हैं नारी के लिए इस लोक और प्रलोक में पति ही आश्रय देता है पिता, पुत्र, माता और मित्रगण यहां तक के उसका अपना शरीर भी उसका सच्चा सहायक नहीं होता। यदि आज आप ही दुर्गम वन की और प्रस्थान कर रहें है तो मैं रास्ते के काटों को कुचलती हुई आपके आगे चलुगीं मेरे लिए उंचें -उंचें महलों मे रहना , विमान की सैर करना इन सब में श्रेष्ठ पति के चरणों की छाया में रहना विशेष महत्व रखता है। मेरे हृदय का सम्पूर्ण प्रेम आपको ही अर्पित है। आपके अतिरिक्त

और कहीं मेरा मन नहीं लगता, यदि आपसे वियोग हुआ तो निश्चय ही मेरी मृत्यु हो जाएगी। अत: आप मुझे साथ चलने से न रोकें।[1] मेरे साथ रहने से आप पर कोई भार नहीं पड़ेगा।[2]

भगवान राम के मुख से वन के अनेकों क्लेशों को सुनकर भी सीता जी अपने निश्चय से तनिक भी विचलित नहीं हुई। पति चरणों में उनका कितना प्रगाढ प्रेम था इसी को देखते हुए अन्त में सीता जी के प्रेम की जीत हुई और श्री राम जी ने उनको प्रेम पूर्वक वन में ले चलना स्वीकार किया।

सीता जी ने अनेको कष्टों को सहर्ष सहन किया वन गमन के समय जब कैकयी ने उनको वनवास के वस्त्र पहनने के लिए दिए। तब सभी माताऐं महाराज दशरथ तथा ब्रह्मज्ञानी तपोनिष्ठ महर्षि वशिष्ठ भी क्रोधित हो उठे थे, तब भी सीता जी के मन में कोई विकार नहीं आया था। श्री राम के साथ वन में अनेक प्रकार के कष्टों को सहन कर उन्होंनं पति सेवा का जो आदर्श स्थापित किया है वह संसार के इतिहास में कहीं कभी भी दृष्टिगोचर नहीं होता है। उन्होनें पति की सेवा के लिए जीवन के सारे भौतिक सुखों का त्याग किया, उनका प्रत्येक क्षण या तो पति सेवा में व्यतीत होता है या श्री राम जी की आज्ञानुसार ऋषियों के सत्कार में। अनुसूईया द्वारा उपदेशित पति धर्म का समर्थन करते हुए सीता ने कहा कि यदि मेरे पति देव अनार्य और जीविका रहित भी होते तो भी मैं बिना किसी दुविधा के इनकी सेवा में संलगन रहती ये अपने गुणों के प्रेम करने वाले और माता पिता की भांति हित करने वाले हैं। तब इनकी सेवा के विषय में कहना ही क्या[3] सीता जी ने अपनी माता एवं अपनी सास की शिक्षा को सदैव स्मरण रखा तभी वे अनुसूईया से कहती हैं की मैं जानती हूँ की स्त्री के लिये पति ही गुरु और सर्वस्व है, उसकी सेवा से बढ़कर दूसरा कोई तप नही है।

सीता जी ने अपने धर्म का पालन भी बड़ी दृढ़ता के साथ किया किसी प्रकार के प्रलोभन से भय से या किसी भारी विपत्ति के आने पर भी उन्होंने अपने धर्म का त्याग नही किया अपितू बड़ी निर्भयता के साथ सामना किया। जिस अतुल पराक्रमी रावण का नाम सुनकर देवता लोग भी घबरा जाते थे। उसी रावण को सीता क्रोध में तिरस्कृत करती हुई कहती है कि तु सियार है और मैं सिंहनी हूँ मै तेरे लिए सदा दूर्लभ हूँ , जैसे कोई सूर्य की प्रभा को नही छू सकता उसी प्रकार तूं भी मुझे नही छू सकता।[4]

यहां हमें सीता जी से सीखना चाहिए कि अपने पति धर्म और परमात्मा के बलपर किसी भी अवस्था में स्त्री को डरना नहीं चाहिए अन्याय का डट कर सामना करना चाहिए।

सीता जी का श्री राम के प्रति ऐसा आलौकिक प्रेम है कि मन, वचन, कर्म से भी अन्य किसी का चिन्तन नहीं करती, पर पुरुष के स्पर्श के विषय में वह हनुमान जी से कहती हैं कि वानर श्रेष्ठ। पति भक्ति की ओर दृष्टि रखकर मैं भगवान श्री राम के सिवा दूसरे किसी पुरुष के शरीर का स्वेच्छा से स्पर्श नहीं करना चाहती। रावण के शरीर से जो मेरा स्पर्श हुआ वह बल पुर्वक हुआ उस समय मैं असहाय, असमर्थ और बेबस थी, क्या करती । अब तो यदि श्री राम राक्षसों सहित रावण को मारकर मुझे यहां से ले जाए तो यही उनके योग्य पराक्रम होगा 5 जरा विचार करें कि हनुमान सरीखे सेवक जो सीता में सच्चे हृदय से मार्तभाव रखते थे, जिन्होंने श्री राम सीता की सेवा ही अपने जीवन का प्रथम लक्ष्य बना रखा था, पतिव्रत धर्म की रक्षा की दृष्टि से उनका भी स्पर्श नही करना चाहती। यह प्रकरण उनकी पति धर्म पर दृढ आस्था को ही दिखलाता है। सीता जी क्षमा की साक्षात प्रतिमूर्ति हैं विजय के बाद हनुमान जी जब श्री राम का संदेश लेकर गए तब हनुमान जी ने कहा माता जिन दुष्ट राक्षसियों ने आपको पहले डराया, धमकाया और दुख दिया उन सबको उन सबसे अपना बदला ले सकती थी परन्तु सीता तो परम दयालु साक्षात तपोमूर्ति थी उसने कहा-6

विधेयनाम च दासीनाम कुप्येद्वानरोत्तम।
भाग्यवैषम्यदोषेण पुरस्ताद् दुष्कृतेन च।

मयैतत्प्राप्यते सर्वम स्वकृतं प्रभुज्यते।
मैवं वद महाबाहों दैवी ह्येषा परा गतिः।।
पापानां वा शुभानां वा वधार्हणामयापि वा।।
कार्य कारुण्यमार्येण न कश्चिन्ना पराध्यति।।

अर्थात वानर श्रेष्ठ। ऐसा कोन मुर्ख है जो दूसरों की आज्ञा पालन करने वाली दासियों पर क्रोध करेगा। क्योंकि मनुष्य अपने किए हुए कर्मो का ही फल भोगता है। भाग्य एवं पूर्वकृत पापों के कारण ही मुझे यह दुख प्राप्त हुए हैं। यह सब भाग्य की ही लीला है, इसमें दूसरों का कोई दोष नहीं है अतः तुम इन बेकसूर दासियों को मारने की बात मत कहो। चाहे कोई पापी, धर्मात्मा या वध के योगय अपराध करने वाला ही क्यों न हो साधु को तो सब पर दया ही करनी चाहिए क्योंकि अपराध तो सब से होते आए हैं। इस प्रकार सीता की क्षमा भावना भी एक चरम आर्दश स्थापित करती है।

युद्ध के पश्चात जब सीता जीश्री राम के समक्ष आती हैं तो वह अपने स्वामी को देखकर बहुत प्रसन्न होती हैं परन्तु उसी क्षण श्री राम के मुख से अपने प्रति कठोर वचन सुनकर सीता आंसु बहाती हुई फूट फूट कर रोती हुई कहती हैं कि मेरे पति ने मेरे गुणों से अप्रसन्न होकर जन समुदाय में मेरा त्याग किया है। मै इस मिथ्यापवाद से कलंकित होकर जीना नही चाहती। इस प्रकार दुखी सीता अग्नि देव के पास जाकर श्री राम की प्रदक्षिणा करके देवताओं एवं ब्राह्मणों को प्रणाम करके अग्नि देव से कहती है कि

हे लोक साक्षी अग्नि देव ! यदि मेरा अन्त करण कभी भी श्री राम सेन हटा हो तो आप मेरी सब प्रकार से रक्षा करें ।[7] इस प्रकार कहकर सीता निडरता से धधकती हुई प्रचण्ड अग्नि में प्रवेश कर जाती है। सब ओर हाहाकार मच गया तब अग्निदेव सीता जी को लेकर प्रगट हुए और सीता को राम के प्रति अर्पण करते हुए बोले:[8]

एषा ते राम वैदेही न विपापमस्याम न वि धते।
नैव वाचा नैव मनसा नैव बुद्धया न चक्षुषा।।
प्रलोभ यमाना विविधं तर्ज्यमाना न मैथिली।
नाचिन्तयत तद्रक्षस्त्वदगते नान्तररा त्मना।।
विशुद्धभावां निष्पापां प्रतिगृहीष्व मथिलीम ।
न किंचिदभिधातव्या अहमाज्ञापयामि ते।।

इस प्रकार अग्नि देव के वचन सुनकर श्री राम जी प्रसन्नती पुर्वक गीले नेत्रों से कहतें है कि लोक दृष्टि में सीता जी कि पवित्रता आवश्यक थी क्योंकि यह बहुत समय रावण के अन्त पुर में रही है। यदि मैं जानकी की परीक्षा न लेता तो लोग यही कहते कि दशरथ पुत्र राम मुर्ख और कामी है। जनक नन्दिनी सीता का मन अनन्यभाव से मुझ में ही लगा रहता है और यह चित से मेरा ही अनुसरण करने वाली है यह बात मैं भी जानता हुं यह अपने तेज से स्वयं सुरक्षित है। अतः समन्दर जिस प्रकार अपनी सीमा नहीं लांघ सकता उसी प्रकार रावण भी उसका कुछ नहीं बिगाड सकता था, जनक दुलारी सीता तीनो लोकों में पवित्र हैं क्योंकि प्रभा जैसे सूर्य से अभिन्न है उसी प्रकार सीता और में और मुझ मे कोई भेद नही है।[9] इतना कहकर आनन्द पू र्वक सीता को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार सीता जी का चरित्र धन्य है। जिसकी प्रसंशा देव लोक तथा स्वयं तीनों लोकों के स्वामी अपने मुखारविन्द से करते हैं ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सीता का प्रत्येक कर्म आदर्शो का भण्डार है उन्होंने जीवन में कठोर परी क्षाएं देकर यह सिद्ध किया कि जो स्त्री विपात्ति के समय अपने धर्म का पालन करेगी वह तीनो लोको में पूजनीय होगी, उसकी कीर्ति सदा के लिए संसार में अमर हो जाएगी। सीता की पति भक्ति, सास शवशुर के प्रति सेवा भावना, सभी का सम्मान करना, ऋषियों की सेवा करना साहस तथा धैर्य, तप, वीरत्व,

धर्मपरायणता, क्षमा आदि सभी गुण पूर्ण रुप से अनुकरणीय है। ऐसी सती शिरोमणि पतिव्रता स्त्री दर्शन एवं पूजन के योग्य है और अपने चरित्र से जगत को पवित्र करने वाली है।

संदर्भ

1. न पिता नात्मजो नात्मा न माता न सखीजन:।
इह प्रेत्य नारीणां पति रेको गति सदा।।
यदि त्वं प्रस्थितो दुर्ग वनमधैव राघव।
अग्रतस्ते गमिष्यामि मृदन्ती कुश कण्टकान।।
प्रासादाग्रे विमानैर्वा वैहायसगतेन वा
सर्वावस्थागता भर्तुपादच्छाया विशिष्यते। बाल्मीकि रामायण 2- 27-6-7, 9
2. सुखं वने निवत्स्यामि यथैव भवने पितु:।
अचिन्तयन्ती त्रीलोकांश्चिन्यन्ती पतिव्रतम।
अनन्यभावामनुरक्त म चेतसं, त्वयावियुक्ताम मरणाय निश्चिताम
नयस्व मां साधु कुरुष्व याचानां नातो मया ते गुरुता भविष्यति।। बाल्मीकि रामायण 2-27-12.1
3 .... यधप्येष भवेद्भ र्ता अनार्यो वृतिवृजित:।
अद्वैधमत्र वर्तव्यं तथाप्येष मया भवेत।।
किं पुनर्यो गुणसा र्ध्य:सानुक्रोशो जितेन्द्रिय:
स्थिरानुरागो धर्मात्मा मातृवत पितृवत प्रिय:।। बाल्मीकि रामायण 2-118-3-4
4. त्वं पुनर्जम् बुक:सिंही मामिहेच्छसि दुर्लभाम।
नाहं शक्या त्वया स्प्रष्टुमादित्यस्य प्रभा यथा।। बाल्मीकि रामायण 3-47-37
5. भर्तुभक्तिम तं पुरस्कर्त्या रामादन्यस्य बानर।
नाहं स्प्रष्टुं स्वतो गात्रमिच्छेयं वानरोतम।।
यदहं गात्रसंस्पर्शम रावणस्य गता बलात।
अनीशा किं करिष्यामि विनाया विवशा सती।। बाल्मीकि रामायण 5-37-62-63
6. बाल्मीकि रामायण 6-113-37-38,43
7. यथा में हृदयं नित्यं नापसर्पति राघवात।
तथा लोकस्य साक्षी मां सर्वत: पातु पावक:। बाल्मीकि रामायण 6-116-25
8. बाल्मीकि रामायण 6-118-5 .7 .8 .
9. अनन्यहृदयां सीता मच्चितपरिरक्षिणीम।
अहमप्यवगच्छामि मैथिलीं जनकात्मजाम।।
इमामपि नातिवर्तेत वेलामिव महोदधि:।।
अनन्या हि मया सीता भास्करस्य प्रभा यथा।
विशुद्धात्रिषु लोकेष मैथिली जनकात्मजा।। बाल्मीकि रामायण 1-118-15-16, 18

3.3.1 2018-19

ISSN : 2320-9690

PARKH

Research journal of
Punjabi Language and Literature

Vol. I & II – 2018
Vidyarthi Edition

Chief Editor
Dr. Yog Raj

Editor
Dr. Sarabjit Singh

Department of Punjabi
Panjab University, Chandigarh

(13)

ਤਤਕਰਾ

ਸੁਆਗਤ : ਯੋਗ ਰਾਜ			1
ਸੰਪਾਦਕ ਵੱਲੋਂ ਸਰਬਜੀਤ ਸਿੰਘ			3
1.	ਡਾ. ਤੇਜਵੰਤ ਸਿੰਘ ਗਿੱਲ : ਸਾਹਿਤ/ਇਤਿਹਾਸ/ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਚਿੰਤਨ	ਬਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ	5
2.	ਪੰਜਾਬੀ ਲੋਕ ਕਥਾਵਾਂ ਦੇ ਅਧਿਐਨ ਬਾਰੇ ਡਾ. ਭੁਪਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਖਹਿਰਾ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਧਾਰਨਾਵਾਂ	ਅਸ਼ਵਨੀ ਕੁਮਾਰ	12
3.	ਇਤਿਹਾਸ ਦੀ ਪਦਾਰਥਵਾਦੀ ਧਾਰਨਾ	ਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ	25
4.	ਨਾਰੀ ਚਿਤਨ : ਭਾਰਤੀ ਸੰਦਰਭ	ਗੁਰਮੀਤ ਕੌਰ	33
5.	ਕੋਣੇ ਦਾ ਸੂਰਜ : ਮਿੱਥ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਵਿਚਲੀ ਮਨੁੱਖੀ ਸੰਵੇਦਨਾ ਦੇ ਆਰ-ਪਾਰ	ਹਰਵਿੰਦਰ ਕੌਰ	38
6.	ਨਵਤੇਜ ਭਾਰਤੀ ਰਚਿਤ ਕਾਵਿ-ਪੁਸਤਕ 'ਲਾਲੀ' : ਬਿਰਤਾਂਤ-ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਅਧਿਐਨ	ਗੁਰਤੇਜ ਸਿਘ ਕੱਟੂ	51
7.	ਪਰਮਿੰਦਰ ਸੋਢੀ ਕਾਵਿ : ਸਹਿਜਤਾ ਦੀ ਤਲਾਸ਼	ਦਰਸ਼ਨ ਕੌਰ	60
8.	ਸੁਖਵਿੰਦਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ-ਕਾਵਿ : ਦੀਵਾਰਾਂ ਤੋੜਦੀ ਸ਼ਾਇਰੀ	ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ	69
9.	ਭਗਤ ਰਵਿਦਾਸ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਸਮਾਜਿਕ ਚੇਤਨਾ : ਸਮਕਾਲੀ ਸੰਦਰਭ	ਲਖਵੀਰ ਸਿਘ	77
10.	ਕੇਵਲ ਸੂਦ ਦੇ ਨਾਵਲ ਮੁਰਗੀਖਾਨਾ ਵਿੱਚ ਦਵੰਦਾਤਮਕ ਸਮਲਿੰਗਕ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦਾ ਯਥਾਰਥ	ਹਿਤੂ ਸ਼ਰਮਾ	91
11.	ਮਹਾਸ਼ਵੇਤਾ ਦੇਵੀ ਦਾ ਨਾਵਲ 'ਝਾਂਸੀ ਕੀ ਰਾਨੀ' ਵਿੱਚ ਨਾਇਕਾ ਦਾ ਪ੍ਰਤਿਰੋਧ	ਚੰਚਲ ਕੁਮਾਰੀ	103
12.	ਮਨਮੋਹਨ ਬਾਵਾ ਰਚਿਤ ਨਾਵਲ 'ਕਾਲ ਕਥਾ' : ਸੱਤਾਧਾਰੀ ਪ੍ਰਵਚਨਾਂ ਦੇ ਭੰਜਨ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ	ਸਤਵੀਰ ਸਿਘ	112
13.	ਬਾਵਾ ਬੁੱਧ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਾਟਕ 'ਦਾਮਨੀ' ਵਿਚ ਰਾਜਸੀ ਚੇਤਨਾ	ਸੋਨੂੰ ਰਾਣੀ	133
14.	ਗੁਰਸ਼ਰਨ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਦਲਿਤ ਔਰਤ ਦੀ ਚੇਤਨਾ	ਮਨਦੀਪ ਕੌਰ	143
15.	ਪਿਤਰ ਸੱਤਾ ਅਤੇ ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਦੇ ਨਾਟਕ	ਮਨਜਿੰਦਰ ਕੌਰ	151
16.	ਸਵਰਾਜਬੀਰ ਦੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿੱਚ ਮੱਧਵਰਗੀ ਚੇਤਨਾ	ਪਰਮਜੀਤ ਕੁਮਾਰੀ	159
17.	ਪਾਕਿਸਤਾਨੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਟਕ ਤੇ ਰੰਗਮੰਚ : ਇਤਿਹਾਸਕ ਪਰਿਪੇਖ	ਸੁਖਵੀਰ ਕੌਰ	170
18.	ਪਰਗਡੰਡੀਆਂ : ਔਰਤ ਦੀ ਹੋਂਦ ਅਤੇ ਹੋਣੀ	ਰਾਜਵਿੰਦਰ ਕੌਰ	180
19.	ਪੰਜਾਬੀ 'ਜੰਞ' ਕਾਵਿ : ਬਦਲਦੇ ਪਰਿਪੇਖ	ਗੁਰਜੋਧ ਕੌਰ	188
20.	ਲਹਿੰਦੀ ਅਤੇ ਪੂਰਬੀ ਪੰਜਾਬੀ ਦਾ ਵਿਭਕਤੀ-ਮੂਲਕ (ਰੂਪਾਂਤਰੀ-ਪਿਛੋਕੜ) ਅਧਿਐਨ	ਲਛਮਣ ਪਵਾਰ	193
21.	Conceptualizing Nirguna –Saguna Bhakti And Kabir's praises to the Nirguna God	Monika Sethi	199

Conceptualizing Nirguna –Saguna Bhakti And Kabir's praises to the Nirguna God

Monika Sethi

At the outset I would like to state that this paper is in two parts. The first part deals with the long-lasting and widely held orthodoxy regarding the clear divide between *nirguna* Bhakti and *saguna* Bhakti of medieval north Indian Bhakti tradition. The second part tries to unveil the various layers of sant Kabir's personality as a *nirguna* poet steeped in *nirguna sampardaya* or *sant parampara* of north Indian Bhakti Movement.

On the basis of a theological difference in the way of conceptualizing the nature of the divine being that is the object of worship, Bhakti religion in north India has been divided into two major streams or currents-*nirguna* and *saguna*. Those who prefer *saguna* (with attributes) Bhakti worship anthromorphic manifestations of the divine being, usually form of the gods Vishnu and Shiva. The persons who follow *nirguna* (without attributes) Bhakti generally prefer to worship a divine being who remains mostly unmanifest and non-anthromorphic. In actual practice, most followers of *saguna* religion in north India today direct their devotion especially towards two avatars of the god Vishnu-Krishna and Rama. On the other hand, followers of *nirguna* religion generally reject worship of avatars of Vishnu or any other anthromorphic gods or forms of god. The *nirguna* Bhakti stream which believed in formless deity without attributes also developed along two streams. One was the *Gyan Marg*, which gave importance to knowledge and Yogic practices and the other was *Prem Marg*, which gave importance to love and was more influenced by the Sufi thought. *Saguna* stream develops into Krishna Bhakti as well as Rama Bhakti.

While some scholars have stressed the common features of *nirguna* and *saguna* traditions, many well known Indian scholars –most notably P. Barthwal, Parsuram Chaturvedi and Hazari Prasad Dvivedi- have emphasized their difference. Ram Chandra Shukla was the first Hindi scholar who propounded the notion of Bhakti kal (the Age of Bhakti) and divided the period into two distinctive theological categories. "Kabir, Raidas, Dadu, etc. were placed in the *nirguna* category (due to their faith in the non-incarnate, formless God) and the Vaishnava devotees of the later period such as Surdas and Tulsidas were placed in the *Saguna* category (as they championed the cause of a

2018-19.

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

Certificate of Publication

The Board of

International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)

Is hereby awarding this certificate to

Monika Sethi

In recognition of the publication of the paper entitled

Pre -Displacement Phase of Forced Migration: A Critical Study of Rahul Pandita's Memoir "Our Moon Has Blood Clots: A Memoir of Lost home in Kashmir".

Published in IJRAR (www.ijrar.org) UGC Approved - Journal No : 43602 & 7.17 Impact Factor

Volume 6 Issue 1 January 2019, Date of Publication: 28-January-2019

PAPER ID : IJRAR19J5571

Registration ID : 255918

R.B. Joshi

EDITOR IN CHIEF

UGC and ISSN Approved - Scholarly open access journals, Peer-reviewed, and Refereed Journals, Impact factor 7.17 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool), Multidisciplinary, Monthly Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS | IJRAR

An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Indexed Journal

Website: www.ijrar.org | Email: editor@ijrar.org | ESTD: 2014

Manage By: IJPUBLICATION Website: www.ijrar.org | Email ID: editor@ijrar.org

IJRAR | E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

2018-19 (16)

TRANS Asian Research Journals
SCO - 34, First Floor, Near Red Cross, HUDA Market,
Sec.17, JAGADHRI 135003, Haryana, India
website : www.tarj.in

Ref. No. : TARJ/ 0618/28

Dated : 30-06-2018

Dear **MONIKA SETHI**

I am very pleased to inform you that your article/research paper titled **DEIRDRE LEGEND IN W.B. YEATS AND J.M. SYNGE: A COMPARATIVE ASSESSMENT** has been published **in Asian Journal of Multidimensional Research (AJMR) (UGC approved journal) (ISSN: 2278-4853) (Impact Factor: SJIF 2017 = 5.443) Vol.7, Issue- 6, (June, 2018).**

The scholarly paper provided invaluable insights on the topic. It gives me immense pleasure in conveying to your good self that our Editorial Board has highly appreciated your esteemed piece of work.

We look forward to receive your other articles/research works for publication in the ensuing issues of our journal and hope to make our association everlasting.

Thanking you once again

With Best Regards

Dr. Esha Jain
Publishing Editor
TRANS JOURNALS

Asian Journal of Multidimensional Research (AJMR)
(A Double Blind Refereed & Reviewed International Journal)
ISSN (online) : 2278-4853

2018-2019

TRANS Asian Research Journals
SCO - 34, First Floor, Near Red Cross, HUDA Market,
Sec.17, JAGADHRI 135003, Haryana, India
website : www.tarj.in

Ref. No. : TARJ/ **1018/36** Dated : **30-10-2018**

Dear **Monika Sethi**

I am very pleased to inform you that your article/research paper titled **THE DOORWAYS TO THE PAST IN UZMA ASLAM KHAN'S THE GEOMETRY OF GOD** has been published in **Asian Journal of Multidimensional Research (AJMR) (UGC approved journal No. 47638) (ISSN: 2278-4853) (Impact Factor: SJIF 2017 = 5.443) Vol.7, Issue- 10, October, 2018.**

The scholarly paper provided invaluable insights on the topic. It gives me immense pleasure in conveying to your good self that our Editorial Board has highly appreciated your esteemed piece of work.

We look forward to receive your other articles/research works for publication in the ensuing issues of our journal and hope to make our association everlasting.

Thanking you once again
With Best Regards

Dr. Esha Jain
Publishing Editor
TRANS JOURNALS

(2) 2018-19 (18)

TRANS Asian Research Journals
SCO - 34, First Floor, Near Red Cross, HUDA Market,
Sec.17, JAGADHRI 135003, Haryana, India
website : www.tarj.in

Ref. No. : TARJ/ **0418/15** Dated : **10-04-2018**

Dear **MONIKA SETHI**

I am very pleased to inform you that your article/research paper titled **THE MYSTERY OF STATE SPONSORED VIOLENCE IN THE SELECT WORKS OF HANNAH ARDENT** has been published after double blind Referred & peer reviewed process, in **Asian Journal of Multidimensional Research (AJMR) (UGC approved journal) (ISSN: 2278-4853) (Impact Factor: SJIF 2017 = 4.443) Vol.7, Issue- 4, (April, 2018).**

The scholarly paper provided invaluable insights on the topic. It gives me immense pleasure in conveying to your good self that our Editorial Board has highly appreciated your esteemed piece of work.

We look forward to receive your other articles/research works for publication in the ensuing issues of our journal and hope to make our association everlasting.

Thanking you once again

With Best Regards

Esha Jain

Dr. Esha Jain
Publishing Editor
TRANS JOURNALS

Asian Journal of Multidimensional Research (AJMR)
(A Double Blind Refereed & Reviewed International Journal)
ISSN (online) : 2278-4853

(4)

International Journal of Research and Analytical Reviews

An open Access, Peer Reviewed, Refereed, Indexed, online and printed International Research Journal

Approved by UGC
Journal No. 43602

E ISSN 2348-1269
Print ISSN 2349-5138

Certificate of Publication

18-19

This is to certify that Prof. / Dr. रेखा रानी & डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय had contributed a paper as author / co-author to

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS

COSMOS Impact Factor 4.236

Title दलित स्त्री विमर्श आधुनिक उपन्यासों की दृष्टि से

and has got published in volume 6, Issue 1, **Jan. – March, 2019.**

The Editor in Chief & The Editorial Board appreciate the Intellectual Contribution of the author / co-author.

V.B. Jani	R.B. Joshi	T. Pathak
Executive Editor	**Editor in Chief**	**Member Editorial Board**

2018-19 (28)

ISSN: 2455-6440, Volume IV, Issue I, (Oct-Dec .2018), PP 6-18 www.SarhadEPatrika.com

ਰਵਿਦਾਸ ਬਾਣੀ ਵਿਚ ਬੇਗਮਪੁਰੇ ਦਾ ਸੰਕਲਪ

ਰਾਜਵਿੰਦਰ ਕੌਰ
ਈ-ਮੇਲ ਆਈਡੀ: kaurrajwinder4141@gmail.com
ਮੋਬ: 94170-21961, 88475-99282

SARHAD E PATRIKA AN INTERNATIONAL JOURNAL
A PEER REVIEWED/ REFEREED JOURNAL

ਭਾਰਤੀ ਭਗਤੀ ਲਹਿਰ ਦੇ ਅੰਤਰਗਤ ਭਗਤ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦਾ ਨਾਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਆਭਾ ਵਾਲਾ ਹੈ। ਆਪ ਇਕ ਰਹੱਸਾਤਮਕ ਭਾਵ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਭਗਤ ਵਜੋਂ ਹੀ ਸਾਹਮਣੇ ਨਹੀਂ ਆਏ, ਬਲਕਿ ਆਪ ਨੇ ਸਮਾਜ-ਸੁਧਾਰਕ ਦੇ ਨੁਕਤੇ ਤੋਂ ਵੀ ਪ੍ਰਤਿਰੋਧੀ ਸੁਰ ਅਪਣਾਈ। ਭਾਰਤ ਅੰਦਰਲੀ ਭਗਤੀ ਲਹਿਰ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਭਾਵੇਂ ਰਾਮਾਨੁਜ, ਰਾਮਾਨੰਦ, ਨਾਮਦੇਵ ਹੁਰਾਂ ਸਮੇਤ ਹੋਰ ਸੰਤਾਂ ਨਾਲ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਪਰ ਵਿਕਾਸ ਕ੍ਰਮ ਵਿਚ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦਾ ਯੋਗਦਾਨ ਵੀ ਵਡਮੁੱਲਾ ਹੈ। ਦਲਿਤ ਮਾਨਵ ਦੇ ਸਰੋਕਾਰ ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਅੰਦਰ ਮਰਕਜ਼ੀ ਮਜ਼ਮੂਨ ਵਜੋਂ ਸਾਹਮਣੇ ਆਏ । ਇਉਂ ਕਿ ਗੁਰਬਾਣੀ ਦੇ ਆਸੇ ਤੋਂ ਢੁਕਵੀਂ ਰਚਨਾ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਨੂੰ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਅੰਦਰ ਦਰਜ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਵੀ ਵੱਡੇ ਪੱਧਰ ਤੇ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ।

ਭਗਤ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਭਗਤੀ ਅੰਦੋਲਨ ਦੀ ਇਕ ਕੜੀ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਤੋਂ ਪੂਰਵਲੀ ਭਗਤੀ ਗਿਆਨ ਧਾਰਾ ਦੇ ਤੱਤਕਾਲੀ ਸਰੂਪ ਨੂੰ ਪ੍ਰਸਤੁਤ ਕੀਤਾ। ਮੂਲ ਰੂਪ ਵਿਚ, " ਭਗਤੀ ਅੰਦੋਲਨ ਨਾ ਤਾਂ ਈਸਾਈ ਮਤ ਦੀ ਦੇਣ ਸੀ, ਨਾ ਹੀ ਬਿਜਲੀ ਦੀ ਚਮਕ ਵਾਂਗ ਪੈਦਾ ਹੋਇਆ ਸੀ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਮੁਸਲਮਾਨੀ ਹਮਲਿਆਂ ਦਾ ਹੀ ਪ੍ਰਤੀਕਰਮ ਸੀ। ਇਸ ਅੰਦੋਲਨ ਦੀ ਉਤਪਤੀ ਦਾ ਕਾਰਨ, ਭਾਰਤੀ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤੀ ਦੀਆਂ ਉਹ ਪ੍ਰਾਚੀਨ-ਪਰੰਪਰਾਵਾਂ ਸਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਮੰਤਵ ਤੇ ਉਦੇਸ਼ਾਂ ਨੂੰ ਨਿੱਜਵਾਦ ਤੇ ਨਿੱਜ ਲਾਭ ਦੀ ਕੱਟੜਵਾਦੀ ਰੁਚੀ ਨੇ ਗਲਤ-ਰੰਗਤ ਦੇ ਕੇ ਉਸ ਦੇ ਮੂਲ-ਉਦੇਸ਼ਾ ਨੂੰ ਹੀ ਪਲਟ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। ... ਆਰੰਭ ਵਿਚ ਇਸ ਅੰਦੋਲਨ ਦੀ ਰੂਪ ਰੇਖਾ ਅਧਿਆਤਮਕ ਸਤਰ ਦੀ ਹੀ ਸੀ ਜੋ ਮੱਧਕਾਲ ਵਿਚ ਸਥਿਤੀਆਂ ਪ੍ਰਸਥਿਤੀਆਂ ਦੇ ਸਨਮੁਖ ਮਾਨਵ-ਸਮਾਜ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ, ਆਰਥਿਕ, ਰਾਜਨੀਤਕ ਅਤੇ ਮਨੋ ਵਿਗਿਆਨਕ ਖੇਤਰਾਂ ਨਾਲ ਵੀ ਜੁੜ ਗਈ ਸੀ । ਇਸ ਸਥਿਤੀ ਦੇ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਦੇ ਕਈ ਕਾਰਨ ਸਨ। ਦਰਅਸਲ ਜਦੋਂ ਵੀ ਮਾਨਵ-ਸਮਾਜ ਦਾ ਕੋਈ ਵਰਗ, ਆਪਸੀ ਤਾਕਤ ਦੇ ਸਹਾਰੇ, ਆਪਣੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਜਾਂ ਹੁਕਮ, ਸਮਾਜ ਦੇ ਵਰਗਾਂ ਉੱਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਹਿਮਤੀ ਬਗੈਰ, ਜਬਰੀ ਠੋਸਣ ਦਾ ਜਤਨ ਕਰੇਗਾ ਤਾਂ ਉਸ ਵਿਰੁਧ ਨਿਕਲਦਾ ਧੂੰਆਂ ਇਕ ਦਿਨ ਜਵਾਲਾਮੁੱਖੀ ਬਣ ਕੇ ਭੜਕ ਉਠਦਾ ਹੈ। ਪੀੜਤ-ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਕੋਈ ਚੇਤੰਨ ਪੁਰਸ਼ ਆਪਣੇ ਆਤਮਿਕ ਬਲ ਦੇ ਸਹਾਰੇ ਜ਼ਬਰ-ਵਿਰੋਧੀ ਉਸ ਭਾਵਨਾ ਨੂੰ ਵਿਆਪਕਤਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਕੇ, ਸੰਚਾਰ ਮਾਧਿਆਮ ਰਾਹੀਂ ਲੋਕ-ਮਾਨਸ ਦੀ ਚੇਤਨਾ ਨੂੰ ਅਜਿਹਾ ਟੁੰਬਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਜਨ-ਮਾਨਸ-ਲਹਿਰ ਦਾ ਰੂਪ ਧਾਰਨ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।

Scanned by CamScanner

ਵਿਰੋਧ ਦੀ ਲੋਕ-ਲਹਿਰ, ਜਦੋਂ ਸਿਧਾਂਤਬੱਧ ਹੋ ਕੇ ਪੀੜ੍ਹਤ ਵਰਗ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਨਾਲ ਜੋੜ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਇਸ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਵਿਰੋਧ ਇਕ ਨਵੀਂ ਸਥਿਤੀ ਪੈਦਾ ਕਰਕੇ ਟਕਰਾਉ ਦੀ ਸ਼ਕਲ ਧਾਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ। ...ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੇ ਸਮਕਾਲੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਇਸ ਸੰਕਲਪ ਅਧੀਨ ਦੋ ਸ਼ਕਤੀਆਂ ਕਾਰਜ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਸਨ। ਪਹਿਲੀ ਸ਼ਕਤੀ ਸੀ: ਰਾਜ-ਸੰਸਥਾ (institution of state) ਅਤੇ ਦੂਜੀ ਸੀ ਧਰਮ-ਸੰਸਥਾ (institution of church)। ਰਾਜ-ਸੰਸਥਾ ਵਿਦੇਸ਼ੀਆ ਦੇ ਹੱਥ ਵਿਚ ਸੀ, ਜੋ ਭਾਰਤੀ ਜਨਤਾ ਉੱਤੇ ਜ਼ਬਰ-ਜ਼ੁਲਮ ਕਰਨ ਸਮੇਂ ਰਤੀਮਾਸਾ ਵੀ ਤਰਸ ਨਹੀਂ ਸਨ ਖਾਂਦੇ, ਕਿਉਂਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਇਸ ਵਰਗ ਨਾਲ ਕੋਈ ਜਜ਼ਬਾਤੀ ਦਿਲ ਦੀ ਸਾਂਝ ਨਹੀਂ ਸੀ। ਧਰਮ-ਸੰਸਥਾ, ਦੇਸੀ ਪੰਡਤ-ਪੁਜਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਕਾਜ਼ੀ ਮੁੱਲਾਂ ਦੇ ਹੱਥਾਂ ਵਿਚ ਸੀ। ਧਰਮ ਦੇ ਇਹ ਰਹਿਨੁਮਾ ਆਪਣੇ ਧਾਰਮਕ ਫਰਜ਼ਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਕਰਨ ਦੀ ਥਾਂ, ਪੇਟ-ਪੂਰਤੀ ਲਈ ਹਰ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਹੱਥਕੰਡੇ ਵਰਤਣ ਲਈ ਤੱਤਪਰ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ।"[1] ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀ ਰਾਜਸੀ ਪਰਸਥਿਤੀ ਦੇ ਸਨਮੁੱਖ ਹੁੰਦਿਆ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਤੱਤਕਾਲੀ ਰਾਜਾਸ਼ਾਹੀ ਲਈ ਇਹ ਸੰਦੇਸ਼ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਉਹ ਜ਼ਬਰ-ਜ਼ੁਲਮ ਕਰਦੇ ਜੇਕਰ ਅਨੇਕਾਂ ਭੋਗ ਵਿਲਾਸੀ ਕੁਕਰਮ ਕਰਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਉਹ ਧਾਰਮਕ ਕਾਰਜਾਂ ਤੋਂ ਊਣੇ ਹਨ। ਰਾਜਾਸ਼ਾਹੀ ਦੀ ਇਹੋ-ਜਿਹੀ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਪ੍ਰਗਟਾਉਂਦੇ ਭਗਤ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਪ੍ਰਵਚਨ ਕਰਦੇ ਹਨ :

" ਇਨ ਪੰਚਨ ਮੇਰੋ ਮਨੁ ਜੁ ਬਿਗਾਰਿਓ ।।
ਪਲੁ ਪਲੁ ਹਰਿ ਜੀ ਤੇ ਅੰਤਰ ਪਾਰਿਓ ।।2।।
ਜਤ ਦੇਖਉ ਤਤ ਦੁਖ ਕੀ ਰਾਸੀ ।।
ਅਜੌ ਨ ਪਤ੍ਰਾਇ ਨਿਗਮ ਭਏ ਸਾਖੀ ।।3।।ਤ੍ਰ
ਗੌਤਮ ਨਾਰਿ ਉਮਾਪਤਿ ਸ੍ਵਾਮੀ ।।
ਸੀਸੁ ਧਰਨਿ ਸਹਸਿ ਭਗ ਗਾਂਮੀ ।।4।।
ਇਨ ਦੂਤਨ ਖਲੁ ਬਧੁ ਕਰ ਮਾਰਿਓ ।।
ਬਡੋ ਨਿਲਾਜੁ ਆਜਹੂ ਨਹੀ ਹਾਰਿਓ ।।5।।"[2]

ਇਸ ਸ਼ਬਦ ਅੰਦਰ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਇਹ ਫੁਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸ਼ਾਸਤਰ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਗਵਾਹੀ ਭਰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਗੌਤਮ ਰਿਸ਼ੀ ਦੀ ਇਸਤਰੀ ਅਹੱਲਿਆ ਸੀ। ਇੰਦਰ (ਰਾਜੇ) ਨੇ ਅਹੱਲਿਆ ਨਾਲ ਵਿਭਚਾਰ ਕੀਤਾ । ਇਸ ਕਾਰਨ ਗੌਤਮ ਨੇ ਇੰਦਰ ਨੂੰ ਸਰਾਪ ਦਿੱਤਾ, ਜਿਸ ਸਦਕਾ ਇੰਦਰ ਦੇ ਸਰੀਰ ਉੱਪਰ ਹਜ਼ਾਰ ਭਗਾਂ ਦੇ ਨਿਸ਼ਾਨ ਉਕਰੇ ਗਏ। ਸ਼ਿਵ ਜੀ ਨੇ ਬ੍ਰਹਮਾ ਦਾ ਸਿਰ ਵੱਢਣ ਦਾ ਕਾਰਜ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਸਦਕਾ ਉਸ ਦੇ ਸਿਰ ਨੂੰ ਬ੍ਰਹਮਾ ਦਾ ਸਿਰ ਚਿਪਕ ਗਿਆ। ਇਹ ਸਾਰਾ ਕੁਝ ਤਾਂ ਵਾਪਰਿਆ ਕਿ ਇਹ ਪੰਜੇ ਵਿਕਾਰਾਂ ਵਿਚ ਫਸ ਗਏ ਸਨ। ਪ੍ਰਤੀਕਾਤਮਕ ਤੇ ਸੰਕੇਤਕ ਰੂਪ ਵਿਚ ਦਰਸਾਈ ਇਸ ਸਥਿਤੀ ਦੀ ਸਮਕਾਲੀ ਵਿਡੰਬਨਾ ਇਹ ਸੀ ਕਿ ਰਾਜੇ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਉੱਚ ਵਰਗੀ ਅਹਿਲਕਾਰ ਵੀ ਭੋਗ ਵਿਲਾਸੀ ਸਨ ਅਤੇ ਧਾਰਮਕ ਸਥਾਨ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿਭਚਾਰਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਕਰਨ ਦੇ ਅਜਿਹੇ ਕੇਂਦਰ ਸਨ, ਜਿਥੇ ਮਨੋਰੰਜਨ ਤੇ ਪਵਿੱਤਰ ਕਾਰਜਾਂ ਵਿਚ ਸ਼ਰਾਬ ਅਤੇ ਨਾਰੀਆਂ ਦੀ ਵਿਵਸਥਾ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਰਾਜਾਸ਼ਾਹੀ ਦੇ ਜ਼ਬਰ-ਜ਼ੁਲਮ ਨੂੰ ਭਗਤੀ ਗਿਆਨਧਾਰਾ ਦੇ ਪ੍ਰਵਚਨ ਕਰਤਾਵਾਂ ਨੇ ਗਲਤ ਸਾਬਤ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਆਮ ਜਨਤਾ ਦਾ ਹੱਕ ਪੂਰਿਆ, ਜਿਸ ਸਦਕਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਰਾਹਤ ਤਾਂ ਮਿਲੀ ਹੋਵੇਗੀ ਜਾਂ ਨਹੀਂ, ਪਰ ਇਹ ਗੱਲ ਜ਼ਰੂਰ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀ ਰਾਜਾਸ਼ਾਹੀ ਦੇ ਸਿਸਟਮ ਖਿਲਾਫ਼ ਅਵਾਜ਼ ਉੱਠਣੀ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਈ , ਜਿਹੜੀ ਭਵਿੱਖ ਵਿਚ ਹੋਰ ਉੱਚੀ ਤੋਂ ਉੱਚੀ ਹੁੰਦੀ ਗਈ। ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਭਗਤ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਅੰਦਰਲੀ ਰਾਜਸੀ ਸਥਿਤੀ ਅਤੀਤ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀਕਾਤਮਕ ਅਵਸਥਾ ਵਿਚੋਂ ਅਰਥ ਲੈ ਕੇ ਵਰਤਮਾਨ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਰਹੱਸਾਤਮਕ ਅਨੁਭਵ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਪ੍ਰਸਤੁਤ ਕਰਦੀ ਨਜ਼ਰੀ ਪੈਂਦੀ ਹੈ। ਅਸਲ ਵਿਚ, "ਰਾਜਨੀਤਕ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਖੱਤਰੀ ਵਰਗ ਬੇਸ਼ਕ ਬਲਵਾਨ ਸੀ, ਪਰ

Scanned by CamScanner

जनवरी - जून - 2019 | खण्ड - II | ISSN : 2321-6581

वर्ष : VII, अङ्क - I, कुल अङ्क - XII
Impact Factor : 3.082
UGC Approved SL. No. 40890

शोध नवनीत

SHODH NAVNEET

(षाण्मासिकी अन्ताराष्ट्रिया शोध-पत्रिका)

The Half Yearly International Peer-Reviewed (Refereed) Research Journal of Humanities and Oriental Knowledge

हमारा प्रयास समाजोपयोगी, नवीन एवं प्राच्यज्ञान का प्रकाशन
Our whole effort is to publish societal, innovative and oriental knowledge.

प्रधान सम्पादक :
डॉ. अवधेश प्रताप सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सम्पादक :
डॉ. प्रमोद कुमार मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, राजकीय महाविद्यालय पचवस-बस्ती (उ.प्र.)

सह-सम्पादक :
डॉ. सुनील कुमार शर्मा
सहायक आचार्य (सं. अ.), शिक्षाशास्त्र विभाग, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मा. वि.),
भोपाल परिसर, भोपाल (म.प्र.)

स्तुति प्राच्यविद्या समिति

51- जबर नगर, पो. परास,
जिला - गोण्डा, उत्तर प्रदेश, भारत - **271403**
अन्तर्जाल (Website) : www.shodhnavneet.com
अणुसंकेत (E-mail) : shodhnavneet@gmail.com
चलभाष (contact us) : +91-7800193920

Shodh Navneet (International Refereed Research Journal)
ISSN : 2321-6581, Impact Factor : 3.082, Vol. XII, Jan. - June - 2019

भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ : एक चिन्तन

डॉ. रणधीर कौशिक*

मानव जीवन के सर्वाङ्गीण विकास में जीवन मूल्यों का महत्त्व सदैव रहा है। हमारी संस्कृति हमारे प्राचीन मूल्यों का सम्पोषण एवं संरक्षण करती आई है। भारतीय संस्कृति प्रारम्भ से ही आध्यात्मिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों से जुडी हुई है। इसमें सदियों से संस्कारों एवं परम्पराओं का अत्यधिक महत्त्व रहा है। भारतीय मनीषियों ने मनुष्य के जीवन को आध्यात्मिक, भौतिक एवं नैतिक दृष्टि से उन्नत बनाने के लिए 'पुरुषार्थ' के नाम से अपने दार्शनिक विचारों की नियोजना की थी। जीवन में भौतिक सुख एवं आध्यात्मिक सुख दोनों का अपना-अपना स्थान है, दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं, एक के बिना भी जीवन सार्थक नहीं हो सकता। अतएव भारतीय जीवन दर्शन में इन दोनों प्रवृत्तियों का संतुलित, समन्वित और सम्बन्धित स्वरूप है जिसको हम पुरुषार्थ के नाम से जानते हैं।

सर्वप्रथम हम ये जानना अत्यावश्यक है कि पुरुषार्थ क्या है? 'पुरुष' और 'अर्थ' शब्दों के संयोग से बना यह शब्द मानव जीवन का आधार है, जिसमें मनुष्य जन्म समय से मृत्यु पर्यन्त तक अपने लक्ष्य की खोज में लगा रहता है, पुरुषार्थ एक ओर जहाँ भौतिक सुख जो कि अस्थाई, असत्य और अस्थिरता का बोध कराता है, तो वहीं दूसरी ओर वह आध्यात्मिक सुख जो कि सत्य एवं स्थाई होता है। पुरुषार्थ मानव जीवन के मूल लक्ष्य की पूर्ति कराता है। उसको हम यूं भी कह सकते हैं कि मनुष्य के सर्वाङ्गीण विकास का आधार पुरुषार्थ ही है। इससे समाज की उन्नति भी होती है। सामान्य रूप से तो पारलौकिक सुखों की प्राप्ति का साधन भौतिक सुख को माना जाता है, परन्तु भारतीय परम्परा में भौतिक सुखों को क्षणिक एवं नश्वर माना गया है। जैसे कठोपनिषद् में भी कहा गया है कि सम्पूर्ण भोग क्षणिक हैं, ये मनुष्य की समस्त इन्द्रियों के तेज को क्षीण कर देते हैं, फिर भी इनके प्रति मनुष्य का मोह भंग नहीं होता।[१]

इस जगत् में रहने वाले प्रत्येक मानव की लालसा कभी धर्म में कभी काम में तो कभी अर्थ में रहती है, इसी कारण सर्वप्रथम पुरुषार्थ के अर्न्तगत धर्म, अर्थ, काम ही आते थे जिसे हम त्रिवर्ग भी कहते हैं, बाद में चलकर इसमें मोक्ष को भी जोड़ा गया। इसी को भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ चतुष्ट्य भी कहा है। पुरुषार्थ के चार आधार हैं - **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष**। चारों पुरुषार्थों का अर्थ स्पष्ट करते हुए श्री कपाड़िया जी कहते हैं कि 'मोक्ष मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है और मानव की आन्तरिक, आध्यात्मिक अनुभूति का प्रतीक है। इस पर उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सदा कर्मवाद को ही प्राथमिकता मिली है।[२] महर्षि वेदव्यास जी ने भी कहा है -

धर्मार्थकामाः सममेव सेव्याः यो ह्येयकमन्तरय नरो जद्यन्यः।
द्वयोस्तु दाक्ष्यं प्रवदन्ति मध्यं स उत्तमो योगभिरतस्तिवर्गेः।।[३]

अर्थात् धर्म, अर्थ एवं काम इन तीनों का सेवन सभी को समान रूप से करना चाहिए इसी से अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है। इनमें से जो प्राणी केवल एक का ही भोग करता है वह अधम है जो दो का सेवन करता है वह मध्यम है तथा जो तीनों का सेवन करता है वह प्राणी श्रेष्ठ है, वही अन्तिम पुरुषार्थ

* सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, राजकीय रणबीर महाविद्यालय संगरूर, पंजाब

को प्राप्त कर सकता है। इनका व्यापक रूप से इस प्रकार विवेचन किया जाता है –

"सर्वप्रथम पुरुषार्थ चतुष्ट्य में धर्म का स्थान सर्वोपरि है। भारतीय परम्परा में धर्म का महत्त्व विश्व विश्रुत है। सामान्यतः पुरुषार्थ में व्यक्ति का यह सिद्धान्त प्रतीत होता है कि सांसरिक जीवन की अपेक्षा हमारा पारलौकिक जीवन इतना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि इसके बिना व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास असम्भव है।"

'धर्म' शब्द की निष्पत्ति 'धृ धारणे' धातु से हुई है जिसका अर्थ है धारण करना अर्थात् जीवन जीने की कला एवं सिद्धान्त का ज्ञान होना। महाभारत के अनुशासन पर्व में सदाचार को ही धर्म का लक्षण माना है तथा अच्छे आचरण से ही इसको फलीभूत होना बताया गया है। इसी का पालन करने में ही मानवता का कल्याण निहित है, नैतिक एवं उत्तम आचरण ही इसके आधार स्तम्भ हैं।[४] वैदिक ऋचाओं में ऋत को ही धर्म का पर्याय माना है, क्योंकि ऋत प्राकृतिक नैतिक व्यवस्था का पर्याय था। **'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'** अर्थात् वेद धर्म के मूल प्रतिपादक हैं। इसी से सुख प्राप्त होता है, जैसा कि कहा भी गया है – **'सुखस्य मूलं धर्मः।'** वैशेषिक दर्शन में भी कहा गया है कि जिससे सभी प्राणियों का हित होता है वही धर्म है इसी में लौकिक एवं पारलौकिक कल्याण निहित है।[५]

मनुस्मृति में भी धर्म के चार श्रोत बतलाये हैं – श्रुति, स्मृति, सदाचार एवं आत्म सन्तुष्टि। इनमें व्यक्ति को जो सर्वश्रेष्ठ लगता है वही धर्म है, यहाँ धर्म के दस लक्षण बताये गये हैं। जिनमें, धैर्य धारण करना, क्षमा करना, झूठ न बोलना, शौच (पवित्र), इन्द्रियों पर नियन्त्रण, स्वच्छ बुद्धि, विद्या देना एवं ग्रहण करना, सत्य का पालन करना, क्रोध न करना आदि।[६] इन्हीं को आगे बढ़ाते हुए श्रीमद्भागवत में सामान्य धर्म के तीस लक्षण बताये गये हैं। **'सत्यं वद धर्मं चर'**, **'सत्यमेव जयते'** इत्यादि वाक्य धर्म की धारणा को और विशुद्ध बताते हैं। नीतिशतक में भी कहा गया है –

येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्यलोके भूवि भारभूताः,
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।[७]

अर्थात् धर्म से हीन व्यक्ति पशु के समान ही होता है। इस प्रकार व्यक्ति का माता–पिता, अतिथि को देवतुल्य मानकर सभी प्राणियों के हित की कामना करना एवं योग्य व्यक्तियों को दान देना इससे बड़ा कोई धर्म नहीं है।

पुरुषार्थों की शृंखला में धर्म के पश्चात् 'अर्थ' आता है। इस पुरुषार्थ को मानवीय जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यहाँ 'अर्थ' शब्द से अभिप्राय धन सम्पदा से है अर्थात् इसके बिना जीवन में प्रयुक्त होने वाली सुख सुविधाएँ एवं ऐश्वर्य कठिन है, इसके बिना व्यक्ति की इच्छाएँ अपूर्ण रहती हैं। ऋग्वेद में भी आर्यों को भौतिक सुखों के निमित्त धन सम्पत्ति, गाय, अश्व आदि की कामना करते हुए दिखाया गया है। यजुर्वेद एवं तैत्तिरीयसंहिता में कृषि को मानव कल्याण तथा अर्थ प्राप्ति का प्रमुख साधन माना गया है।[८] महाभारत में भी अर्थ को उच्चतम वस्तु बताया गया है, उद्योगपर्व में अर्थ को उच्चतम धर्म बतलाया है, प्रत्येक वस्तु इसी पर निर्भर है, धन को काम एवं धर्म का आधार माना गया है, इसी से स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त होता है, इसके बिना जीवन यापन करना अत्यन्त कठिन है। कहा भी गया है –

धनमाहुः परं धर्म धने सर्वप्रतिष्ठितम्।
जीवन्ति धनिनो लोके मृता ये त्वधना नराः।।

कौटिल्य ने भी 'अर्थ' को दान एवं गृहस्थ आश्रमों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना है। गोखले की मान्यता है कि निर्धनता एक अभिशाप है यह मृत्यु से भी बुरी है। प्रसिद्ध विद्वान् महाकवि भर्तृहरि ने तो अर्थ को ही जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण माना है। उन्होंने कहा है कि जिस व्यक्ति के पास धन है वही व्यक्ति उच्च कुल वाला है, कुलीन है, वही पण्डित, विद्वान् है, वही शास्त्रों का जानने वाला है, वही गुणवान् है, वही अच्छा बोलने वाला है अर्थात् सुन्दर वक्ता है वही दर्शनीय है, इस प्रकार सभी गुण सोने (धन) में ही निवास करते हैं।[९]

महाराज मनु ने ऐसे 'अर्थ' को भी त्यागने के लिये कहा है जो धर्म सम्मत न हो, जो पाप के मार्ग से कमाया गया है। उनके अनुसार अर्थ का उपार्जन नैतिकता एवं धार्मिकता के उच्चमान दण्डों से अनुप्रेरित होना चाहिए। किसी को भी धर्म के विरुद्ध जाकर धन कमाने का अधिकार नहीं होना चाहिए।[१०] इन तथ्यों से यह सिद्ध होता है कि मनुष्य के जीवन में 'अर्थ' का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

पुरुषार्थ का तृतीय तत्त्व है 'काम'। जिसका सामान्य अर्थ है - कामना अर्थात् इच्छाएँ। मनुष्य के जीवन में काम प्रधान तत्त्व रहा है, व्यक्ति के अन्दर की वासनायें, इच्छाएँ, आसक्ति मूलक प्रवृत्तियाँ काम के अर्न्तगत आती हैं। **'काम्यते इति कामः'** या **'काम्यते जनैः इति काम सुखम्'** अर्थात् मनुष्य जिस सुख की कामना करता है, वही 'काम' है। प्राचीन हिन्दू व्यवस्थाकारों ने सृष्टि की प्रक्रिया को निरन्तर जारी रखने के लिए काम को पुरुषार्थ में जगह दी है। ऋग्वेद में कहा गया है कि 'जो पुरुष श्रद्धा एवं निष्ठा से युक्त होकर इन्द्रिय सुख भोग करते हैं, वे ही मनुष्य संसार में सुख भोगते हैं।'[११] मनुस्मृति में कहा गया है कि काम धार्मिक नियमों, संयमों के अनुरूप होना चाहिए। धर्म को हानि पहुँचाने वाले अर्थ और काम को त्याग देना चाहिए -

परित्यजर्थ कामौ यौ स्वातां धर्म वर्जितो।
धर्मचाप्य सुखोदर्क लोक विक्रुष्टमेव च।।[१२]

भारतीय परम्परा में 'काम' को धर्म से नियन्त्रित करने का प्रयास किया गया है। इसी के निमित्त गृहस्थ आश्रम की व्यवस्था की गई है, क्योंकि काम के अभाव में न तो पितृऋण से मुक्त हुआ जा सकता है और न ही अपने पितरों का पिण्ड दान किया जा सकता है। यहाँ काम को केवल इन्द्रिय सुख न मानकर सृष्टि प्रक्रिया का माध्यम माना है। महर्षि वेदव्यास ने इसको विस्तार से बताते हुए कहा है कि काम मन तथा हृदय का वह सुख है जो इन्द्रियों को विषयों से जुड़ने पर उत्पन्न होता है। यह मानव की प्रमुख प्रवृत्ति है। इसी के वशीभूत होकर वह सन्तानोत्पत्ति करके गृहस्थ जीवन का सुख भोगता है।[१३] कौटिल्य ने भी काम की तरफ संकेत किया कि परस्पर एक दूसरे के आश्रित धर्म, अर्थ और काम स्वरूप त्रिवर्ग का समान भाव से सेवन करना चाहिए; क्योंकि धर्म, अर्थ और काम इन तीनों में यदि एक का व्यसन के रूप में अधिक सेवन हो जाता है तो उनमें से दो को कष्ट पहुँचता है, परन्तु वह काम धर्म सम्मत होना चाहिए।[१४]

पुरुषार्थ के अन्तिम सोपान पर भारतीय संस्कृति के व्यवस्थाकारों ने जीवन के उदात्त एवं आदर्शात्मक स्वरूप मोक्ष की नियोजना की है। भारतीय संस्कृति में 'मोक्ष' ऐसा पुरुषार्थ है जिसके कारण ही धर्म, अर्थ एवं काम सन्तुलित रूप से मानव व्यवहार के अंग बन पाते हैं। प्रथम तीन पुरुषार्थों का क्रियान्वयन अन्तिम पुरुषार्थ तक पहुँचने का सोपान है, क्योंकि जीवन में समस्त घटनाओं परिघटनाओं को सम्पादित करने के पश्चात् मनुष्य अपने जीवन की सान्ध्य बेला में मोक्ष की तरफ अग्रसर होता है। मोक्ष जीवन के आदर्श की पराकाष्ठा है। मोक्ष का सामान्य अर्थ है - मुक्त होना अर्थात् मनुष्य सभी प्रकार के बन्धनों, विषय वासनाओं से, आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है। उपनिषदों में कहा गया है -

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्च छिद्यन्ते सर्व संशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।[१५]

अर्थात् व्यक्ति को जब अपने आत्मतत्त्व का ज्ञान होता है तब उसके हृदय की सभी ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं, सभी प्रकार के संशय नष्ट हो जाते हैं, उसके सम्पूर्ण कर्मों का क्षय हो जाता है तब व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करता है। इसी को आगे बढ़ाते हुए केनोपनिषद् में कहा है कि इस जीवन में यदि पारब्रह्म को जान लिया तब तो कुशल है नही तो महान् विनाश है। बुद्धिमान् पुरुष प्रत्येक प्राणों में पारब्रह्म को समझकर इस लोक से प्रयाण करके अमरता या मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं।[१६] भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गीता में कहा है –

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्।।
यतेन्द्रियमनो बुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः।[१७]

अर्थात् काम और क्रोध से रहित हो जो व्यक्ति मन को जीत लेता है वह ज्ञानवान् व्यक्ति ही परमात्मा को प्राप्त हो सकता है। इन्द्रिय, मन एवं बुद्धि पर नियन्त्रण रखने वाले व्यक्ति को मोक्ष स्वयं ही प्राप्त हो जाता है। महाराज मनु ने कहा है कि मनुष्य की तपस्या से सम्पूर्ण पापों का नाश हो जाता है तथा ज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है – **'तपसा कल्मषं हन्ति विद्ययाऽमृतमश्नुते।'**[१८]

मोक्ष की प्राप्ति जीवन का अन्तिम लक्ष्य है इसी की प्राप्ति के लिए व्यक्ति आजीवन अपनी समस्त क्रियाओं को इसी ओर नियोजित करता है। गीता में तो भक्ति के मार्ग पर चलकर ही मोक्ष प्राप्त करने को प्रधान वरीयता दी गई है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पुरुषार्थ चतुष्ट्य का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है, जो व्यक्ति इसका पालन करता है, वह सम्पूर्ण समाज के लिये अनुकरणीय हो जाता है। इसमें मनुष्य ईश्वर के साकार रूप की उपासना करते हैं एवं उसकी सेवा में अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित कर देते हैं, उसके लिये ब्रह्म या ईश्वर ही सर्वोपरि होता है, वही उसका सखा, स्वामी एवं गुरु होता है। मोक्ष प्राप्त करने वाला व्यक्ति समस्त मानवीय आदर्शों से युक्त होता है, मोह, माया से दूर रहता है। अपनी आत्मा को उज्ज्वल, शुद्ध एवं निर्मल बनाकर वह समाज को व्यक्ति को एक नई दिशा प्रदान करता है तथा सम्पूर्ण समाज के लिये अनुकरणीय हो जाता है। इस प्रकार जीवन के सभी पक्षों का संतुलित विकास ही परम लक्ष्य तक पहुँचने का आदर्श सोपान है।

सन्दर्भ-सूची

१. सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः, न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्योः। कठोपनिषद्।
२. भारतीय संस्कृति, पृष्ठ – १०९
३. महाभारत, शान्तिपर्व, १६४.४०
४. आचार लक्षणो धर्मः सतश्चरित्रलक्षणः।
साधुनां च यथा वृतमेतदाचार लक्षणम्।। महाभारत, अनुशासनपर्व।
५. यतो अभ्युदयानिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः। वैशेषिक सूत्र १.१.२
६. वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियात्मनः।
एतत् चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्।।
धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रयनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।। मनुस्मृति ६.९२-९३

७. नीतिशतकम्।

८. महाभारत, उद्योगपर्व ७२.२३

९. नीतिशतकम्।

१०. मनुस्मृति।

११. ऋग्वेद १०.३७.२

१२. मनुस्मृति।

१३. विषयवर्तमानानां यो प्रीतिरूपो जायते।
स काम इति मे बुद्धिः कर्मणा फलमुत्तमम्।। महाभारत, वनपर्व।

१४. कौटिल्य-अर्थशास्त्रम्।

१५. माण्डूक्योपनिषद् २.२.८

१६. इहचेद वेदोदयसत्यमस्ति न चेहिदावेदीन् महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेष विचित्यधीराः प्रेत्यास्माल्लोकाद् सृता भवन्ति।। केनोपनिषद्।

१७. श्रीमद्भगवद्गीता ५.२६ एवं २८

१८. मनुस्मृति।

---

website : www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.012

ISSN : 2229-7227

International Refereed

चिन्तन

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
(Indexed & Listed at : UGC Journals List N. 41243)
(Peer Reviewed)

वर्ष : 9 अंक : 34(iii)
विक्रमी सम्वत् : 2076
अप्रैल-जून 2019

संपादक

आचार्य (डॉ०) शीलक राम

आचार्य अकादमी, भारत

ISO 9001 : 2008

International Refereed
Impact Factor : 4.012
Peer Reviewed

'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN : 2229-7227)
वर्ष 9, अंक 34(iii) (पृ.सं. 374-379)
विक्रमी सम्वत्: 2077 (अप्रैल-जून 2019)

वैदिक संस्कृति में धर्म का स्वरूपः एक अध्ययन

डॉ. रणधीर कौशिक, (उपाचार्य)
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर। (पंजाब)

शोध-आलेख सार

भारतीय परम्परा में धर्म का महत्व विश्व विख्यात है। सामान्य रूप से व्यक्ति को यह सिद्धान्त मात्र ही प्रतीत होता है परन्तु वास्तव में यह हमारे सर्वांगिंण विकास का आधार है। इसके बिना हम व्यक्तित्व विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते। यहां पर सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कि यह धर्म क्या है? यहां भारतीय परम्परा के अनुसार 'धर्म' शब्द की व्युत्पति धृ धातु से हुई है जिसका सामान्य अर्थ है धारण करना। प्राचीन भारतीय धर्म ग्रन्थों में धर्म के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन हुआ है। सर्व प्रथम ध्रियते लोक अनेन इति धर्मः अर्थात् जिसे लोक या संसार को धारण किया जाये वह धर्म है। दूसरे अर्थो में धरति धारयति का लोकः इति धर्मः अर्थात् जो लोक को धारण करता है, वह धर्म है। अन्य अर्थ में हम कह सकते है - ध्रियते यः य धर्मः अर्थात् जो दूसरों से धारण किया जाये वह धर्म है। अमर कोश के अनुसार भी धर्म शब्द के अनेक अर्थ है। जैसे सुकृत, पुण्य, न्याय, स्वभाव, आचार आदि5 आचार्य यास्क ने धर्म शब्द का अर्थ नियम बताया है। अर्थात् जिस नियम ने इस लोक या संसार को धारण कर रखा है वह धर्म है।

मुख्य-शब्द : पुरुषार्थ, ऋत, अपोरुष्य, माननीय कल्याण ।

भारतीय मनीषियों ने मनुष्य के जीवन को आध्यात्मिक, भौतिक एवं नैतिक दृष्टि से उन्नत करने के लिये अनेकों सिद्धान्तों की व्याख्या की है। जीवन में आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख दोनों का अहम् स्थान है। इन दोनों का समन्वित रूप ही जीवन को समुन्नत करता है। पुरूषार्थ मनुष्य वह आधार है जिसके माध्यम से वह अपना जीवन जीता है। पुरूषार्थ से व्यक्ति के जीवन का विकास तो होता ही है साथ-साथ समाज का विकास भी होता है। भारतीय संस्कृति में पुरूषार्थ चतुष्ट्य में सबसे अधिक महत्व धर्म और मोक्ष को ही दिया गया है। परन्तु सर्व प्रथम भारतीय संस्कृति का मूल आधार धर्म को ही माना गया है। व्यक्ति धर्म का अनुसरण करता हुआ ही अपने मुख्य लक्ष्य तक पहुँचता है।

भारतीय परम्परा में धर्म का महत्व विश्व विख्यात है। सामान्य रूप से व्यक्ति को यह सिद्धान्त मात्र ही प्रतीत होता है परन्तु वास्तव में यह हमारे सर्वांगिंण विकास का आधार है। इसके बिना हम व्यक्तित्व विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते। यहां पर सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कि यह धर्म क्या है? यहां भारतीय परम्परा के अनुसार 'धर्म' शब्द की व्युत्पति धृ धातु से हुई है जिसका सामान्य अर्थ है धारण करना।[1] प्राचीन भारतीय धर्म ग्रन्थों में धर्म के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन हुआ है।

सर्व प्रथम ध्रियते लोक अनेन इति धर्मः[2] अर्थात् जिसे लोक या संसार को धारण किया जाये वह धर्म है। दूसरे अर्थो में धरति धारयति का लोकः इति धर्मः[3] अर्थात् जो लोक को धारण करता है, वह धर्म है। अन्य अर्थ में हम कह सकते है - ध्रियते यः य धर्मः[4] अर्थात् जो दूसरों से धारण किया जाये वह धर्म है। अमर कोश के अनुसार भी धर्म शब्द के अनेक अर्थ है। जैसे सुकृत, पुण्य, न्याय, स्वभाव, आचार आदि[5] आचार्य यास्क ने धर्म शब्द का अर्थ नियम बताया है।[6] अर्थात् जिस नियम ने इस लोक या संसार को धारण कर रखा है वह धर्म है।

वैदिक संहिताओं में 'ऋृत' को ही धर्म माना गया है वही सत्य है, इसी को नैतिक व्यवस्था का पर्याय बताया गया है, तभी तो हम कहते है कि 'वेदोऽखिलो धर्म मूलम अर्थात् वेद ही धर्म के प्रतिपादक है, इन्ही से सुख की प्राप्ति होती है जैसे कि कहा भी गया है कि धर्मः सुखस्यमूलम अर्थात् धर्म ही सुख का आधार है। भगवान ने वेदों के आधार पर ही सृष्टि की रचना की है तथा भारत की संस्कृति वेदमूलक है, वेद ही धर्म का मूल है। वेद मूलक स्मृति, सदाचार ही धर्म में प्रमाण है। महाभारत के अनुशासन पर्व में आचार अथवा सदाचार को धर्म का लक्षण माना गया है तथा आचार से ही धर्म का फलीभूत होना बताया है। कहां भी है-

आचार लक्षणों धर्मः सक्ताश्चारित्रलक्षणः।[7]
साधूनां च यथा वृतमेत्दाचारलक्षणम्।।

धर्म के अनुपालन में ही समस्त मानवता का कल्याण निहित है। नैतिक एवं उक्ताम आचरण ही धर्म के आधार स्तम्भ है। धर्म एक मर्यादा है जो अर्थ एवं काम को सीमित परिधि में निबद्ध कर व्यक्ति को पथभ्रष्ट होने से रोकती है एवं समय-2 पर व्यक्ति के वास्तविक कर्त्ताव्य का बोध कराती है। प्राचीन काल में सम्पूर्ण सामाजिक एवं नैतिक अवधारणा से धर्म में मानवीय कल्याण की भावना निहित थी। महाभारत के शान्ति पर्व में कहा गया है जिन सिद्धान्तों के अनुसार व्यक्ति अपना दैनिक जीवन व्यतीत करता है जिसके द्वारा सामाजिक बन्धनों की स्थापना होती है वही धर्म है। यही जीवन का सत्य है एवं हमारी प्रकृति को निर्धारित करने वाली शक्ति है। वेद व्यास जी और भी लिखते है- दुष्ट मनुष्य के दर्शन से, स्पर्श से, उनके साथ वार्तालाप करने से तथा एक आसन पर बैठने से धार्मिक आचार नष्ट हो जाते है तथा मनुष्य किसी कार्य में सफल नहीं होता है[8] और भी कहते है - धर्म एवं हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः। तस्माद्धर्म न त्यजामि मा नो धर्मो हतोऽवधीत।[9] अर्थात् धर्म ही आहत् होने पर मनुष्य को मारता है और वही पालन किया जाता हुआ रक्षा करता है अतः हमें धर्म को नहीं त्यागना चाहिये नहीं तो धर्म ही हमारा वध कर डालेगा।

आगे भी कहते हैं कि धारण करने से लोग इसको धर्म कहते है धर्म प्रजा को धारण करता है, जो धारणा के साथ रहे वही धर्म है।[10] श्रीमद्भगवद् में भी स्पष्ट कहा है- वेदप्रर्णिहितो धर्मो हयधर्मस्तद्विपर्ययः[11] अर्थात् वेद में कहा हुआ ही धर्म है उसके विपरीत अधर्म है। भगवान ने ही धर्म रूपी नियमको बनाया है। वे स्वयं ही उसी पर नियंत्रण रखते है या रखवाते है, यहां तक कि वे धर्म की हानि को देखकर स्वयं अवतार धारण करते हैं जैसा कि उन्होनें गीता में डके की चोट पर कहा है कि हे अर्जुन जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्वि होती है तब-तब मैं इस सृष्टि का सृजन करने के लिये अवतार धारण करता हूँ। साधुओं, सन्त, महात्माओं की रक्षा तथा दुष्टों का विनाश करने के लिये तथा धर्म की पुनः स्थापना हेतु मैं इन तीनों कामों के लिये प्रत्येक युग में प्रकट होता हूँ।[12] इसलिये हम कह सकते है कि धर्म की रक्षा करने वाले, धर्म को बनाने वाले और समस्त धर्मो के आधार स्वयं भगवान ही है। रामायण के अयोध्या काण्ड में भी महर्षि बाल्मीकि ने धर्म को सत्य मान कर उसको ईश्वर स्वरूप माना है, उनके अनुसार जगत् में सत्य ही ईश्वर है, सदा सत्य के आधार पर ही धर्म की स्थिति रहती है, सत्य ही सबकी जड़ है, सत्य से बढ़कर कोई उक्ताम गति नहीं है। दान, यज्ञ, होम, तपस्या और वेद इन सब का आश्रय धर्म है, इसलिये सबको सत्य स्वरूप धर्म का आचरण करना चाहिये।[13] जैसा कि कहा भी है-

सत्यमेवेश्वरो लोकेसत्ये धर्मः सदाऽऽश्रितः।
सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम्।।
दतंयिष्टं हुतं चैव तप्तानि च तंपासि च।
वेदाः सत्यप्रतिष्ठानास्तस्मात्सत्यपरो भवेत।।

रामायण में तो श्री राम ही साक्षात् धर्म के विग्रह स्वरूप है।[14] श्रीराम के राज्य में प्रायः सभी मनुष्य परस्पर प्रेम करने वाले तथा नीति, धर्म, सदाचार और ईष्वर की भक्ति में तत्पर रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करने वाले थे। वैशेषिक दर्शन में भी सदाचार को ही धर्म का स्वरूप माना है, वह लोक एवं परलोक में कल्याण करने वाला जो अनादि काल से ही चला आ रहा है, उसी से मनुष्य का कल्याण होता है। उसी से लौकिक उन्नति तथा पार लौकिक कल्याण की प्राप्ति होती है।[15]

याज्ञवल्क्य ऋृषि धर्म के विषय में बताते हुए कहते हैं कि मनुष्य के जो प्रमुख कर्तव्य हैं वही उसके धर्म है। इनके अनुसार -

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
दानं दया दमः क्षान्ति सर्वेषां धर्म साधनम्।।[16]

अर्थात् किसी भी प्राणी को पीड़ा न पहुँचाना, सच बोलना, बिना दिया हुआ कुछ न लेना अर्थात् चोरी न करना, शरीर और मन की शुद्धि इन्द्रियों को वश में लाना, यथाशक्ति दान देना, विपक्ति में पड़े हुये की रक्षा करना, अपने मन को वश में रखना, अपना उपकार हो जाने पर भी क्रोध न प्रकट करना, ये सब धर्म के लक्षण हैं, अन्य स्मृतिकारों ने भी धर्म के इन्हीं लक्षणों को स्वीकार किया है।

मनु महाराज ने धर्म की विस्तृत व्याख्या की है उन्होने धर्म का मूल वेदों को माना है क्यों भारतीय संस्कृति वेदमूलक है। कहा भी है-

वेदो ऽखिलो धर्म मूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्रैव साधुनामात्मनस्तुष्टिरेव च।।[17]

अर्थात् सम्पूर्ण धर्म का मूल वेद है, वेदों को जानने वालों की स्मृति तथा शील अर्थात् ब्रह्मण्यता, देव-पितृभक्ति, सौम्यता, अपरोपतापिता, अनसूयता, मृदुता, अपोरूष्य, मित्रता, प्रियवादिता, कृतज्ञता, शरण्यता, कारूण्य और प्रशक्ति ये तेरह प्रकार का शील तथा वेदों का आचरण तथा वेद के वैकल्पिक विषयों में सज्जन लोगों की संतुष्टि ही धर्म है। सामान्य रूप से मनुस्मृति में धर्म के चार स्त्रोत बताये गये हैं - वेद, स्मृति, सदाचार एवं आत्म संतुष्टि। व्यक्ति के जीवन को सम्पूर्ण बनाने में धर्म की भूमिका अग्रणी होती है, धर्म व्यक्ति के कर्तव्यों को निर्धारित करता है। यहां धर्म के निर्वहण में नैतिकता को महत्व पूर्ण स्थान दिया गया है।[18] धर्म युग युगान्तर से चली आ रही परम्परा का पालन पोषण करता है। प्राचीन कालीन व्यवस्थाकारों ने ऐसे विधानों या नियमों का सृजन किया है जो सभी धर्म द्वारा ही संचालित होते थे तथा उनमें मुख्य रूप से मानवीय कल्याण की भावना निहित होती थी। इसी कारण से ही मनुष्य अपने अन्दर पवित्र भावना रखकर सद्गुणों का विकास करके धर्म के स्वरूप को बड़ी ही आसानी के साथ धारण कर सकता था। महाराज मनु ने आगे और भी सुन्दर वर्णन करते हुए कहा है कि धर्म की उत्पति सत्य से होती है, दया और दान से वह बढ़ता है, क्षमा में वह निवास करता है तथा क्रोध से धर्म का नाश हो जाता है।[19] मनु जी आगे भी कहते है-

श्रुति स्मृत्युदितं धर्मनुतिष्ठन्हिमानवः।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्।।[20]

अर्थात् श्रुति एवं स्मृति में कहे हुए धर्म का पालन करता हुआ मनुष्य इस लोक में यश को पाता है तथा मरकर परलोक में उत्तम सुख या मोक्ष को प्राप्त होता है। मनु जी धर्म को मनुष्य का सबसे उत्तम मित्र माना है, उनके अनुसार एक धर्म ही ऐसा मित्र है जो मरने पर भी जीव के साथ जाता है और सभी तो शरीर

के नाश के साथ ही छोड़कर चले जाते है। साथ ही शास्त्र भी यही कहता है कि मनुष्य यदि अपने धर्म का पालन करता हुआ मरता है, तो वह श्रेष्ठ है, पर धर्म तो सदैव भय को देने वाला है। सभी प्राणियों का वही परम धर्म है जिसने भगवान में निष्काम, अटल और अचल भक्ति हो तथा जिसके करने से व्यक्ति की अन्तर्रात्मा प्रसन्न हो, तभी तो कहा है जहां धर्म होता है, वहीं विजय होती है और भी कहा है कि -

धर्मेण हन्यते व्याधिर्धर्मेण हन्यतेग्रहः
धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः।।[21]

अर्थात् धर्म के धारण करने से सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते है, धर्म से ग्रहों की पीड़ा मिट जाती है, धर्म ही शत्रु का नाश करता है, जहां धर्म होता है, वही जय होनी हैं। मनु महाराज तो माता पिता एवं गुरू की एवं अतिथि की सेवा करने वाले को ही धर्मानुग्राही मानते हैं, वे पिता को गार्हपत्य अग्नि माता को दाक्षिण्य अग्नि एवं गुरू को आहवानीय अग्नि मानकर इनको सर्वश्रेष्ठ मानते हुए कहते है कि वे ही तीन लोक है, वे ही तीनों आश्रम है, वे ही तीन अग्नि हैं, जिसने इन तीनों का आदर किया है, उन्होनें ही सब धर्मो का आदर किया है तथा जिसने इनका आदर नहीं किया उसके सारे धर्म नष्ट हो जाते है। इन तीनों की सेवा से ही व्यक्ति के सभी कर्तव्य कर्म पूर्ण हो जाते है। यही साक्षात् परम धर्म है। इसके अतिरिक्त अन्य सब धर्म गौण (उपधर्म) कहे जाते है।[22] अन्त में मनु महाराज कहते हैं धर्म के अन्तर्गत सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय निग्रह, क्षमा, श्रद्धा, मीठी वाणी, शील, अतिथि सेवा, माता पिता की सेवा, गुरू की सेवा, बड़ों का आदर सत्कार, सत्य वदं, धर्म चर इस प्रकार ये धर्म के प्रमुख कर्तव्य या लक्षण हैं, जो इनका पालन करता है धर्म उसकी रक्षा करता है तथा जो इनका पालन नहीं करता धर्म उसका हनन कर देता है। कहा भी है - धर्म एवं हतोहन्ति धर्मो रक्षतिः।

आज के आधुनिक चकाचौंध में यदि सबसे ज्यादा हानि हुई है तो वह धर्म की हानि हुई है, आज धर्म भी राजनीति का एक साधन हो गया है, राजनीतिज्ञों ने धर्म की परिभाषा ही बदल दी है, उन्होनें मनुष्य को मनुष्य से धर्म के नाम पर लड़ाकर अपना ही स्वार्थ सिद्ध किया है उन्होनें सम्प्रदायों को धर्म में बदल दिया है। उन्होनें समाज को हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि पता नहीं कितने धर्म एवं सम्प्रदायों में बांट दिया है। आज धर्म के नाम पर जितनी सभायें, संगठन या आन्दोनल होते है वे अपना राजनैतिक अधिकार क्षेत्र ही विस्तृत करते हैं। आज धर्म भी दूसरे साधनों की तरह अर्थ (धन कमाने) का साधन बन गया है। धर्म परिवर्तन कराया जाता है, वह भी इस अभिलाषा के साथ कि हमारे धर्म की जनसंख्या अधिक हो तथा इससे अधिकाधिक आर्थिक लाभ लिया जा सके। आज सम्पूर्ण विश्व अधर्मियों के हाथों की कठपुतलीयां बना हुआ है, चारो और राजनीतिज्ञ धर्म के ठेकेदारों से मिलकर धर्म के नाम पर दंगा फसाद करवा रहे है। धर्म को अर्न्तमुखी की अपेक्षा बाहय दिखाने का साधन बना दिया है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म को श्रेष्ठ बता रहा है तथा दूसरे के धर्म को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते है। आज कुछ दुष्ट प्रवृति के लोग बड़े गर्व से धर्म से मानव, जाति को मुक्त कराने की बात करते है तथा कुछ मूर्ख प्राणी यह कहकर प्रसन्न होते है कि मैं धर्म रूपी रोग से मुक्त हो चुका हूँ, परन्तु इसका परिणाम क्या होगा वे मूर्ख नहीं सोचते क्योंकि अग्नि यदि अपने धर्म का त्याग करेगी तो वह भस्म बन जायेगी यदि मनुष्य अपने धर्म का त्याग करता है तो वह पशु बन जाता है जैसा कि भर्तृहरि नीतिशतक में कहते है-

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्यलोके भूविभारभूताः मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।[24]

अर्थात् जिसके पास न विद्या है, न तप है, न दान देता है, न ही स्वभाव से अच्छा है, न गुण है तथा जो न ही अपने धर्म का पालन करता है, ऐसे मनुष्य इस लोक में मनुष्य के रूप में पशुओं जैसा आचरण करते है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि सम्पूर्ण शास्त्रों में कहीं भी धर्म को हिन्दू, मुस्लिम, जैन, बौद्व, सिख, ईसाई के नाम तक का उल्लेख नहीं है फिर आज हम धर्म के नाम पर क्यों झगडते है, क्यो एक दूसरे के खून के प्यासे है, कुछ दुष्ट लोगों के बहकावे में आकर क्यों हम अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का अपमान कर रहे है, आज राजनैतिक एवं समाज के ठेकेदारों ने हमेारे सामाजिक ताने बाने को नष्ट भ्रष्ट कर दिया है, आज आवश्यकता है हमें जागने की समाज को प्राचीन संस्कृति से अवगत कराने की। क्योंकि हमारे समाज में धर्म वो नहीं है जो आज हम मान बैठे है बल्कि धर्म वो है जो हमारा राष्ट्र एवं समाज के प्रति कर्तव्य है, सबसे बड़ा धर्म है, मानवता का, सबसे बड़ा धर्म है राष्ट्र धर्म एवं मानवीय धर्म हमें उसी की रक्षा करनी है।

संदर्भ

1. अमरकोश
2. कल्याण, भारतीय संस्कृति के, पृ. 369
3. उपरिवत्
4. निबन्ध श्रीराम हिन्दू संस्कृति के मूर्तिमान स्वरूप - पृ. 116 (हिन्दू संस्कृति अंक)
5. अमरकोश
6. यास्ककृत निरूस्त
7. मनुस्मृति- 2/6
8. असतां दर्शनात् स्पशीत् सञ्जल्पाच्च सहासनात्।
   धर्माचारा: प्रहीयन्ते सिद्धयक्ति च न मानवा:। महाभारत वनपर्व 12/8
9. उपरिवत्, 3/3/128
10. धारणाद्वर्ममित्याहुधर्मो धारयते प्रजा:। यत् स्याद्वारणा संयुक्त स: धर्म इति निश्चय:।
    महाभारत, कर्णपर्व 69/58
11. श्रीमद्भागवत, 6/1/44
12. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिभवति भारत:।
    अभ्युथानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्।।
    परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दृष्कृताम
    धर्मसंस्थापनार्थाय संमभवामि युगे-युगे। श्रीमद्भगवदगीता 4/7-8
13. बाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड - 109/13-14
14. उपरिवत्
15. यतोऽभ्युदयनि: श्रेयससिद्वि: स: धर्म।। वेशेषिक दर्शन 1/2
16. याज्ञवल्स्य स्मृति-
17. मनुस्मृति- 2/6
18. वेद स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियात्मन:।
    ऐतच्चतुर्विधं प्राहु: साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।। मनुस्मृति 2/12
19. सत्याज्जायते, दयया दानेन च वर्धते, क्षमायां तिष्ठति,
    क्रोधान्नश्यति। मनुस्मृति उपरिवत्
20. उपरिवत्, 2/9
21. कल्याण: भारतीय संस्कृतिअंक, पृ. 371
22. उपरिवत्, पृ. 372

23. पिता वै गार्हपत्योऽग्निर्माताग्नि दक्षिणः स्मृतः।
गुरूराह्वानीयस्तु साग्नित्रेता गरीयसीः।।
त ऐव ही त्रयोलोकास्त एव त्रय आश्रमाः।
त एव हि त्रयो वेदास्त एवोक्तास्त्रयोऽग्नयः।
सर्वेतस्यधृता धर्मा यस्यैते त्रय आदृताः।
अनादृतास्तु यस्यैते सर्वास्तस्याफलाः क्रियाः।।
त्रिष्वेतेष्वितिकृत्यं हि पुरूषस्य समाप्यते।
एषः धर्मः परः साक्षादुपधर्मोऽन्य उच्यते।। मनुस्मृति 2/230-31, 234-37

24. नीतिशतक, श्लोक-15

2019-20

THINK INDIA JOURNAL

certify to all that

Kuldip Kumar

has been awarded Certificate of Publication for research paper titled

Romantics : Earlier Voices for Environment Protection

Published in Vol-22-Issue-04-October-2019 of THINK INDIA (Quarterly Journal) with ISSN:: 0971-1260

UGC Care Approved International Indexed and Referred Journal

Impact Factor 6.2

SNSharma

Editor, Think India Journal

28

19-20

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

यतेमहि स्वराज्ये

website : www.pramanaresearchjournal.com
Impact Factor : 4.005

ISSN : 2249-2976

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest. U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241
(Peer Reviewed)

Year : 8
Issue : 32(iii)
Apr-Jun 2019
www.pramanaresearchjournal.com

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

Pramāna
International Refereed
UGC List No.41241
Impact Factor : 4.005
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-8, Issue-32(iii)(Apr.-Jun. 2019) (Page No. 624-628)

'करूण रस' : महर्षि बाल्मीकि एवं महाकवि भवभूति के सन्दर्भ में

डॉ. रणधीर कौशिक (उपाचार्य)
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर (पंजाब)

शोध-आलेख सार

उपजीव्य काव्य के प्रणेता महर्षि बाल्मीकि एवं करूणा के अवतार महाकवि भवभूति इस साहित्य के दो अनमोल रत्न है। सामान्य रूप से तो संस्कृत साहित्य की प्रत्येक रचना में रसों का आधिपत्य है परन्तु महर्षि बाल्मीकि की रामायण एवं भवभूति की उत्तररामचरित करूणा प्रधान रचनाऐं है। वैसे तो करूण रस प्रत्येक रचना में कहीं अंगी रूप में तो कहीं प्रधान रूप में मान्य रहता है परन्तु रामायण में राम और सीता की, महाभारत में युधिष्ठर और घृतराष्ट्र की नैषधचरित में हंस की, रधुवंश महाकाव्य में राजा अज की मेघदूत में यक्ष-यक्षिणी की तथा उतर राम चरित में जानकी एवं राम की करूण वेदना काव्यों में करूण रस का संचार करती है।

मुख्य-शब्द : करुण रस, करुण वेदना, श्रृंगार रस, छद्म नीति, विरहव्यथा ।

संस्कृत साहित्य विश्व की अनमोल निधि है, उपजीव्य काव्य के प्रणेता महर्षि बाल्मीकि एवं करूणा के अवतार महाकवि भवभूति इस साहित्य के दो अनमोल रत्न है। सामान्य रूप से तो संस्कृत साहित्य की प्रत्येक रचना में रसों का आधिपत्य है परन्तु महर्षि बाल्मीकि की रामायण एवं भवभूति की उत्तररामचरित करूणा प्रधान रचनाऐं है। वैसे तो करूण रस प्रत्येक रचना में कहीं अंगी रूप में तो कहीं प्रधान रूप में मान्य रहता है परन्तु रामायण में राम और सीता की, महाभारत में युधिष्ठर और घृतराष्ट्र की नैषधचरित में हंस की, रधुवंश महाकाव्य में राजा अज की मेघदूत में यक्ष-यक्षिणी की तथा उतर राम चरित में जानकी एवं राम की करूण वेदना काव्यों में करूण रस का संचार करती है।

आदि महाकाव्य रामायण का तो प्रारम्भ ही करूणा से होता है। बाल्मीकि जी ने संयोगवश तमसा नदी के तट पर व्याध द्वारा काम मोहित क्रौञ्च नर पक्षी पर चलाये गये बाण से घायल जमीन पर गिरे हुए पक्षी को देखकर उनका मन द्रवित हो गया और उनके शोक सत्तप्त मन में करूणा का समावेश हो गया, मादा कौञ्ची के करूण रूदन से महर्षि के मुख से अनायास ही एक श्लोक प्रस्फुटित हो गया:-

मा निषादः प्रतिष्ठां त्वंगमः शाश्वतीः समा।
यत क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काम मोहितम्।।[1]

अर्थात् हे व्याध तेरे कुल की प्रतिष्ठा न हो, तुम्हे लम्बे समय तक शान्ति प्राप्त न हो, क्योंकि तुमने काम में मग्न क्रोञ्च पक्षी के जोड़े में से एक का वध कर दिया। इस प्रकार महर्षि का शोक श्लोक के रूप में उपस्थित हो गया। 'शोकः श्लोकस्त्वमागतः'।[2] इस घटना को काव्य सृष्टि का मूल माना जाता है। साहित्य

समाज का दर्पण होता है और इसके निर्माण के लिए हृदय का रसाविष्ट होना आवश्यक होता है क्योंकि रसाविष्ट हृदय होने पर ही कविता का उद्‌गम होता है। काव्य अन्तश्चेतना की बाह्य अभिव्यक्ति है। जो हृदय स्वत: किसी भाव का अनुभव नही करता वह किसी भी दशा में दूसरे के उपर उस भाव का प्रकटीकरण नहीं कर सकता इसी कारण को क्रोञ्च वद्य की घटना को इस महाकाव्य का मूल माना जाता है। इसका प्रमाण हमें उपनिषदों आदि ग्रन्थों में भी मिलता है, तदन्तर भरत भूनि को सैदान्तिक दृष्टि से रस सिद्वान्त का आचार्य माना जाता हैं। महा कवि कालिदास ने ही इसी तथ्य की अभिव्यक्ति की है वे भी महर्षि के शोक को श्लोक रूप में ही परिणत होना मानते हैं।[3] इन्ही सूत्रों का अनुसरण करके आनन्दवर्धन ने प्रतीयमान आर्थ के सामान्य रूप में ही काव्य में मुख्य होने पर भी रस को काव्य की आत्मा के रूप में स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है। उनके अनुसार -

काव्यस्यात्मा एवार्थ स्तथा चादिकेव पुरा।[4]
क्रोञ्च द्वन्द्व वियोगोत्य: शोक: श्लोकत्वमागत:।।

आनन्दवर्धन ने भी स्पष्टत: करूण को ही रामायण का मुख्य रस कहा हैं। इसका आरम्भ ही करूणा से होता हैं तथा राम के सामने सीता के पृथ्वी के भीतर अन्तर्धान होने के दृश्य से रामायण का अन्त भी करूणा से ही होता है। आनन्दवर्धन आगे कहते है:-

''रामायाणो हि करूणो रस: स्वयंमदिकबिना सूचित: शोक: श्लोकत्वभागता:, इत्येववादिना। निर्व्यूढ़श्य स एवं सीता८८न्त्यन्त वियोगपर्यन्तमेव स्वप्रबन्धमुपरचयता।।[5]

बाल्मीकि रामायण के रस के विषय में संस्कृत साहित्य के मनीषियों ने एक स्वर में करूण रस को प्रधानता दी है। जिसमें प्रारम्भ में ही रामचन्द्र जी का वनवास दशरथ मरण, राम-भरत मिलनं, प्रजा का राम के बिना दु:खी होना, सीता वियोग, लक्ष्मण को शक्तिघात् एवं युद्ध काण्ड में भी करूणा का ही संचार देखने को मिलता हैं।

श्री राम का हृदय तो करूणा से ही भरा हुआ है चाहे वह पिता की मृत्यु के समय हो, चाहे मित्रों एवं भाइयों पर विपति के समय हो तथा चाहे सामान्य प्रजा जनों का दु:ख हेा राम दु:खी हो जाते है। राम सीता के वियोग में बहुत दु:खी होते है क्योंकि वे सोचते है कि विपति के समय वे अपनी निर्बल पत्नी की रक्षा नहीं कर पाये, वे ये भी सोचते है कि सीता के नष्ट होने पर राम के धर्म का पालन कैसे होगा, उनके पति प्रेम से उनका मन सन्तप्त हो रहा है।[6]

लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम के मुख से भ्रातृ प्रेम के जो उद्‌गार निकले है, वो करूणा की पराकाष्ठा को दर्शाते हैं। श्रीराम कहते है कि यदि मनुष्य चाहे तो एक देश के बाद दूसरे देश में उसे विवाह योग्य स्त्रीयां भी मिल जाती है, प्रत्येक देश में मित्र भी मिल सकते है: परन्तु ऐसा कोई देश में नहीं देखता जहां सहोदर भ्राता मिल सके।[7] इस प्रकार श्री राम लक्ष्मण की मूर्छावस्था में जो विलाप करते हैं वह अत्यन्त वेदना पूर्ण है।

रावण की मृत्यु के पश्चात् राम ने सीता के चरित्र की विशुद्धि को सामान्य जनता के सामने प्रकट करने के लिए अनेक कटु वचन कहे। उन वचनों के उत्तर में सीता के वचन इतने मर्म स्पर्शी है कि कोई भी आसूं बहाने से नहीं रूक सकता। सीता जी कहती है कि मनुष्य उसी वस्तु के लिए उत्तरदायी हो सकता है जिस पर उसका अधिकार है, मैं अपने ह्रदय की स्वामिनी हूँ वह सदा आपके चिन्तन में निरत रहता है, अंगों पर मेरा काबू नहीं है, वे पराधीन ठहरे, रावण ने बलपूर्वक उनका स्पर्श कर लिया तो इसमें मेरा क्या अपराध है।[8] इस प्रकार मेरे चरित्र पर लाञ्छन लगाना कदापि उचित नही है। अत: अनेकों स्थानों पर बाल्मीकि जी हमें करूणा में डुबो देते है, कदम-कदम पर उन्होनें रामायण में करूणा का संचार किया है, इसलिये हम कह सकते है कि

रामायण महाकाव्य पूर्ण करूणा प्रधान होने से इसमें करूण रस की ही प्रधानता दिखलाई पड़ती है, यही इस महाकाव्य का प्रधान रस है।

महर्षि बाल्मीकि के करूण रस में महाकवि भवभूति ने जो ह्रदयविदारक करूणा का संचार किया है वह तो अतुलनीय है, अलौकिक है। वैसे तो उन्होने उपने तीनों ही नाटकों (काव्यों) में करूण रस का संचार किया है परन्तु भवभूति ने जो करूणा का अनुपम दृश्य उतर राम चरित्र में किया है वह अन्यत्र नहीं मिलता। वस्तुत करूण रस में भवभूति का वही स्थान है जो श्रृंगार रस में कालिदास का, भवभूति ने उतर राम चरित्र में स्वयं कहा है कि सभी रस करूण रस के ही स्पान्तर है। यही रस ही एक मात्र मुख्य रस है। जिस प्रकार एक ही समुद्र की जल कभी भंवर के रूप, कभी बुद्बुदों के रूप को तथा कभी तरंगों के रूप को धारण कर लेता है किन्तु वास्तव में वह जल ही है इसी प्रकार निमित भेद से करूण रस रसों के रूप को धारण कर लेता है।[9] मानव की अन्त स्थिति का जितना सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विशलेषण भवभूति ने किया है वह हमें दुलर्भ दिखाई देता है। जगत् की नश्वरता को देखकर भवभूति के कारूण्य की धारा बह निकलती है, उन्होने उत्तर राम चरित में राम कथा मुख्य रूप से सीता परित्याग को लेकर अपनी भावनाओं को मूर्तरूप दिया है, उनकी वाणी में इतना बल है कि वृक्ष वनस्पति ही नहीं अपितु पर्वतों को भी रूला देने की क्षमता रखते हैं। नीरस व्यक्ति भी उतर राम चाति को पढ़कर अवश्य ही आंसूओं से आप्लावित हो जायेगा।

सीता हरण के बाद उनके वियोग में श्रीराम की वह दयनीय स्थिति थी कि पत्थर भी रो देते थे और वज्र का भी हृदय फट जाता था -

जैसा कि कहा गया है -

अथेदं रक्षोभिः कनक हरिणच्छद्मविधिना।
तथा वृतं पापैर्व्ययति यथा क्षालितमपि।
जनस्थाने शरन्ये विकलंकरणैरार्य चरितैः
अपि ग्रीवा रोदित्यपिदलति वज्रस्य ह्रदयम्।।[10]

अर्थात् रावण के द्वारा छद्म नीति का प्रयोग करके सीता का हरण किया गया, जो प्रतिकार किये जाने पर भी अभी तक व्यथित कर रहा है, सीता से शून्य इस जनस्थान में विकल बना देने वाले मूर्च्छा आदि व्यापार से पत्थर भी रो रहा है और वज्र का ह्रदय भी द्रवित हो रहा है।

राम अपने आप को ही कोसते हुए क्रहते हैं कि दुख का अनुभव करने के लिये ही राम ने जन्म लिया है। मर्मस्थल पर प्रहार करने वाले प्राण मेरे शरीर में मानो वज्र भी कील के समान गड़े हुए है।[11] सीता की अनुपस्थिति में राम इतना दुःखी होते है कि पीड़ा असहनीय हो जाती है। राम कहते है कि ह्रदय शोकजन्य पीड़ा के कारण विदीर्ण हो रहा है परन्तु दो भागों में नहीं बंट रहा, व्याकुल शरीर मुर्छित होता है परन्तु चेतना को नहीं छोड़ता। आंतरिक दाह शरीर को जला रहा है परन्तु भस्मसात नहीं करता और मर्मस्थल को विर्दीण करने वाला भाग्य प्रहार करता है परन्तु जीवन को सर्वथा नष्ट नहीं करता अर्थात राम कहना चाहते है कि इस कष्ट भय जीवन से तो मृत्यु ही अच्छी है।[12] भवभूति जानते है कि शोकाति रेक की दशा मे एकान्त में जी भर के रोने से चित हल्का हो जाता है। जिस प्रकार बढ़े हुए पानी के निकाल देने से तालाब का शोधन हो जाता है, इसी कारण राम के मन को हल्का करने के लिये उनकी अश्रुधारा निकालते है, कहा भी है - पुरोत्पीड़े तड़ागस्य परिवाहः प्रतिक्रिया[13] ओर भी कहते हैं पीडा से दुःखी होकर विक्षिप्त से राम का बार-बार मूर्छित होना और सीता को उन्हे देखकर व्याकुलता करूण रस को चरम सीमा पर पहुंचा देता है। परित्यक्ता सीता शोक सन्तप्त हे वह करूणा की मूर्ति दिखाई देती है वह मानो शरीरधारिणी विरहव्यथा है।[14] सीता के परित्याग से राम के हृदय की वही अवस्था थी जो पुरपाक से किसी धातु की होती है अर्थात गम्भीरता के कारण प्रकट होने वाला एवं हृदय के अन्दर छिपी हुई प्रगाढ़ वेदना से युक्त राम का शोक पुटपाक के समान है।[15] जिसमें व्यक्ति अन्दर ही अन्दर घुटता रहता है और वह दुःख फोड़ा बन जाता है। राम सीता को याद करके कहते है कि

हे सीता मेरा हृदय फट रहा है, अंग शिथिल हो रहे हैं। संसार सूना हो गया है, मेरा हृदय जल रहा है, घोर अन्धकार में मेरी आत्मा डूब सी रही है, मूर्छा मुझे चारों ओर से घेर रही है, मैं अभागा अब क्या करूं[16] अर्थात् मेरा शोक इतना बढ़ गया है कि मुझे चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई दे रहा है।

इस प्रकार भवभूति ने उत्तररामचरित में करूण रस की जो मन्दाकिनी प्रवाहित की है, वह वास्तव में संस्कृत साहित्य की एक अभूतपूर्व एवं अमूल्य नीधि है। इस मन्दाकिनी की अविरल धारा में सीता का परित्याग जन्य मालिन्य सदा के लिये धुल जाता है और दो हृदयों का सच्चा अनुसंधान हो जाता है। भवभूति के करूण रस का यही प्रभाव है कि जड़ भी चेतन और चेतन भी जड़ हो जाते है कहा भी है-

जड़ानामपि चैतन्य भवभूतेरमूदगिरा।
ग्रावाप्यरोहति पार्वत्या हसतः स्मस्तनावपि।।[17]

वास्तव में उतर राम चरित का सारा कथानक और वातावरण करूण रस से व्याप्त है। यद्यपि बाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भरत आदि ने भी करूण रस का वर्णन किया है, पर इस क्षेत्र में कोई भी कवि भवभूति की बराबरी नहीं कर सकता। अतः ''कारूण्यं भवभूतिरेव तनुते''यह पंक्ति भवभूति की करूणा को सार्थकता प्रदान करती है। इस लिये अनेक विद्धानों ने भवभूति को करूण रस प्रधान कवि के रूप में कालिदास से भी श्रेष्ठ माना है। वैसे तो भवभूति ने बाल्मीकि तथा कालिदास दोनों के काव्यों का गम्भीर अनुशीलन किया है बाल्मीकि के करूण रस को व्यापकता भवभूति ने ही है। करूणा के क्षेत्र में भवभूति बाल्मीकि से कहीं आगे निकल गये। महाकवि राजशेखर ने तो भवभूति का बाल्मीकि का ही नवीन अवतार माना है।[18]

इस प्रकार हम कह सकते है कि बाल्मीकि के मुख से अचानक निकले हुए करूण शब्दों ने रामायण मे करूणा का ही संचार किया है, बाल्मीकि जी ने रामायण में सभी रसों का समन्वय दिखलाया है यहां उन्होनें करूण रस के साथ-साथ वीर रस को भी उतना ही महत्व दिया है परन्तु महाकवि भवभूति ने तो करूण रस को करूणा में परिवर्तित कर दिया, सीता के वियोग में राम के माध्यम से कवि ने जो शोक विहल राम की पीड़ा को दर्शाया है उसे देखकर सामान्य जन तो क्या पशु-पक्षी, पेड़ पौधे और तो और पत्थर भी रोए हैं और भवभूति ने बज्र के हृदय को भी विदीर्ण होते हुए दिखलाया है। इन्हीं करूण उक्तियों की चोट से क्षुब्ध होकर गोवर्धनाचार्य ने भवभूति ने भारती को भूधर की कन्या बतलाया है। प्यारी पुत्री का रूदन सुनकर किस पिता का हृदय द्रवित होकर आसुओं के रूप में नहीं वह निकलेगा।

एको रसः करूण एवं निमितभेदात् इस कथन का मूल हमें बाल्मीकि के अन्दर ही खोजना चाहिए।

संदर्भ----------

1. रामायण, बालकाण्ड, 2-15
2. समाक्षरैक्षतुर्भिर्यः पादैर्गीतो महर्षिणा।
   सोडनुव्याहरणाद्भूयः शोकः श्लोकत्वमागतः।। रामायण - 1/2/40
3. रघुवंश : 14/70
4. आन्दवर्धन - ध्वन्यलोक - 1/5
5. आन्दवर्धन - ध्वन्यलोक - उद्योत 4, पृ. 237
6. इयं सा यत्कृते रामः चतुर्भिः परितप्यते, कारूणयेनानृशंस्येन शोकेनमदनेन च। (बा. बा. 1/15/48, 49)
   स्त्री प्रणष्टेति कारूण्यादाश्रितेस्यानृशस्यतः, पत्नीनष्टेति शोकेन प्रियेति मदनेन च,
7. देशे-2 कलरात्रि देशे च बान्धवाः। तं तु देशं न पश्यामि यत्रभ्राता सहोदरा।
8. मदधीनं तु यत्तन्मे हृदयं स्वयि वतेर्त।
   पराधीनेषु गात्रेषु किं करिष्यामनीश्वराः। रामायण 1/47
9. एको रसः करूण एवं निमित मेदात्, भिन्नः पृथक् पृथगिवश्रयते विवर्तान।

आवर्त बुद्बुदतरंगमयान विकारानम्भो, यथा सलिलमेव हितत्समस्तम। उत्तरराम चरित 3.47

10. उतर राम चरित - 1-28.
11. उतर राम चरित - 1-47.
12. दलति हृदयं शोकोद्वेगाद द्धिधा तु न भिद्यते।
वहति विकल: कायो मोहं न मुञ्चति चेतना।
ज्वलयति तनुमन्तर्दाह: करोति न भस्मसात्।
प्रहरति विधमर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्।। उतरराम चरित 3-31
13. उपरिवत्
14. करूणस्य मूर्तिरथवा शरीरिर्णा
विरह व्यथेव वनमेति जानकी। उतरराम चरित
15. अनिर्भिन्नो गम्भीरत्वादन्तगुर्ढ़धन व्यथ:।
पुटपाक प्रतीकाशो रामस्य करूणो रस:।। उतरराम चरित 3-1
16. हा हा देवि: स्फुटति हृदयं ध्वंसतेदेहवन्ध:।
शून्यं मन्ये जगदविरलज्वालमन्तर्ज्वालामि।
सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मण्जतीवान्तरात्मा
विश्वड्मोह: स्थगयति कथंमन्दभाग्य करोमिं। उतरराम चरित 3/38
17. बलदेव उपाध्याय-संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ.556
18. बलदेव उपाध्याय-संस्कृत साहित्य का इतिहास। पृ. 565

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)
ISSN 2349-638x (Peer Review and Indexed Journal) IMPACT FACTOR 7.149
Devgiri Nagar , Ambejogai Road,Latur
Tq. Latur, Dis. Latur Pincode 413512
State Maharashtra, India
Email ID's: editor@aiirjournal.com , aiirpramod@gmail.com
Website: www.aiirjournal.com

Certificate of Publication

Awarded to

Dr. HARPINDER KAUR

&

SEEMA GUR

For Contributing Research Paper

" ASSESSING THE ROLE OF ARYA SAMAJ IN EDUCATIONAL EMPOWERMENT OF WOMEN IN PUNJAB "

In the

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Online Monthly Peer Review & Indexed Journal with ISSN 2349-638x (Impact factor 7.149)

for the month of **June 2021 Volume: VIII Issue: VI**

Pramod Prakashrao Tandale

(Chief Editor)

Sudhi
today at 9:37 am

37
39

21-22

Aadhar Social Research & Development Training Institute, Amravati.

CERTIFICATE

ISSN 2278-9308

Impact Factor 7.675 (SJIF)

This is to certify that Prof./Dr./Mr./Mrs./Ms. Sudhi Gandhi[1], Dr. Neelam Sharma[2]

Of [1]Research scholar, Dept of History, Tantia University, SGNR [2]Research supervisor, Dept of History Tantia University, SGNR

has published a paper on An Analytical Approach to1935 ACT In Constitution

Peer Reviewed International Research Journal B.Aadhar Issue no.294. Published on Dated

01 June - 2021.

Prof. Virag Gawande
Director
Aadhar Social Research &
Development Training Institute, Amravati

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वैदिक संस्कृति में धर्म का स्वरूपः एक अध्ययन

डॉ. रणधीर कौशिक, (सह आचाय)
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर। (पंजाब)

भारतीय मनीषियों ने मनुष्य के जीवन को आध्यात्मिक, भौतिक एवं नैतिक दृष्टि से उन्नत करने के लिये अनेकों सिद्वान्तों की व्याख्या की है। जीवन में आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख दोनों का अहम् स्थान है। इन दोनों का समन्वित रूप ही जीवन को समुन्नत करता है। पुरूषार्थ मनुष्य वह आधार है जिसके माध्यम से वह अपना जीवन जीता है। पुरूषार्थ से व्यक्ति के जीवन का विकास तो होता ही है साथ–साथ समाज का विकास भी होता है। भारतीय संस्कृति में पुरूषार्थ चतुष्टय में सबसे अधिक महत्व धर्म और मोक्ष को ही दिया गया है। परन्तु सर्व प्रथम भारतीय संस्कृति का मूल आधार धर्म को ही माना गया है। व्यक्ति धर्म का अनुसरण करता हुआ ही अपने मुख्य लक्ष्य तक पहुँचता है।

भारतीय परम्परा में धर्म का महत्व विश्व विख्यात है। सामान्य रूप से व्यक्ति को यह सिद्वान्त मात्र ही प्रतीत होता है परन्तु वास्तव में यह हमारे सर्वांगिंण विकास का आधार है। इसके बिना हम व्यक्तित्व विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते।

यहां पर सर्वप्रथम प्रश्न उठता है कि यह धर्म क्या है? यहां भारतीय परम्परा के अनुसार 'धर्म' शब्द की व्युत्पति धृ धातु से हुई है जिसका सामान्य अर्थ है धारण करना।1 प्राचीन भारतीय धर्म ग्रन्थों में धर्म के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन हुआ है।

सर्व प्रथम ध्रियते लोक अनेन इति धर्मः[2] अर्थात् जिसे लोक या संसार को धारण किया जाये वह धर्म है। दूसरे अर्थो में धरति धारयति का लोकः इति धर्मः[3] अर्थात् जो लोक को धारण करता है, वह धर्म है। अन्य अर्थ में हम कह सकते है – ध्रियते यः य धर्मः[4] अर्थात् जो दूसरों से धारण किया जाये वह धर्म है। अमर कोश के अनुसार भी धर्म शब्द के अनेक अर्थ है। जैसे सुकृत, पुण्य, न्याय, स्वभाव, आचार आदि5 आचार्य यास्क ने धर्म शब्द का अर्थ नियम बताया है।6 अर्थात् जिस नियम ने इस लोक या संसार का धारण कर रखा है वह धर्म है।

वैदिक संहिताओं में 'ऋत' को ही धर्म माना गया है वही सत्य है, इसी को नैतिक व्यवस्था का पर्याय बताया गया है, तभी तो हम कहते है कि 'वेदोऽखिलो धर्म मूलम अर्थात् वेद ही धर्म के प्रतिपादक है, इन्ही से सुख की प्राप्ति होती है जैसे कि कहा भी गया है कि धर्मः सुखस्यमूलम अर्थात् धर्म ही सुख का आधार है। भगवान ने वेदों के आधार पर ही सृष्टि की रचना की है तथा भारत की संस्कृति वेदमूलक है, वेद ही धर्म का मूल है। वेद मूलक स्मृति, सदाचार ही धर्म में प्रमाण है। महाभारत के अनुशासन पर्व में आचार अथवा सदाचार को धम का लक्षण माना गया है तथा आचार से ही धर्म का फलीभूत होना बताया है। कहां भी है–

आचार लक्षणों धर्मः सत्तश्चारित्रलक्षणः।7

साधूनां च यथा वृतमेत्दाचारलक्षणम्।।

धर्म के अनुपालन में ही समस्त मानवता का कल्याण निहित है। नैतिक एवं उत्तम आचरण ही धर्म के आधार स्तम्भ है। धर्म एक मर्यादा है जो अर्थ एवं काम को सीमित परिधि में निबद्ध कर व्यक्ति को पथभ्रष्ट होने से रोकती है एवं समय–2 पर व्यक्ति के वास्तविक कर्त्तव्य का बोध कराती है। प्राचीन काल में सम्पूर्ण सामाजिक एवं नैतिक अवधारण्णा से धर्म में मानवीय कल्याण की भावना निहित थी। महाभारत के शान्ति पर्व में कहा गया है जिन सिद्वान्तों क अनुसार व्यक्ति अपना दैनिक जीवन व्यतीत करता है जिसके द्वारा सामाजिक बन्धनों की स्थापना होती है वही धर्म है। यही जीवन का सत्य है एवं हमारी प्रकृति को निर्धारित करने वाली शक्ति है। वेद व्यास जी और भी लिखते है– दुष्ट मनुष्य के दर्शन से, स्पर्श से, उनके साथ वातालाप करने से तथा एक आसन पर बैठने से धार्मिक आचार नष्ट हो जाते है तथा मनुष्य किसी कार्य में सफल नहीं होता है8 और भी कहते है – धर्म एवं हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः। तस्माद्वर्म न त्यजामि मा नो धर्मो हतोऽवधीत।9 अर्थात् धर्म ही आहत् होने पर मनुष्य को मारता है और वही पालन किया जाता हुआ रक्षा करता है अतः हमें धर्म को नहीं त्यागना चाहिये नहीं तो धर्म ही हमारा वध कर डालेगा।

आगे भी कहते हैं कि धारण करने से लोग इसको धर्म कहते है धर्म प्रजा को धारण करता है, जो धारणा के साथ रहे वही धर्म है।[10] श्रीमद्भगवद् में भी स्पष्ट कहा है– वेदप्रर्णिहतो धर्मो हयधर्मस्तद्विपर्ययः11 अर्थात् वेद में कहा हुआ ही धर्म है उसके विपरीत अधर्म है। भगवान ने ही धर्म रूपी नियमको बनाया है। वे स्वयं ही उसी पर नियंत्रण रखते है या रखवाते है, यहां तक कि वे धर्म की हानि को देखकर स्वयं अवतार धारण करते हैं जैसा कि उन्होनें गीता में डके की चोट पर कहा है कि हे अर्जुन जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्वि होती है तब–तब मैं इस सृष्टि का सृजन करने के लिये अवतार धारण करता हूँ। साधुओं, सन्त, महात्माओं की रक्षा तथा दुष्टों का विनाश करने के लिये तथा धर्म को पुनः स्थापना हेतु

मैं इन तीनों कामों के लिये प्रत्येक युग में प्रकट होता हूँ।[12] इसलिये हम कह सकते है कि धर्म की रक्षा करने वाले, धर्म को बनाने वाले और समस्त धर्मों के आधार स्वयं भगवान ही है। रामायण के अयोध्या काण्ड में भी महर्षि बाल्मीकि ने धर्म को सत्य मान कर उसको ईश्वर स्वरूप माना है, उनके अनुसार जगत् में सत्य ही ईश्वर है, सदा सत्य के आधार पर ही धर्म की स्थिति रहती है, सत्य ही सबकी जड़ है, सत्य से बढ़कर कोई उत्तम गति नहीं है। दान, यज्ञ, होम, तपस्या और वेद इन सब का आश्रय धर्म है, इसलिये सबको सत्य स्वरूप धर्म का आचरण करना चाहिये।[13] जैसा कि कहा भी है–

सत्यमेवेश्वरो लोकेसत्ये धर्मः सदाऽऽश्रितः।
सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम्।।
दतंयिष्टं हुतं चैव तप्तानि च तंपासि च।
वेदाः सत्यप्रतिष्ठानास्तस्मात्सत्यपरो भवेत।।

रामायण में तो श्री राम ही साक्षात् धर्म के विग्रह स्वरूप हैं।[14] श्रीराम के राज्य में प्रायः सभी मनुष्य परस्पर प्रेम करने वाले तथा नोति, धर्म, सदाचार और ईष्वर की भक्ति में तत्पर रहकर अपने–अपने धर्म का पालन करने वाले थे। वैशेषिक दर्शन में भी सदाचार को ही धर्म का स्वरूप माना है, वह लोक एवं परलोक में कल्याण करने वाला जो अनादि काल से ही चला आ रहा है, उसी से मनुष्य का कल्याण होता है। उसी से लौकिक उन्नति तथा पार लौकिक कल्याण की प्राप्ति होती है।[15]

याज्ञवल्क्य ऋृषि धर्म के विषय में बताते हुए कहत हैं कि मनुष्य के जो प्रमुख कर्तव्य हैं वही उसके धर्म हैं। इनके अनुसार –

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
दानं दया दमः क्षान्ति सर्वेषां धर्म साधनम्।।[16]

अर्थात् किसी भी प्राणी को पीड़ा न पहुँचाना, सच बोलना, बिना दिया हुआ कुछ न लेना अर्थात् चोरो न करना, शरीर और मन की शुद्धि इन्द्रियों को वश में लाना, यथाशक्ति दान देना, विपत्ति में पड़े हुये की रक्षा करना, अपने मन को वश में रखना, अपना उपकार हो जाने पर भी क्रोध न प्रकट करना, ये सब धर्म के लक्षण हैं, अन्य स्मृतिकारों ने भी धर्म के इन्हीं लक्षणों को स्वीकार किया है।

मनु महाराज ने धर्म की विस्तृत व्याख्या की है उन्होने धर्म का मूल वेदों को माना है क्यों भारतीय संस्कृति वेदमूलक है। कहा भी है–

वेदो ऽखिलो धर्म मूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्रैव साधुनामात्मनस्तुष्टिरेव च।।17

अर्थात् सम्पूर्ण धर्म का मूल वेद है, वेदों को जानने वालों की स्मृति तथा शील अर्थात् ब्रह्मण्यता, देव–पितृभक्ति, सौम्यता, अपरोपतापिता, अनसूयता, मृदुता, अपारूष्य, मित्रता, प्रियवादिता, कृतज्ञता, शरण्यता, कारूण्य और प्रशक्ति ये तेरह प्रकार का शील तथा वेदों का आचरण तथा वेद के वैकल्पिक विषयों में सज्जन लोगों की संतुष्टि ही धर्म है। सामान्य रूप से मनुस्मृति में धर्म के चार स्त्रोत बताये गये हैं – वेद, स्मृति, सदाचार एवं आत्म संतुष्टि। व्यक्ति क जीवन को सम्पूर्ण बनाने में धर्म की भूमिका अग्रणी होती है, धर्म व्यक्ति के कर्तव्यों को निर्धारित करता है। यहां धर्म के निर्वहण में नैतिकता को महत्व पूर्ण स्थान दिया गया है।[18] धर्म युग युगान्तर से चली आ रही परम्परा का पालन पोषण करता है। प्राचीन कालीन व्यवस्थाकारों ने ऐसे विधानों या नियमों का सृजन किया है जो सभी धर्म द्वारा ही संचालित होते थे तथा उनमें मुख्य रूप से मानवीय कल्याण की भावना निहित होती थी। इसी कारण से ही मनुष्य अपने अन्दर पवित्र भावना रखकर सद्गुणों का विकास करके धर्म के स्वरूप को बड़ी ही आसानी के साथ धारण कर सकता था। महाराज मनु ने आगे और भी सुन्दर वर्णन करते हुए कहा है कि धर्म की उत्पति सत्य से होती है, दया और दान से वह बढ़ता है, क्षमा में वह निवास करता है तथा कोध से धर्म का नाश हो जाता है।[19] मनु जी आगे भी कहते है–

श्रुति स्मृत्युदितं धर्मनुतिष्ठन्हिमानवः।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्।।[20]

अर्थात् श्रुति एवं स्मृति में कहे हुए धर्म का पालन करता हुआ मनुष्य इस लोक में यश को पाता है तथा मरकर परलोक में उत्तम सुख या मोक्ष को प्राप्त होता है। मनु जी धर्म को मनुष्य का सबस उत्तम मित्र माना है, उनके अनुसार एक धर्म ही ऐसा मित्र है जो मरने पर भी जीव के साथ जाता है और सभी तो शरीर के नाश के साथ ही छोड़कर चले जाते है। साथ ही शास्त्र भी यही कहता है कि मनुष्य यदि अपने धर्म का पालन करता हुआ मरता है, तो वह श्रेष्ठ है, पर धर्म तो सदैव भय को देने वाला है। सभी प्राणियों का वही परम धर्म है जिसन भगवान में निष्काम, अटल और अचल भक्ति हो तथा जिसके करने से व्यक्ति की अन्तर्रात्मा प्रसन्न हो, तभी तो कहा है जहां धर्म होता है, वहीं विजय होती है और भी कहा है कि –

धर्मेण हन्यते व्याधिर्धमेण हन्यतेग्रहः
धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः।।[21]

अर्थात् धर्म के धारण करने से सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते है, धर्म से ग्रहों को पीड़ा मिट जाती है, धर्म ही शत्रु का नाश करता है, जहां धर्म होता है, वही जय होनो हैं। मनु महाराज तो माता पिता एवं गुरू की एवं अतिथि की सेवा करने वाले को ही धर्मानुग्राही मानते हैं, वे पिता को गार्हपत्य अग्नि माता को दाक्षिण्य अग्नि एवं गुरू को आहवानीय अग्नि मानकर इनको सर्वश्रेष्ठ

मानते हुए कहते है कि व ही तीन लोक है, वे ही तीनों आश्रम है, वे ही तीन अग्नि हैं, जिसने इन तीनों का आदर किया है, उन्होनें ही सब धर्मों का आदर किया है तथा जिसने इनका आदर नहीं किया उसके सारे धर्म नष्ट हो जाते है। इन तीनों की सेवा से ही व्यक्ति के सभी कर्तव्य कर्म पूर्ण हो जाते है। यही साक्षात् परम धर्म है। इसके अतिरिक्त अन्य सब धर्म गौण (उपधर्म) कहे जाते है।[22] अन्त में मनु महाराज कहते ह धर्म के अन्तगत सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, इन्द्रिय निग्रह, क्षमा, श्रद्धा, मीठी वाणी, शील, अतिथि सेवा, माता पिता की सेवा, गुरू की सेवा, बड़ों का आदर सत्कार, सत्य वदं, धर्म चर इस प्रकार ये धर्म के प्रमुख कर्तव्य या लक्षण हैं, जो इनका पालन करता है धर्म उसकी रक्षा करता है तथा जो इनका पालन नहीं करता धर्म उसका हनन कर देता है। कहा भी है – धर्म एवं हतोहन्ति धर्मो रक्षतिः।

आज के आधुनिक चकाचौंध में यदि सबसे ज्यादा हानि हुई है तो वह धर्म की हानि हुई है, आज धर्म भी राजनीति का एक साधन हो गया है, राजनीतिज्ञों ने धर्म की परिभाषा ही बदल दो है, उन्होनें मनुष्य को मनुष्य से धर्म के नाम पर लड़ाकर अपना ही स्वार्थ सिद्ध किया है उन्होनें सम्प्रदायों को धर्म में बदल दिया है। उन्होनें समाज को हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि पता नहीं कितने धर्म एवं सम्प्रदायों में बांट दिया है। आज धर्म के नाम पर जितनी सभायें, संगठन या आन्दोनल होते है वे अपना राजनैतिक अधिकार क्षेत्र ही विस्तृत करत हैं। आज धर्म भी दूसरे साधनों की तरह अर्थ (धन कमाने) का साधन बन गया है। धर्म परिवर्तन कराया जाता है, वह भी इस अभिलाषा के साथ कि हमारे धर्म की जनसंख्या अधिक हो तथा इससे अधिकाधिक आर्थिक लाभ लिया जा सके। आज सम्पूर्ण विश्व अधर्मियों के हाथों की कठपुतलीयां बना हुआ है, चारो और राजनीतिज्ञ धर्म के ठेकेदारों से मिलकर धर्म के नाम पर दंगा फसाद करवा रहे है। धर्म को अन्तमुखी की अपेक्षा बाहय दिखाने का साधन बना दिया है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म को श्रेष्ठ बता रहा है तथा दूसरे के धर्म को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते है। आज कुछ दुष्ट प्रवृति के लोग बड़े गर्व से धर्म से मानव, जाति को मुक्त कराने की बात करत है तथा कुछ मूर्ख प्राणी यह कहकर प्रसन्न होते है कि मैं धर्म रूपी रोग से मुक्त हो चुका हूँ, परन्तु इसका परिणाम क्या होगा वे मूर्ख नहीं सोचते क्योंकि अग्नि यदि अपने धर्म का त्याग करेगी तो वह भस्म बन जायेगी यदि मनुष्य अपने धर्म का त्याग करता है तो वह पशु बन जाता है जैसा कि भर्तृहरि नीतिशतक में कहते है–

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्यलोके भूविभारभूताः मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।[24]

अर्थात् जिसके पास न विद्या है, न तप है, न दान देता है, न ही स्वभाव से अच्छा है, न गुण है तथा जो न ही अपने धर्म का पालन करता है, ऐसे मनुष्य इस लोक में मनुष्य के रूप में पशुओं जैसा आचरण करते है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि सम्पूर्ण शास्त्रों में कहीं भी धर्म को हिन्दू, मुस्लिम, जैन, बौद्व, सिख, ईसाई के नाम तक का उल्लेख नहीं है फिर आज हम धर्म के नाम पर क्यों झगडते है, क्यो एक दूसरे के खून के प्यासे है, कुछ दुष्ट लोगों के बहकावे में आकर क्यों हम अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का अपमान कर रहे है, आज राजनैतिक एवं समाज के ठेकेदारों ने हमेारे सामाजिक ताने बाने को नष्ट भ्रष्ट कर दिया है, आज आवश्यकता है हमें जागने की समाज को प्राचीन संस्कृति से अवगत कराने की। क्योंकि हमारे समाज में धर्म वो नहीं है जो आज हम मान बैठे है बल्कि धर्म वो है जो हमारा राष्ट एवं समाज के प्रति कर्तव्य है, सबसे बड़ा धर्म है, मानवता का, सबसे बड़ा धर्म है राष्ट्र धर्म एवं मानवीय धर्म हमं उसी की रक्षा करनी है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. अमरकोश – पृ.
2. कल्याण – भारतीय संस्कृति के पृ. 369
3. वहीं
4. निबन्ध श्रीराम हिन्दू संस्कृति के मूर्तिमान स्वरूप – पृ. 116 (हिन्दू संस्कृति अंक)
5. अमरकोश – पृ.
6. यास्ककृत निरूस्त – पृ
7. मनुस्मृति– 2/6
8. असतां दर्शनात् स्पशीत् सŒजल्पाच्च सहासनात्।
   धर्माचाराः प्रहीयन्ते सिद्धयत्ति च न मानवाः। महाभारत वनपर्व 12/8
9. वही 3/3/128
10. धारणाद्वर्ममित्याहुधर्मो धारयते प्रजाः। यत् स्याद्वारणा संयुक्त सः धर्म इति निश्चयः। महाभारत, कर्णपर्व 69/58
11. श्रीमद्भागवत – 6/1/44
12. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिभवति भारतः।
    अभ्युथानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्।।
    परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दृष्कृताम
    धर्मसंस्थापनार्थाय संमभवामि युगे–युगे। श्रीमद्भगवदगीता 4/7–8

13. बाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड – 109/13–14
14. वहीं
15. यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्विः सः धर्म।। वेशेषिक दर्शन 1/2
16. याज्ञवल्स्य स्मृति–
17. मनुस्मृति– 2/6
18. वेद स्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियात्मनः।
ऐतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।। मनुस्मृति 2/12
19. सत्याज्जायते, दयया दानेन च वर्धते, क्षमायां तिष्ठति,
क्रोधान्नश्यति। मनुस्मृति वहीं
20. वही. 2/9
21. कल्याणः भारतीय संस्कृतिअंक पृ. 371
22. वही पृ. 372
23. पिता वै गार्हपत्योऽग्निर्माताग्नि दक्षिणः स्मृतः।
गुरूराह्वानोयस्तु साग्नित्रेता गरीयसीः।।
त ऐव ही त्रयोलोकास्त एव त्रय आश्रमाः।
त एव हि त्रयो वेदास्त एवोक्तास्त्रयोऽग्नयः।
सर्वेतस्यधता धर्मा यस्यैते त्रय आदृताः।
अनादृतास्तु यस्यैते सर्वास्तस्याफलाः कियाः।।
त्रिष्वेतेष्वितिकृत्यं हि पुरूषस्य समाप्यते।
एषः धर्मः परः साक्षादुपधर्मोऽन्य उच्यते।। मनुस्मृति 2/230–31, 234–37
24. नीतिशतक श्लोक–15

2020-21 29 (39) (29)

NIU International Journal of Human Rights

A UGC CARE Listed Journal

ISSN : 2394 - 0298

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that

Mona Garg

Research Scholar Department of Commerce Guru kashi University
Talwandi Sabo Bathinda, Punjab, India

for the paper entitled

IDENTIFICATION OF FACTORS INFLUENCING CUSTOMER PERCEPTION ABOUT BRAND EXTENSIONS IN THE RETAIL INDUSTRY: A SURVEY OF THE CONSUMERS OF RETAIL INDUSTRY OF PUNJAB

Vol. **8 (XVI) - 2021**

in

NIU International Journal of Human Rights

UGC Care Group 1

ISSN : 2394 - 0298

NIU INTERNATIONAL JOURNAL OF HUMAN RIGHTS

Editor

2020-21

Journal of Emerging Technologies and Innovative Research

An International Open Access Journal

www.jetir.org | editor@jetir.org

Certificate of Publication

The Board of

Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (ISSN : 2349-5162)

Is hereby awarding this certificate to

Gulshan deep

In recognition of the publication of the paper entitled

Criminalization of Politics in India:Evolution and Causes

Published In JETIR (www.JETIR.org) ISSN UGC Approved (Journal No: 63975) & 5.87 Impact Factor

Published in Volume 7 Issue 10 , October-2020 | Date of Publication: 2020-10-22

Pazia P

EDITOR

EDITOR IN CHIEF

JETIR2010267 Research Paper Weblink http://www.jetir.org/view?paper=JETIR2010267 Registration ID : 302403

(34) (32) 2020-21

JETIR

Journal of Emerging Technologies and Innovative Research

An International Open Access Journal

www.jetir.org | editor@jetir.org

Certificate of Publication

The Board of

Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (ISSN : 2349-5162)

Is hereby awarding this certificate to

Gulshan Deep

In recognition of the publication of the paper entitled

Role of Parliament and Judiciary in curbing the menace of criminalization of Indian Politics

Published In JETIR (www.JETIR.org) ISSN UGC Approved (Journal No: 63975) & 5.87 Impact Factor

Published in Volume 7 Issue 10 , October-2020 | Date of Publication: 2020-10-26

Parisa P

EDITOR

EDITOR IN CHIEF

ISSN 2349-5162

JETIR2010345

Research Paper Weblink http://www.jetir.org/view?paper=JETIR2010345

Registration ID : 302495

2020-21

The International Journal of Analytical and Experimental Modal analysis

An UGC-CARE Approved Group - II Journal

An ISO : 7021 - 2008 Certified Journal

ISSN NO: 0886-9367 / web : http://ijaema.com / e-mail: submitijaema@gmail.com

IJAEMA

Certificate of Publication

This is to certify that the paper entitled

Mathematical Modelling: Estimation of Health Measure on Covid – 19

Authored by :

Seema Singla

From

Department of Mathematics, Guru Kashi University, Bathinda, Punjab, India.

Has been published in

IJAEMA JOURNAL, VOLUME XII, ISSUE XII, DECEMBER- 2020

Michal A. Olszewski Editor-In-Chief
IJAEMA JOURNAL

6.3 IMPACT FACTOR

ISO International Organization for Standardization 7021-2008

http://ijaema.com/

36

2020-21

IAEME Publication

(Publishers of High Quality Peer Reviewed Refereed Scientific, Engineering & Technology, Medicine and Management International Journals)

www.iaeme.com
editor@iaeme.com
iaemedu@gmail.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ENGINEERING AND TECHNOLOGY (IJARET)

Scopus Indexed Journal

www.iaeme.com/ijaret/index.asp

Paper ID: IJARET_12_02_069

Date: 27-February-2021

Certificate of Publication

This is to certify that the research paper entitled "MATHEMATICAL MODELLING ON CORONAVIRUS DISEASE (COVID-19): SEIRD MODEL" authored by "Seema Singla and Vinod Kumar" had been reviewed by the Editorial Board and published in "International Journal of Advanced Research in Engineering and Technology (IJARET), Volume 12, Issue 2, February 2021, pp. 700–704; ISSN Print: 0976-6480 and ISSN Online: 0976-6499; Journal Impact Factor (2020): 10.9475 Calculated by GISI (www.jifactor.com)".

Chief Editor

Design Engineering

ISSN: 0011-9342 | Year 2021
Issue: 9 | Pages: 16745 - 16752

2020-21
(37)

Mathematical Modelling and Medication on Influenza Disease

Seema Singla[1], Madhuchanda Rakshit[2]
Department of Mathematics
[1]Guru Kashi University, Talwandi Sabo, Bathinda, Punjab, India.

Abstract:
In this paper the mathematical model SIV is analysed on epidemic disease viz., influenza infection. Influenza is a very highly contagious respiratory disease. The improved mathematical model emphasizes on impact of vaccination on influenza virus in India. In this model, human population are divided into three compartments named as suspectable, infected and vaccinated. Effect of infectious agents analysed using the various mathematical tools likes stability, Routh Hurwitz criterion and concluded that the epidemic model is presently stable in the society. Numerical results are obtained by MATLAB programming which provide that this method is effective and possesses potential measures of application.

Key Terms: Epidemic Disease, Influenza Virus, Basic Reproduction Number, Jacobian Matrix, Stability.

1. Introduction:

Influenza is a very highly contagious respiratory disease. It is also known as the Flu and is a viral infection that affect human respiratory system. According to history of influenza, first epidemic in Europe is reported in 1173. In 1357, **the term influenza is used to describe in Italy**. So, it has a long history in terms of epidemic, pandemic or sometimes seasonal influenza. In India people are suffering from it every year. The symptoms of human influenza are provided by Hippocrates. Also, the scientist Richard Shope discovered the influenza **'A'** virus in 1931. The WHO has circulated the guidelines for the composition of the influenza vaccine based on results from surveillance systems that recognize the specific strains. [24, 25, 26] Influenza virus is classified into three groups like as A, B and C, out of which, Influenza A is considered as most dangerous to spread rapidly. Seasonal Influenza may affect all age groups. Medical staff and person with comorbid situations for example liver infection, lung infection, bronchial infection, heart problem, diabetes patients and immuno-compromised patients are at high risk. The common symptoms of influenza infection include: coughing, runny or stuffy nose, sneezing, sore throat, fever, headache, fatigue, chills and body aches and so on. Influenza A mutates faster than B. Wild bids are the natural hosts for a type **'A'** virus, also known as avian flu and bird flu. In diagnosing influenza, A, doctor swabs your nose or throat of infected person. The test will detect infection within 30 minutes or less. Medical technologies improved fastely, therefore detection of infection can be possible within 30 minutes or less. Thereafter, doctor may have to make a diagnosis based on the symptoms or other recommended tests. After detection of influenza infection doctor may prescribe antiviral medication to fight the

Seema

UGC Approved

ISSN : 2456 - 253X

ਮਨੁੱਖੀ ਕਦਰਾਂ ਦਾ ਰਚਨਾਤਮਕ ਸਫ਼ਰ

ਅਸਬਰ

ਅਕਤੂਬਰ - ਦਸੰਬਰ 2022

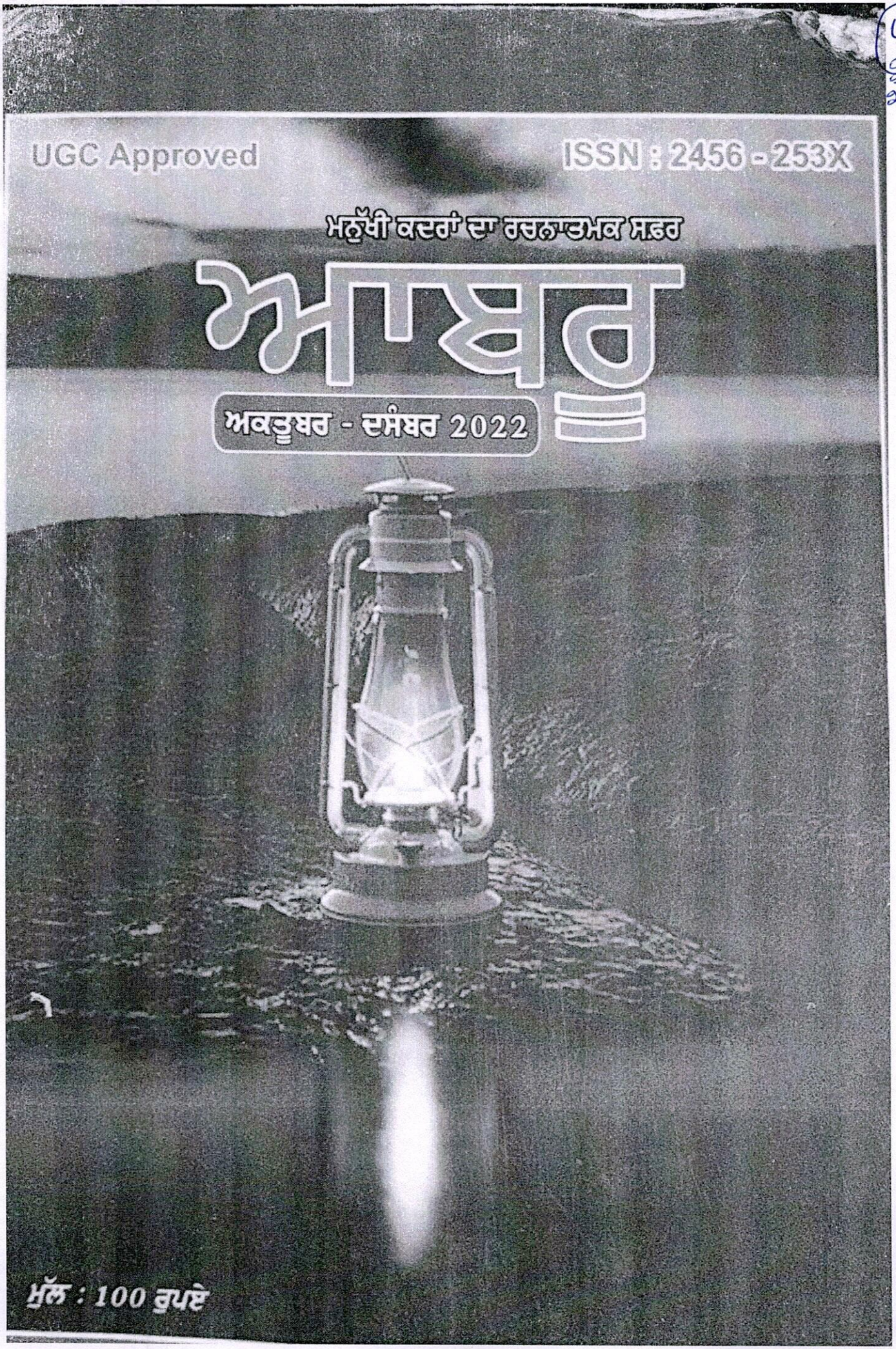

ਮੁੱਲ : 100 ਰੁਪਏ

Scanned by CamScanner

ਅਦਾਰਾ ਆਖਰੂ ਦੇ ਚਿਹਰੇ

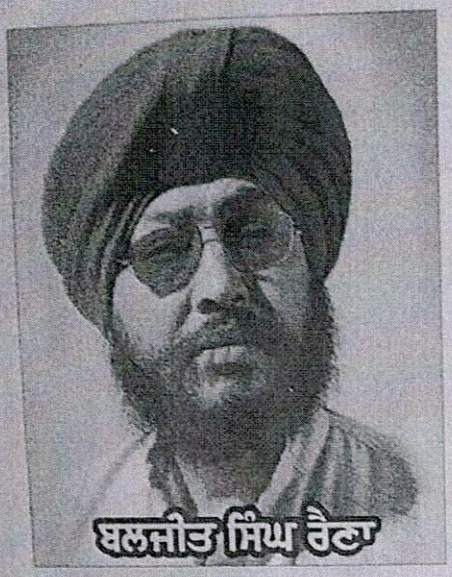

ਮੁੱਖ ਸੰਪਾਦਕ

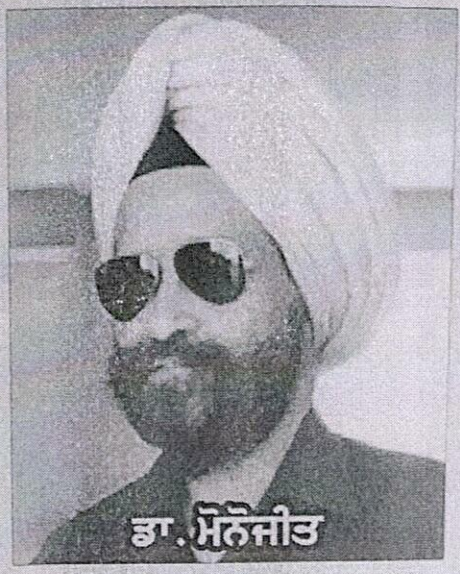

ਸੰਪਾਦਕ

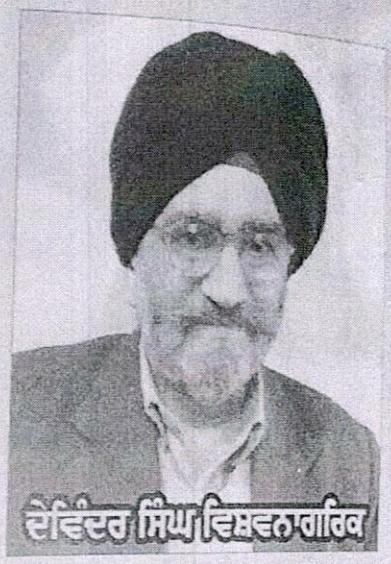

ਸੰਪਾਦਕ

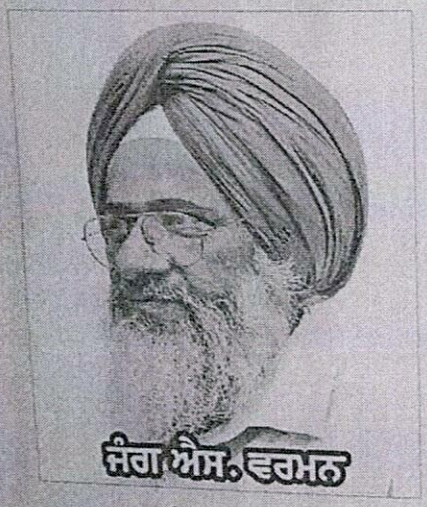

ਸੰਪਾਦਕ

ਕਨੇਡਾ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧ

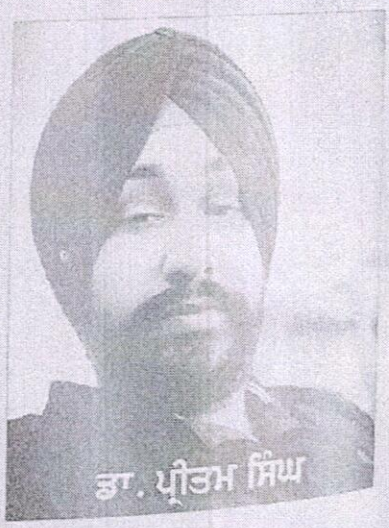

ਸਲਾਹਕਾਰ

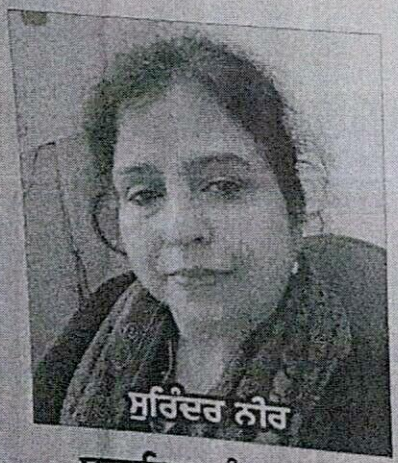

ਸਹਾਇਕ ਸੰਪਾਦਕ

ਸਹਾਇਕ ਸੰਪਾਦਕ

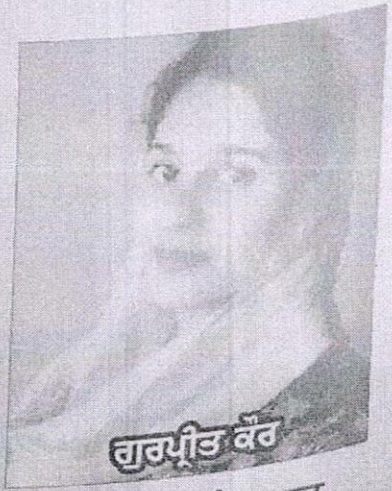

ਸਹਾਇਕ ਸੰਪਾਦਕ

Scanned by CamScanner

RNI : JKPUN/2002/6333

UGC Care List

ISSN : 2456 - 253X

ਆਬਰੂ

ਮਨੁੱਖੀ ਕਦਰਾਂ ਦਾ ਰਚਨਾਤਮਕ ਸਫ਼ਰ

(A Creative Journey of Human Values)

ਸਾਲ : 21 ਅੰਕ : 10 - 12

ਅਕਤੂਬਰ-ਦਸੰਬਰ 2022

ਤਰਤੀਬ

ਸੰਪਾਦਕੀ	:	*ਜੰਗ ਐਸ. ਵਰਮਨ/2*
ਕਵਿਤਾਵਾਂ	:	*ਕਰੋਨਾ ਕਾਲ : ਕੁਝ ਕਾਵਿ-ਅਨੁਭਵ/ਡਾ. ਮੋਨੋਜੀਤ/3*
ਕਹਾਣੀ	:	*ਵੰਸ਼/ਜੰਗ ਐਸ. ਵਰਮਨ/4*
ਖੋਜ ਪੱਤਰ	:	*ਸਮਕਾਲੀ ਸਮਾਜ ਦੀ ਯਥਾਰਥਕ ਦਾਸਤਾਨ : ਚਾਰ ਤੱਤ.../ਡਾ. ਕੁਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ/6*
	:	*ਪਾਕਿਸਤਾਨੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਵਲ 'ਚੇਤਰ ਬਾਗ਼ਾਂ' ਦਾ/ਡਾ. ਸਵਰਨਜੀਤ ਕੌਰ/9*
	:	*ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਰਚਿਤ ਨਾਵਲਾਂ ਵਿੱਚ.../ਡਾ. ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ ਬਰਾੜ/12*
	:	*ਸਵਰਾਜਬੀਰ ਦੇ ਨਾਟਕ 'ਤਸਵੀਰਾਂ' ਦਾ ਸਮਾਜ-.../ਅਮਰ ਹਰਜੋਤ ਕੌਰ/15*
	:	*ਸ਼ਿਵਚਰਨ ਜੱਗੀ ਕੁੱਸਾ ਦੇ ਨਾਵਲ 'ਸੱਜਰੀ ਪੈੜ.../ਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ, ਡਾ. ਮੇਜਰ ਸਿੰਘ/18*
	:	*ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਦੀ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ :.../ਡਾ. ਹਰਿੰਦਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਕਲੇਰ/20*
	:	*ਅਮਲੀ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੀ ਅਣਹੋਂਦ ਤੇ.../ਡਾ. ਆਤਮ ਸਿੰਘ ਰੰਧਾਵਾ/22*
	:	*ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਦਾ.../ਡਾ. ਪਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ/25*
	:	*ਸੁਖਵਿੰਦਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਦੇ ਗੀਤ ਸੰਗ੍ਰਹਿ.../ਕਿਰਨਦੀਪ ਕੌਰ/28*
	:	*ਪਾਕਿਸਤਾਨੀ ਔਰਤ : ਸੰਤਾਪ ਤੇ ਸੰਘਰਸ਼/ਵਨੀਤਾ ਸ਼ਰਮਾ/30*
	:	*ਫਰੀਦ-ਬਾਣੀ ਦੇ ਮਾਨਵੀ ਸਰੋਕਾਰ/ਡਾ. ਗੁਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ/35*
	:	*ਤੋਤਲੇ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ.../ਡਾ. ਹਰਵਿੰਦਰ ਪਾਲ ਕੌਰ, ਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ ਸੇਖੋਂ/37*
	:	*ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ ਪਾਸ਼ ਦੇ ਖ਼ਤ.../ਹਰਪਾਲ ਕੌਰ, ਗਾਈਡ : ਡਾ. ਮੇਜਰ ਸਿੰਘ/40*
	:	*ਵਿਗਿਆਪਨ : ਪਰਿਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸਰੂਪ/ਮਨਜੀਤ ਸਿੰਘ/42*
	:	*ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਸਮਾਜਕ ਚੇਤਨਾ/ਰਾਜਵਿੰਦਰ ਕੌਰ/43*
	:	*ਬਲੌਦੇਵ ਸਿੰਘ ਸੜਕਨਾਮਾ ਦੇ.../ਕੁਲਵਿੰਦਰ ਕੌਰ, ਗਾਈਡ ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ/46*
	:	*ਜੰਗ ਐਸ. ਵਰਮਨ ਦਾ ਕਾਵਿਕ-ਬੋਧ/ਪ੍ਰੋ. ਪਰਵਿੰਦਰ ਕੌਰ/48*
	:	*ਦਰਸ਼ਨ ਸਿੰਘ ਧੀਰ ਦੇ ਨਾਵਲ 'ਪੈੜਾਂ ਦੇ ਆਰ-ਪਾਰ'.../ਰੁਪਿੰਦਰ ਕੌਰ/50*
	:	*ਪੰਜਾਬੀ ਕਿੱਸਾ-ਕਾਵਿ 'ਚ ਸੁਰਮਗਤੀ ਦਾ.../ਸਰਬਜੀਤ ਕੌਰ/53*
	:	*ਇਪਟਾ ਲਹਿਰ ਅਤੇ ਜੋਗਿੰਦਰ ਬਾਹਰਲਾ ਦੇ ਉਪੇਰੇ/ਰਮਨਦੀਪ ਕੌਰ/56*
	:	*ਹਜ਼ੂਰਾ ਸਿੰਘ ਬੁਟਾਹਰੀ ਰਚਿਤ ਹੀਰ ਵਿੱਚ.../ਸਿਮਰਨਜੀਤ ਕੌਰ/58*
	:	*ਬੇਚੈਨ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੀ ਕਥਾ : ਤੀਸਰੀ ਖਿੜਕੀ/ਡਾ. ਚੰਦਰ ਪ੍ਰਕਾਸ਼/60*
	:	*ਨਵੀਂ ਕਿਸਮ ਦੀ.../ਅੰਮ੍ਰਿਤਪਾਲ ਕੌਰ ਪਾਂਗਲੀ, ਨਿਗਰਾਨ : ਡਾ. ਨਵਸ਼ਗਨ ਦੀਪ ਕੌਰ/63*
	:	*ਥੀਏਟਰ ਵਿੱਚ ਮੰਚ, ਪੇਸ਼ਕਾਰ ਅਤੇ.../ਜਗਮੋਹਨੀ ਚਾਵਲਾ ਗਾਬਾ/65*
	:	*ਵਿਅੰਗ ਹੁਝਾਂ ਫੇਰਦਾ : ਡਾ. ਮੋਨੋਜੀਤ ਦਾ ਨਾਵਲ.../ਅਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ/68*
	:	*ਵਿਸ਼ਵੀਕਰਨ ਤੇ ਸਾਹਿਤ/ਮਨਜੀਤ ਕੌਰ, ਗਾਈਡ : ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ/70*
	:	*ਆਈ. ਸੀ. ਨੰਦਾ ਦੇ ਨਾਟਕ ਸੁਭੱਦਰਾ ਵਿੱਚ.../ਨਵਜੋਤ ਕੌਰ/72*
	:	*ਸਿਗਮੰਡ ਫ੍ਰਾਇਡ ਦਾ ਵਿਹਾਰਕ ਮਨੋ.../ਡਾ. ਹਰਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ, ਡਾ. ਗੁਰਮੀਤ ਸਿੰਘ/74*
	:	*ਆਰਟੀਫੀਸ਼ੀਅਲ ਇੰਟੈਲੀਜੈਂਸ ਤਕਨੀਕਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਆਟੋਮੈਟਿਕ ਰਾਈਸ.../ਕੌਮਲ, ਗਣੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਸੇਠੀ ਅਤੇ ਰਾਜੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਥਾਵਾ/77*
	:	*ਆਧੁਨਿਕ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਰੀ.../ਪ੍ਰਵੀਨ ਕੌਰ, ਨਿਗਰਾਨ : ਡਾ. ਸਤਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ ਜੱਸਲ/80*
	:	*ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖ : ਵਿਹਾਰਕ ਪਰਿਪੇਖ/ਰਮਨਦੀਪ ਕੌਰ/84*
	:	*ਸੀਮਾਂਤ ਅਤੇ ਛੋਟੀ ਕਿਰਸਾਨੀ :.../ਡਾ. ਸੰਦੀਪ ਸਿੰਘ/88*
	:	*ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਦੀ ਕਹਾਣੀ 'ਸੀਪ' :.../ਡਾ. ਸਤਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ ਜੱਸਲ/90*
	:	*ਪ੍ਰੋ. ਸੁਹਿੰਦਰ ਬੀਰ ਦੀ ਕਵਿਤਾ.../ਮਨਦੀਪ ਕੌਰ, ਗਾਈਡ : ਡਾ. ਜੋਤੀ ਸ਼ਰਮਾ/93*
	:	*ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਵਿਚ.../ਡਾ. ਜਸਵਿੰਦਰ ਕੌਰ/95*
	:	*ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਸਦਾਚਾਰਕ ਪਰਿਪੇਖ/ਡਾ. ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ/97*
	:	*ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਖ਼ਾਨਾਬਦੋਸ਼.../ਸਤਨਾਮ ਸਿੰਘ, ਗਾਈਡ : ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ/102*
	:	*ਖੁੱਲ੍ਹ ਜਾ ਸਿੰਮ ਸਿੰਮ : ਨਾਰੀ ਹੋਂਦ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ/ਡਾ. ਕਵਲਜੀਤ ਕੌਰ/104*
	:	*ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ ਰਚਿਤ 'ਕਲਾਸ' : ਇਕ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ/ਬਲਵਿੰਦਰ ਕੌਰ/106*
	:	*ਰਾਮ ਸਰੂਪ ਅਣਖੀ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ.../ਮਨਜੀਤ ਕੌਰ, ਡਾ. ਲਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ/109*
	:	*ਦਰਸ਼ਨ ਬੁੱਟਰ ਦੀ ਜੋੜਨੀ-ਜੁਗਤ/ਡਾ. ਹਰਜਿੰਦਰ ਲਾਡਵਾ/111*
	:	*ਗੁਰਬਾਣੀ ਵਿਆਖਿਆਕਾਰੀ ਦੀ ਕਾਵਿ ਜੁਗਤ/ਡਾ. ਤਰਸੇਮ ਸਿੰਘ/115*
	:	*ਜਰਨੈਲ ਸਿੰਘ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦਾ ਥੀਮਕ ਅਧਿਐਨ/ਇੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ/119*
	:	*ਦਵਿੰਦਰ ਸੈਫੀ ਦੀ ਕਾਵਿ ਪੁਸਤਕ.../ਡਾ. ਤੇਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਸਿੱਧੂ/124*

(ਬਾਕੀ ਪੰਨਾ 3 ਤੇ)

ਸੰਪਾਦਕ
ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ
ਮੋਬਾ : 97976-57211
ਸੰਪਾਦਕ ਮੰਡਲ
ਡਾ. ਮੋਨੋਜੀਤ
ਮੋਬਾ : 94191-39906
ਦੇਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਵਿਸ਼ਵਨਾਗਰਿਕ
ਮੋਬਾ : 95966-52796
ਜੰਗ ਐਸ. ਵਰਮਨ
ਮੋਬਾ : 94192-10834
ਸਹਾਇਕ ਸੰਪਾਦਕ
ਡਾ. ਮਮਤਾ
ਮੋਬਾ : 92892-87778
ਰਾਜਵੀਰ ਸਿੰਘ
ਮੋਬਾ : 84920-05225
ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ
ਮੋਬਾ : 99060-03940
ਸਲਾਹਕਾਰ
ਡਾ. ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿੰਘ
ਕਨੇਡਾ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧ
ਡਾ. ਅਰਵਿੰਦਰ ਕੌਰ
ਮੋਬਾ : +1 416-450-0554

ਈਮੇਲ : baljeetraina58@gmail.com
ਮੁੱਲ : ਇਕ ਕਾਪੀ 100 ਰੁਪਏ
ਡਾਕ ਦੁਆਰਾ 125 ਰੁਪਏ

ਦੇਸ਼ ਸਲਾਨਾ	:	400 ਰੁਪਏ
ਡਾਕ ਦੁਆਰਾ	:	500 ਰੁਪਏ
ਜੀਵਨਸਾਥ	:	5000 ਰੁਪਏ
ਵਿਦੇਸ਼ ਸਲਾਨਾ	:	30 ਡਾਲਰ, 15 ਪੌਂਡ
ਜੀਵਨ ਸਾਥ	:	500 ਡਾਲਰ, 250 ਪੌਂਡ

ਸੰਪਾਦਕ ਜਾਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ ਦਾ ਰਚਨਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਅਕਤ ਵਿਚਾਰਾਂ ਨਾਲ ਸਹਿਮਤ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਨਹੀਂ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਾਦ-ਵਿਵਾਦ ਦਾ ਹਲ ਜੰਮੂ ਵਿਖੇ ਹੀ ਹੋਵੇਗਾ!

ਛਾਪਕ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ ਅਤੇ ਮਾਲਕ ਗੁਰਮੁਖ ਸਿੰਘ ਨੇ ਕਲਾਸਿਕ ਪ੍ਰਿੰਟਰਜ਼, ਬੜੀ ਬ੍ਰਾਹਮਣਾ ਤੋਂ ਛਪਵਾ ਕੇ 'ਦਫ਼ਤਰ ਆਬਰੂ' ਮਕਾਨ ਨੰਬਰ-5, ਕੁੰਜਵਾਨੀ, ਸ਼ਹੀਦ ਫਿਲਿੰਗ ਸਟੇਸ਼ਨ ਦੇ ਪਿੱਛੇ, ਜੰਮੂ 180010 ਤੋਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ। ਸੰਪਾਦਕ: ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ

Printer, Publisher, and Owner Gurmukh Singh Printed it at M/S Classic Printers, Bari Brahmana and Published at Aabru office, H.No.5, Kunjwani, Behind Shaheed Filling Station Jammu-180010. Editor, Baljeet Singh Raina

Scanned by CamScanner

ਵਿੱਚ ਵਿਚਰਦੇ ਜੀਵਾਂ ਲਈ ਨੈਤਿਕ ਪੱਖ ਤੈਅ ਕਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇੰਟਰਨੈੱਟ ਦੇ ਕੋਸ਼ ਅਨੁਸਾਰ :

1. Society : I am organised group of person associated together for Religious, benevolent, Cultural, Scientific, Political, Patriotic or other purposes.

2. A copy of individual living as members of a community.

1. ਭਾਵ ਕਿ ਸਮਾਜ : ਸੰਬੰਧ ਧਾਰਮਿਕ ਸੁਹਿਰਦ, ਸਭਿਆਚਾਰਕ, ਵਿਗਿਆਨਕ, ਰਾਜਨੀਤਕ, ਦੇਸ਼ ਭਗਤ ਜਾਂ ਹੋਰ ਉਦੇਸ਼ਾਂ ਲਈ ਇਕੱਠੇ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਦਾ ਸੰਗਠਿਤ ਸਮੂਹ ਹੈ।

2. ਸਮਾਜ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਂ ਵਜੋਂ ਇਕੱਠੇ ਰਹਿਣ ਵਾਲੇ ਵਿਅਕਤੀਆਂ ਦਾ ਢਾਂਚਾ।

ਉਪਰੋਕਤ ਧਾਰਨਾ ਵਿੱਚ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਸਮੁੱਚੇ ਲੋਕਾਂ ਵਜੋਂ ਇਕਜੁੱਟ ਜਾਂ ਇਕੱਤਰ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣ ਦੀ ਉਸ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਪ੍ਰਤੀ ਸੰਕੇਤ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਢਾਂਚਾਗਤ ਬਣਤਰ ਤੇ ਜ਼ਰੀਏ ਸਾਰੇ ਮਨੁੱਖ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਇਕ ਰਾਸ਼ਟਰ ਵਜੋਂ ਵਿਚਰ ਕੇ ਵਿਕਾਸ ਕਰ ਸਕਣ। ਇਸ ਢਾਂਚੇ ਦਾ ਸਰੂਪ ਧਾਰਮਕ, ਸਭਿਆਚਾਰਕ, ਰਾਜਨੀਤਕ ਜਾਂ ਵਿਗਿਆਨਕ, ਕਿਸੇ ਵੀ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਵਿਚਰਨ ਵਾਲੇ ਲੋਕ ਆਪਸੀ ਭਾਈਚਾਰਕ ਸਾਂਝ ਕਾਰਨ ਪਰਸਪਰ ਸੰਬੰਧਤ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਪਰ ਸਮਾਜ ਅੰਦਰਲੀਆਂ ਕਦਰਾਂਕੀਮਤਾਂ ਸਦਾ ਇੱਕੋ ਜਿਹੀਆਂ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਬਲਕਿ ਬਦਲਦੀਆਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ।

ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਸਮਾਜਕ ਸਥਿਤੀ ਵਾਚਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਮੁਸਲਿਮ ਸ਼ਾਸਕਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਕਾਜ਼ੀ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਦੀ ਨਕਸ ਨੁਹਾਰ ਨੂੰ ਕਾਫ਼ੀ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਦੇ ਰਹੇ। ਇਸ ਲਈ ਕਿ ਪ੍ਰਬੰਧਕੀ ਢਾਂਚੇ ਦਾ ਨਿਆਏ ਵਾਲਾ ਸਾਰਾ ਕੰਮ ਕਾਜ਼ੀ ਮੁੱਲਾਂ ਦੇ ਹੱਥ ਵਿੱਚ ਸੀ। ਰਿਸ਼ਵਤ ਲੈਣੀ ਤੇ ਗਰੀਬ ਦਾ ਹੱਕ ਮਾਰਨਾ ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਾਜ਼ੀਆਂ ਦੇ ਸੁਭਾਅ ਦਾ ਗੁਣ ਬਣ ਚੁੱਕਿਆ ਸੀ ਅਤੇ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਇਸਲਾਮੀ ਸੁਭਾਅ ਵਾਲੇ ਸੂਫ਼ੀ ਮਤ ਪ੍ਰਚਾਰਕ ਜਨਤਾ ਵਿੱਚ ਪਿਆਰ ਵੰਡ ਰਹੇ ਸਨ ਤੇ ਪਿਆਰ, ਸਾਂਝ, ਹਮਦਰਦੀ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ ਦੇ ਰਹੇ ਸਨ। ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਇਸਲਾਮਕ ਕਥਾਵਾਂ ਤੇ ਕਰਮਕਾਂਡਾਂ ਦਾ ਡਟ ਕੇ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ। ਬਾਣੀ ਬੰਦ ਅਨੁਸਾਰ :

"ਮੈਂ ਅੰਧੁਲੇ ਕੀ ਟੇਕ ਤੇਰਾ ਨਾਮ ਖੁੰਦਕਾਰਾ॥
ਮੈ ਗਰੀਬ ਮੈ ਮਸਕੀਨ ਤੇਰਾ ਨਾਮੁ ਹੈ ਅਧਾਰਾ॥ਰਹਾਉ॥
ਕਰੀਮਾਂ ਰਹੀਮਾਂ ਅਲਾਹ ਤੂੰ ਗੰਨੀ॥
ਹਾਜਰਾ ਹਜੂਰਿ ਦਰਪੇਸਿ ਤੂੰ ਮੰਨੀ॥"[13]

ਇਸ ਧਾਰਨਾ ਅੰਦਰ ਭਗਤ ਜੀ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਗਰੀਬ ਤੇ ਮਸਕੀਨ ਆਖਦੇ ਹੋਏ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਤੇਰਾ ਨਾਮ ਮੇਰੇ ਵਰਗੇ ਅੰਨ੍ਹੇ ਦੀ ਡੰਗੋਰੀ ਹੈ ਮੈਨੂੰ ਕੰਗਾਲ ਨੂੰ ਸਿਰਫ਼ ਤੇਰਾ ਹੀ ਸਹਾਰਾ ਹੈ। ਨਾਮਦੇਵ ਦਾ ਬ੍ਰਹਮ ਅੱਲਾਹ, ਕਰੀਮ, ਰਹੀਮ ਤੇ ਅਮੀਰ ਹੈ। ਜੋ ਹਰ ਵੇਲੇ ਹਾਜ਼ਰ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।

ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਸਮਾਜ ਵਿਤਕਰਿਆਂ ਦੀ ਮਾਰ ਝੱਲ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਅਮੀਰ ਤੇ ਗਰੀਬ, ਨੀਵੀਂ ਜਾਤ ਤੇ ਉੱਚੀ ਜਾਤੀ ਦਾ ਵਿਤਕਰਾ। ਜਾਤ ਅਧਾਰਤ ਹੀ ਛੂਆ-ਛਾਤ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਚੱਲਿਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਬਾਣੀਬੰਦ ਅੰਦਰ ਜਾਤੀ ਵਿਤਕਰੇ ਦੀ ਛੂਆ-ਛਾਤ ਸੰਬੰਧੀ ਭੈਰਉ ਰਾਗ ਵਿੱਚ ਸਪੱਸ਼ਟ ਕਰਦੇ ਹਨ :

ਹਸਤ ਖੇਲਤ ਤੇਰੇ ਦੇਹੁਰੇ ਆਇਆ
ਭਗਤਿ ਕਰਤ ਨਾਮਾ ਪਕਰਿ ਉਠਾਇਆ॥
ਹੀਨੜੀ ਜਾਤਿ ਮੇਰੀ ਜਾਦਮ ਰਾਇਆ॥
ਛੀਪੇ ਕੇ ਜਨਮਿ ਕਾਹੇ ਕਉ ਆਇਆ॥ ਰਹਾਉ॥[14]

ਉਪਰੋਕਤ ਸ਼ਬਦ ਅੰਦਰ ਇਹ ਸਾਫ਼ ਝਲਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਨਾਮਦੇਵ ਛੀਂਬਾ ਹੈ ਤੇ ਸ਼ੂਦਰ ਜਾਤੀ ਨਾਲ ਵਾਬਸਤਾ ਹੈ। ਸ਼ੂਦਰ ਮੰਦਰ ਅੰਦਰ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ। ਇਕ ਦਿਨ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਵੀ ਬੀਠਲ ਮੂਰਤੀ ਦੇ ਅੱਗੇ ਚਲੇ ਗਏ ਤੇ ਉੱਚੀ ਕੁੱਲ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਭਗਤ ਜੀ ਨੂੰ ਬਾਂਹ ਪਕੜ ਕੇ ਬਾਹਰ ਕੱਢ ਦਿੱਤਾ। ਭਗਤ ਜੀ ਆਪਣੀ ਨੀਵੀਂ ਜਾਤ ਹੋਣ ਤੇ ਬੀਠੁਲ ਨੂੰ ਉਲਾਂਭਾ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਤ ਦੀਆਂ ਵਿਸ਼ੇਸਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦੇ ਡਾ. ਸੰਤੋਖ ਸਿੰਘ ਦੀ ਧਾਰਨਾ ਵਿਚਾਰਨਯੋਗ ਹੈ।

"1. ਜਾਤ ਜਨਮ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਭਾਵ ਜਿਸ ਜਾਤੀ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖ ਪੈਦਾ ਹੋਇਆ ਉਹ ਉਸੇ ਦਾ ਹੀ ਮੈਂਬਰ ਰਹੇਗਾ, ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਚਿਰ ਉਸਦੀ ਕਿਸੇ ਗਲਤੀ ਕਾਰਨ ਉਸਨੂੰ ਜਾਤੀ ਵਿੱਚੋਂ ਕੱਢਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾਂਦਾ। ਜਾਤੀ ਵਿਚੋਂ ਕੱਢਣ ਉਪਰੰਤ ਵੀ ਉਹ ਸਮਾਜਕ ਪਦਕਮ ਵਿਚਲੀ ਹੇਠਲੀ ਜਾਤੀ ਵਿੱਚ ਜਾ ਸਕੇਗਾ, ਉਪਰਲੀ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ। ਭਾਵ ਇਹ ਇਕਹਿਰਾ ਰਸਤਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਤੋਂ ਹੇਠਾਂ ਤਾਂ ਜਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ, ਪਰ ਉਪਰ ਨਹੀਂ ਜਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ।"[15]

ਇਸ ਧਾਰਨਾ ਤੋਂ ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੈ ਕਿ ਜਾਤ ਜਨਮ ਅਧਾਰਤ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਸਮੇਂ ਜਾਤੀਗਤ ਭੇਦ ਭਾਵ ਹੀ ਨਹੀਂ ਨਿਮਨ ਜਾਤੀਆਂ ਦਾ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਵੀ ਸੀ। ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਖੁਦ ਵੀ ਸ਼ੂਦਰ ਜਾਤੀ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਰੱਖਦੇ ਸਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਕਈ ਵਾਰ ਜਾਤੀਗਤ ਭੇਦਭਾਵ ਹੋਇਆ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਡਟ ਕੇ ਜਾਤੀਗਤ ਸਰੋਕਾਰ ਦਾ ਪੂਰਨ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ।

ਪ੍ਰੋ : ਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਰਹੱਸਾਤਮਕ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨੂੰ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ :

"ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਹਾਲਾਤ ਅਨੁਸਾਰ ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਗੱਲਾਂ ਦਾ ਸਭ ਭਗਤ ਪਰਚਾਰ ਕਰ ਰਹੇ ਸਨ ਤੇ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਵੀ ਕਰਦੇ ਰਹੇ ਉਹ ਤਿੰਨ ਚਾਰ ਹੀ ਸਨ।

(1) ਉੱਚੀ ਨੀਵੀਂ ਜਾਤ ਦੇ ਵਿਤਕਰੇ ਵਿਰੁੱਧ ਅਵਾਜ਼ (2) ਕਰਮ ਕਾਂਡ ਦਾ ਪਾਜ ਖੋਲ੍ਹਣਾ

(3) ਮੂਰਤੀ ਪੂਜਾ ਵਲੋਂ ਹਟਾ ਕੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਕ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਭਗਤੀ ਵਲ ਪ੍ਰੇਰਨਾ।[16]

ਉਪਰੋਕਤ ਤੋਂ ਸਪੱਸ਼ਟ ਹੈ ਕਿ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਨਾਲ ਵੀ ਉੱਚੀ ਕੁਲ ਵਾਲੇ ਵਿਤਕਰਾ ਕਰਦੇ ਰਹੇ ਅਤੇ ਭਗਤ ਜੀ ਇਸਦਾ ਸਪੱਸ਼ਟ ਵਿਰੋਧ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਭਗਤੀ ਮਾਰਗ ਰਾਹੀਂ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਅੰਦੋਲਨ ਚਲਾਉਣ ਵਾਲੇ ਧਰਮ ਪ੍ਰਵਕਤਾ ਵਜੋਂ ਉੱਭਰ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ

Scanned by CamScanner

ਆਏ। ਦਬੀਕੁਚਲੀ ਜਨਤਾ ਅੰਦਰ ਸਵੈ ਮਾਣ, ਸਵੈ ਵਿਸ਼ਵਾਸ, ਤੇ ਸ਼ਕਤੀ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਕਰਾਉਣ ਵਾਲੇ ਇਹ ਧਰਮ ਪ੍ਰਵਕਤਾ ਅਦੁੱਤੀ ਤੇ ਬੇਮਿਸਾਲ ਸਖਸ਼ੀਅਤ ਦੇ ਮਾਲਕ ਸਨ। ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸਮੁੱਚੀ ਲੋਕਾਈ ਅੰਦਰ ਸਮਾਜਕ ਚੇਤਨਾ ਦਾ ਬੀਜ ਬੀਜਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ। ਇਸੇ ਸਮਾਜਕ ਚੇਤਨਾ ਨੇ ਭਗਤੀ ਲਹਿਰ ਅੰਦਰ ਨਵੀਂ ਰੂਹ ਫੂਕੀ।

ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਭਗਤੀ ਲਹਿਰ ਨੇ ਮੂਰਤੀ ਪੂਜਾ ਦਾ ਡਟ ਕੇ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ ਤੇ ਅੰਤਰ ਆਤਮਾ ਵਿੱਚ ਬੈਠੇ ਬੀਠਲੁ ਦੀ ਭਗਤੀ ਤੇ ਮਹਿਮਾ ਕਰਨ ਲਈ ਸਮੁੱਚੀ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕੀਤਾ। ਬੀਠਲੁ ਦੇ ਸਰੂਪ ਦਾ ਵਰਣਨ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਚੇਤੰਨ ਕਰਨ ਲਈ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਕਰਦੇ ਸਨ।

ਈਭੈ ਬੀਠਲੁ ਊਭੈ ਬੀਠਲੁ॥
ਬੀਠਲ ਬਿਨ ਸੰਸਾਰ ਨਹੀਂ॥
ਥਾਨ ਥਨੰਤਰਿ ਨਾਮਾ ਪ੍ਰਣਵੈ॥
ਪੂਰਿ ਰਹਿਓ ਤੂੰ ਸਰਬ ਮਹੀ॥[17]

ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਇਸ ਸ਼ਬਦ ਰਾਹੀਂ ਸਮਝਾਇਆ ਕਿ ਉੱਚੀ ਕੁੱਲ ਵਾਲੇ ਉੱਚੇ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਉੱਚਾ ਸਥਾਨ ਤਾਂ ਬੀਠਲੁ ਦਾ ਹੈ ਜੋ ਹਰ ਥਾਂ ਤੇ ਵਿਆਪਕ ਹੈ। ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਦੀ ਰਚਨਾ ਅਕਾਲਪੁਰਖ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਉਹ ਘਟਘਟ ਵਿੱਚ ਵਸ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਕ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਹੀ ਸਥਿਰ ਹੈ ਸਥੂਲ ਹੈ ਬਾਕੀ ਸਭ ਨਾਸ਼ਵਾਨ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਹੋਰ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਉਦਾਹਰਨਾਂ ਦੇ ਕੇ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਦਬੀ ਕੁਚਲੀ ਜਨਤਾ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਕੀਤਾ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਅੰਦਰ ਸਮਾਜਕ ਚੇਤਨਾ ਪੈਦਾ ਕੀਤੀ। ਹਠ ਯੋਗ, ਕਰਮ ਯੋਗ, ਤੇ ਗਿਆਨ ਯੋਗ ਨਾਲੋਂ ਭਗਤੀ ਮਾਰਗ ਨੂੰ ਸ੍ਰੇਸ਼ਠ ਆਖ ਕੇ ਭਗਤੀ ਕਰਨ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਿਆ। ਭਗਤੀ ਮਾਰਗ ਤੋਂ ਭਾਵ ਉਸ ਸਰਬ ਸ਼ਕਤੀਮਾਨ ਨਾਲ ਧਿਆਨ ਜੋੜਨ ਤੋਂ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਕਿ ਪ੍ਰਭੂ ਦਾ ਨਾਮ ਜਪਣ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਸਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਹੈ। ਨਾ ਕਿ ਉੱਚੀ ਕੁਲ ਵਿੱਚ ਪੈਦਾ ਹੋਏ ਕੱਟੜਪੰਥੀਆਂ ਨੂੰ।

ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਤਤਕਾਲੀ ਸਮਾਜ ਅੰਦਰ ਪਖੰਡੀ ਬਿਰਤੀ ਵਾਲੇ ਕੱਟੜਪੰਥੀਆਂ ਦੇ ਸਰੂਪ ਨੂੰ ਰਾਮਕਲੀ ਰਾਗ ਵਿੱਚ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੱਸਦੇ ਹਨ :

"ਬਨਾਰਸੀ ਤਪ ਕਰੈ ਉਲਟਿ, ਤੀਰਥ ਮਰੈ,
ਅਗਨਿ ਦਹੈ, ਕਾਇਆ ਕਲਪ ਕੀਜੈ॥
ਅਸੁਮੇਧੁ ਜਗੁ ਕੀਜੈ, ਸੋਨਾ ਗਰਭ ਦਾਨੁ ਦੀਜੈ,
ਰਾਮ ਨਾਮ ਸਰਿ ਤਊ ਨ ਪੂਜੈ॥
ਛੋਡਿ ਛੋਡਿ ਰੇ ਪਾਖੰਡੀ ਮਨ, ਕਪਟ ਨ ਕੀਜੈ॥
ਹਰਿ ਕਾ ਨਾਮੁ ਨਿਤ ਨਿਤਹਿ ਲੀਜੈ॥[18]

ਇਸ ਬਾਣੀ ਬੰਦ ਅੰਦਰ ਭਗਤ ਜੀ ਨੇ ਲੋਕਾਈ ਨੂੰ ਕਠਿਨ ਤਪੀਸਿਆ, ਤੀਰਥਾਂ ਦੇ ਇਸ਼ਨਾਨ, ਅਨੇਕਾਂ ਦਾਨ-ਪੁੰਨ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰਦਿਆਂ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਇਹ ਕਰਮ ਕਾਂਡ ਰੱਬ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਦਾ ਜ਼ਰੀਆ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਇਹ ਪਖੰਡੀ ਸਰੂਪ ਹੈ ਤੇ ਬ੍ਰਹਮ ਸਿਮਰਨ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਨੀਵਾਂ ਕੰਮ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਆਪਣੇ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ ਵਾਲੇ ਉਦੇਸ਼ ਤਹਿਤ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਧਾਰਮਕ ਕਰਮਕਾਂਡਾਂ ਤੋਂ ਨਿਰਲੇਪ ਰਹਿਣ ਲਈ ਸੰਦੇਸ਼ ਦਿੱਤਾ, ਕਿਉਂਕਿ ਹਿੰਦੂ ਧਾਰਮਿਕ ਕਰਮ ਕਾਂਡਾ ਨਾਲ ਬ੍ਰਹਮ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਵਾਲਾ ਰਸਤਾ ਗਲਤ ਸੀ। ਇਹ ਸਭ ਦੇ ਸਮਵਿੱਥ ਭਗਤੀ ਧਾਰਾ ਨੇ ਕਰਮਕਾਂਡਾਂ ਵਾਲੇ ਪਾਖੰਡਾਂ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਹੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ, ਸਗੋਂ ਭਗਤੀ ਮਾਰਗ ਰਾਹੀਂ ਮੋਕਸ਼ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਦਾ ਸਮਾਜਕ ਸਰੂਪ ਵੀ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ।

ਉਪਰੋਕਤ ਚਰਚਾ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਅਸੀਂ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੀ ਬਾਣੀ ਪ੍ਰਵਚਨ ਨਾਲ ਸਮਾਜਕ ਚੇਤਨਾ ਵਾਲੀ ਅੰਦੋਲਨਕਾਰੀ ਮੁਹਿੰਮ ਚਲਾਈ। ਇਸ ਮੁਹਿੰਮ ਨਾਲ ਜਾਤੀ ਵਿਤਕਰਾ, ਛੂਆਛੂਤ, ਸਮਾਜਕ ਨਾ ਬਰਾਬਰੀ, ਵਾਲੇ ਸਰੂਪ ਨੂੰ ਨਕਾਰ ਕੇ ਇਕੋ ਬ੍ਰਹਮ ਦੀ ਪੂਜਾ ਕਰਨ ਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ ਤੇ ਅੰਦਰ ਵਸਦੇ ਬੀਠਲੁ ਨੂੰ ਸ੍ਰੇਸ਼ਠ ਦਰਸਾ ਕੇ ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਣ ਲਈ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਈ।

ਹਵਾਲੇ

1. ਪ੍ਰੋ. ਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ, ਭਗਤ ਬਾਣੀ ਸਟੀਕ (ਹਿੱਸਾ ਤੀਜਾ) ਪੰਨਾ ਨੰ : 11.
2. ਭਾਈ ਜੋਧ ਸਿੰਘ, ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਤਥਾ ਹੋਰ ਭਗਤ, ਜੀਵਨੀ ਤੇ ਰਚਨਾ ਪੰਨਾ ਨੰ : 2.
3. ਅਚਾਰੀਆ ਪਰਸੂਰਾਮ ਚਤੁਰਵੇਦੀ, ਉਤਰੀ ਭਾਰਤ ਕੀ ਸੰਤ ਪ੍ਰੰਪਰਾ, ਪੰਨਾ ਨੰ : 108.
4. ਉਹੀ, ਪੰਨਾ ਨੰ : 107.
5. ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਸਾਚਵੇ (ਡਾ.), ਹਿੰਦੀ ਕੇ ਲੋਕ ਪ੍ਰਿਯ ਭਗਤ ਕਵੀ ਸੰਤ ਨਾਮਦੇਵ, ਪੰਨਾ ਨੰ :11.
6. ਹਰਿਭਜਨ ਸਿੰਘ (ਅਨੁ :) ਭਾਰਤੀ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਨਿਰਮਾਤਾ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ, ਪੰਨਾ ਨੰ :107.
7. (ਅਚਾਰੀਆ) ਪਰਸੂਰਾਮ ਚਤੁਰਵੇਦੀ, ਉਤਰੀ ਭਾਰਤ ਕੀ ਸੰਤ ਪ੍ਰੰਪਰਾ, ਪੰਨਾ ਨੰ : 107.
8. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ, ਪੰਨਾ ਨੰ : 67.
9. ਭਾਈ ਜੋਧ ਸਿੰਘ, ਭਗਤ ਨਾਮਦੇਵ ਤਥਾ ਹੋਰ ਭਗਤ, ਪੰਨਾ ਨੰ : 110.
10. ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਸਾਚਵੇ (ਡਾ.), ਹਿੰਦੀ ਕੇ ਲੋਕ ਪ੍ਰਿਯ ਭਗਤ ਕਵੀ ਸੰਤ ਨਾਮਦੇਵ, ਪੰਨਾ ਨੰ :7980.
11. ਭਾਈ ਕਾਨ੍ਹ ਸਿੰਘ ਨਾਭਾ ਮਹਾਨ ਕੋਸ਼, ਪੰਨਾ ਨੰ : 160.
12. www.dictionary.com
13. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ, ਪੰਨਾ ਨੰ : 727.
14. ਉਹੀ, ਪੰਨਾ ਨੰ : 1164.
15. ਡਾ. ਸੰਤੋਖ ਸਿੰਘ, ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਜਾਤ ਤੇ ਜਮਾਤ, ਪੰਨਾ ਨੰ : 25.
16. ਪ੍ਰੋ. ਸਾਹਿਬ ਸਿੰਘ, ਭਗਤ ਬਾਣੀ ਸਟੀਕ (ਹਿੱਸਾ ਤੀਜਾ) ਪੰਨਾ ਨੰ : 15.
17. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ, ਪੰਨਾ ਨੰ : 485.
18. ਉਹੀ, ਪੰਨਾ ਨੰ : 973.

ਮੋਬਾ. 94170-21961, 88475-99282

Scanned by CamScanner

50 49

2022-23

UGC Approved

ISSN : 2456 - 253X

ਮਨੁੱਖੀ ਕਦਰਾਂ ਦਾ ਰਚਨਾਤਮਕ ਸਫ਼ਰ

ਆਖਰ

ਜਨਵਰੀ-ਮਾਰਚ 2023

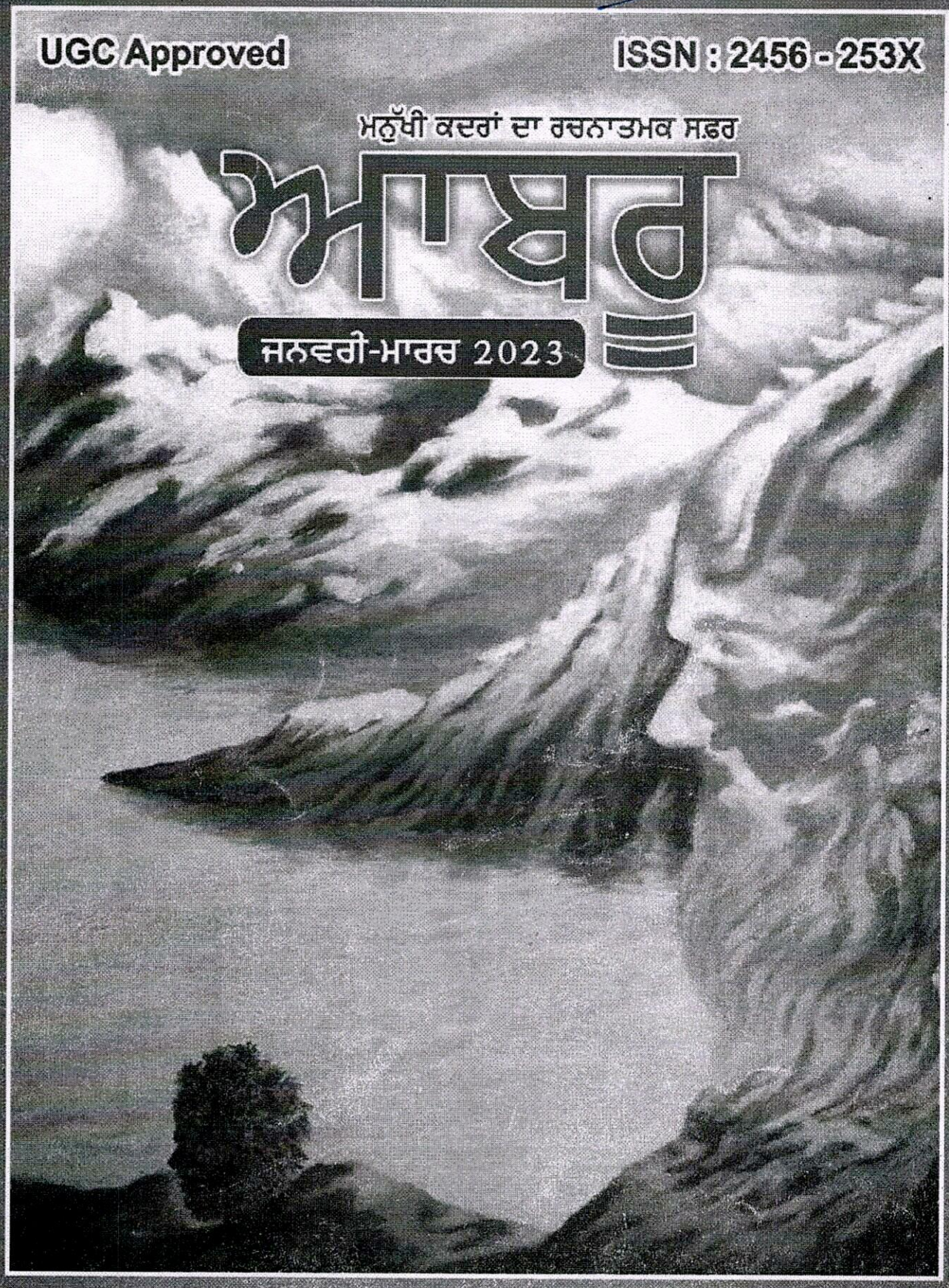

RNI : JKPUN/2002/6333 UGC Care List ISSN : 2456 - 253X

ਆਬਰੂ

ਮਨੁੱਖੀ ਕਦਰਾਂ ਦਾ ਰਚਨਾਤਮਕ ਸਫ਼ਰ

(A Creative Journey of Human Values)

ਸਾਲ : 22 ਅੰਕ : 1 - 3
ਜਨਵਰੀ-ਮਾਰਚ 2023

ਤਰਤੀਬ

ਸੰਪਾਦਕੀ : ਮਸਲਾ ਪੰਜਾਬੀ ਲੇਖਕ ਸਭਾ (ਰਜਿ.) ਜੰਮੂ ਦੇ ਭਵਨ ਦਾ/ਡਾ. ਮੋਨੋਜੀਤ/2
ਖੋਜ ਪੱਤਰ : ਜਰਨੈਲ ਸਿੰਘ ਨਿਰਮਲ ਦਾ ਕਾਵਿ-ਸੰਗ੍ਰਹਿ.../ਡਾ. ਸਤਿੰਦਰ ਚੰਚਲ ਰਾਏ/4
: ਹਰਿਭਜਨ ਸਿੰਘ ਰਚਿਤ ਮਿਸ਼ਰਤ ਕਾਵਿ ਸਿਰਜਨਾ/ਡਾ. ਇੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ/7
: ਪ੍ਰੋ. ਸੁਹਿੰਦਰ ਬੀਰ ਦੀ.../ਮਨਦੀਪ ਕੌਰ, ਸਹਾਇਕ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ : ਡਾ. ਜੋਤੀ ਸ਼ਰਮਾ/10
: ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਤੁਲਨਾਤਮਿਕ ਅਧਿਐਨ ਵਿਧੀ/ਡਾ. ਹਰਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ/12
: ਅਜਮੇਰ ਔਲਖ ਦੀਆਂ ਨਾਟ-ਰਚਨਾਵਾਂ ਵਿੱਚ.../ਮਨਦੀਪ ਸਿੰਘ/16
: ਹਸਰਤ : ਨਾਰੀ ਦੀ ਮੂਕ ਬਗ਼ਾਵਤ/ਡਾ. ਧਰਮਿੰਦਰ ਸਿੰਘ/19
: ਸਮਾਜਿਕ ਚੇਤਨਾ ਦੀ ਝਲਕ : ਨਾਟਕ 'ਰਿਸ਼ਤੇ'/ਡਾ. ਹਰਦੇਵ ਸਿੰਘ/23
: ਮਨਮੋਹਨ ਬਾਵਾ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਨਾਰੀ.../ਅਮਨਦੀਪ ਕੌਰ/26
: ਪਰਵਾਸ ਤੇ ਇੱਛਾ/ਗੁਰਮਿੰਦਰ ਕੌਰ/28
: ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਸੇਖਾ ਦੇ ਨਾਵਲ 'ਹਨੇਰੇ ਗਾਹ' ਦਾ ਆਲੋਚਨਾਤਮਕ ਅਧਿਐਨ.../ਲਵਜੋਤ/30
: ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਦੁਆਰਾ ਰਚਿਤ ਬਾਣੀ.../ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ/33
: ਜੁਝਾਰਵਾਦੀ ਕਾਵਿ ਲਹਿਰ ਦਾ ਚਮਕਦਾ ਤਾਰਾ.../ਸਗਜੀਤ ਸਿੰਘ/36
: ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਵਿੱਚ.../ਗੁਰਨੀਤ ਕੌਰ, ਅਮਨਦੀਪ, ਪਾਰਨ ਗੌੜਾ/38
: ਸਾਕੇਦਾਰੀ ਚਾਦਰੇ ਅਤੇ ਨਾਨਕੇ: ਬਦਲਦੇ ਪਰਿਪੇਖ/ਕੇਵਲ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ/41
: ਵੀਨਾ ਵਰਮਾ ਦੀ ਕਹਾਣੀ 'ਤੇ ਹੋਏ.../ਵੀਨੂੰ ਵਰਮਾ/44
: ਬਹੁਅਰਥਕਤਾ ਅਤੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ ਪਰਸਪਰ.../ਡਾ. ਹਰਵਿੰਦਰ ਪਾਲ ਕੌਰ, ਰਜਨੀ/49
: 'ਸਿਦਕ ਸਵਾਸਾਂ ਸੰਗ' ਗ਼ਜ਼ਲ-ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਵਿੱਚ.../ਡਾ. ਮਨਜੀਤ ਕੌਰ 'ਆਜ਼ਾਦ'/54
: ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਬਾਣੀ : ਸੁਰ ਵੈਰਾਗੀ ਵਿਸ਼ਾ ਆਸ਼ਾਵਾਦੀ/ਡਾ. ਰਜਵਿੰਦਰ ਕੌਰ/58
: ਘੁੰਗਰੂ ਕਥਾ : ਹਾਸ਼ੀਏ ਤੋਂ ਪਾਰ ਵਿਚਰਦੇ.../ਡਾ. ਸੁਨੀਤਾ ਰਾਣੀ/60
: ਬਹੁ ਪਾਸਾਰੀ ਮਾਨਵੀ ਸੰਵੇਦਨਾ ਦਾ ਚਤੇਰਾ.../ਡਾ. ਕਿਰਨ ਗਰਗ/63
: ਵਿਧਵਾਵਾਂ ਦਾ ਜੀਵਨ/ਅੰਮ੍ਰਿਤਪਾਲ ਕੌਰ, ਨਿਗਰਾਨ-ਡਾ. ਨਵਸ਼ਰਨਦੀਪ ਕੌਰ/66
: ਡਾ. ਸੁਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਦੁਸਾਂਝ ਦੀ ਨਾਵਲ਼ ਅਧਿਐਨ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ/ਕੰਵਲਜੀਤ ਸਿੰਘ/68
: 2020 ਦੇ ਕਿਸਾਨ ਅੰਦੋਲਨ ਵਿੱਚ ਸੰਗੀਤ ਦੀ ਭੂਮਿਕਾ/ਡਾ. ਹਰਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ/71
: "ਸ਼ਵੇਤਾਂਬਰ ਨੇ ਕਿਹਾ ਸੀ" : ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਕ ਸ਼ਿਲਪ ਵਿਧਾਨ/ਪ੍ਰਭਜੀਤ ਕੌਰ/75
: ਅਤਰਜੀਤ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਕਲਾ/ਡਾ. ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ/78
: ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਦੀ ਅਭੀਵਿਅਕਤੀ ਕਰਦਾ ਕਾਵਿ ਸੰਗ੍ਰਹਿ.../ਅਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ/81
: ਕਹਾਣੀ ਸੰਗ੍ਰਹਿ 'ਧਾਰਾ ਦੁੱਧ' ਦੇ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦੀ.../ਗੁਰਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ/83
: ਡਾ. ਸੁਸ਼ੀਲਾ ਟਾਕਭੌਰੇ.../ਤਪਿੰਦਰ ਕੌਰ, ਗਾਈਡ : ਡਾ. ਸਤਵੰਤ ਸਿੰਘ, ਸਹਾਇਕ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ/86
: ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦੁਰ ਜੀ ਦੇ ਸ਼ਲੋਕਾਂ ਅੰਦਰ.../ਗੁਰਨਾਮ ਸਿੰਘ/89
: ਪੰਜਾਬੀ ਕੋਸ਼ਾਂ ਵਿਚ ਅੱਖਰ-ਕ੍ਰਮ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ.../ਡਾ. ਸੁਖਦੀਪ ਸਿੰਘ/92
: 'ਕਿਤਾਬ ਬੋਲਦੀ ਹੈ' : ਵੱਖਰੇ ਮੁਹਾਂਦਰੇ ਵਾਲੀ ਸ਼ਾਇਰੀ/ਡਾ. ਅਮਰਬੀਰ ਕੌਰ/95
: ਬਾਲ ਸਾਹਿਤ : ਸਮੱਸਿਆ ਅਤੇ ਸੰਭਾਵਨਾਵਾਂ/ਡਾ. ਸ਼ਾਲੂ ਕੌਰ/98
: ਅਜਮੇਰ ਸਿੱਧੂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀਵਾਦੀ ਸਰੋਕਾਰ/ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ/100
: ਫ਼ਿਰਕਾਪ੍ਰਸਤੀ ਦੀ ਦਾਸਤਾਨ ਹੈ : ਤਮਾਸ਼ਾ/ਆਨੰਦ ਵਰਧਨ/102
: ਰੋਹ ਅਤੇ ਵਿਦਰੋਹ ਦੀ ਪ੍ਰਚੰਡ ਆਵਾਜ਼ : ਅਵਤਾਰ ਸਿੰਘ ਪਾਸ਼/ਡਾ. ਸੰਦੀਪ ਕੌਰ/105
: ਵਿਸ਼ੁੱਧ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਗਾਇਕਾਂ ਦਾ ਠੁਮਰੀ, ਗੀਤ,.../ਡਾ. ਮੁਕਤੇਸ਼ਰੀ ਸ਼ਰਮਾ/108
: "ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਮਰਦੀ ਨਿਰਮਲਾ" ਵਿਚ ਨਵੀਂ ਨਾਰੀ ਦਾ ਬਿੰਬ/ਪ੍ਰਿਆ ਰਾਣੀ/110
: ਚੰਗੇਜ਼ ਆਇਤਮਾਤੋਵ ਦੇ ਨਾਵਲ 'ਅਲਵਿਦਾ ਗੁਲਸਾਰੀ'.../ਵਰਿੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ/112
: ਸ਼ਿਵਚਰਨ ਜੱਗੀ ਕੁੱਸਾ ਦੇ ਨਾਵਲ.../ਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ, ਨਿਗਰਾਨ—ਡਾ. ਮੇਜਰ ਸਿੰਘ/116
: ਵਨੀਤਾ ਕਾਵਿ : ਸਮਾਜਿਕ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਚੇਤਨਾ/ਪ੍ਰਵੀਨ ਕੌਰ/119
: ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ.../ਗੁਰਲਾਲ ਸਿੰਘ, ਨਿਗਰਾਨ : ਡਾ. ਯਾਦਵਿੰਦਰ ਕੌਰ/121
: ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਵਿਚ ਨੈਤਿਕਤਾ ਦੇ ਵਿਭਿੰਨ ਪਾਸਾਰ/ਸੁਖਜੀਤ ਕੌਰ/125
: ਪੰਜਾਬੀ ਕਿੱਸਾ ਕਾਵਿ ਪਰੰਪਰਾ ਦੀ ਵਿਲੱਖਣਤਾ ਅਤੇ.../ਸਰਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ/127

(ਬਾਕੀ ਪੰਨਾ 3 'ਤੇ)

ਸੰਪਾਦਕ
ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ
ਮੋਬਾ : 97976-57211
ਸੰਪਾਦਕ ਮੰਡਲ
ਡਾ. ਮੋਨੋਜੀਤ
ਮੋਬਾ : 94191-39906
ਦੇਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਵਿਸ਼ਵਨਾਗਰਿਕ
ਮੋਬਾ : 95966-52796
ਜੰਗ ਐਸ. ਵਰਮਨ
ਮੋਬਾ : 94192-10834
ਸਹਾਇਕ ਸੰਪਾਦਕ
ਡਾ. ਮਮਤਾ
ਮੋਬਾ : 92892-87778
ਡਾ. ਰਾਜਵੀਰ ਸਿੰਘ
ਮੋਬਾ : 84920-05225
ਡਾ. ਗੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ
ਮੋਬਾ : 99060-03940
ਸਲਾਹਕਾਰ
ਡਾ. ਪ੍ਰੀਤਮ ਸਿੰਘ
ਮੋਬਾ : 88030-83825
ਕਨੇਡਾ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧ
ਡਾ. ਅਰਵਿੰਦਰ ਕੌਰ
ਮੋਬਾ : +1 416-450-0554
ਈਮੇਲ : baljeetraina58@gmail.com
ਟਾਈਟਲ ਪੇਂਟਿੰਗ : ਜੰਗ ਐਸ. ਵਰਮਨ
ਮੁੱਲ : ਇਕ ਕਾਪੀ 150 ਰੁਪਏ
ਦੇਸ਼ ਸਲਾਨਾ : 600 ਰੁਪਏ
ਜੀਵਨਸਾਥ : 10,000 ਰੁਪਏ
ਵਿਦੇਸ਼ ਸਲਾਨਾ : 50 ਡਾਲਰ, 25 ਪੌਂਡ

ਸੰਪਾਦਕ ਜਾਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ ਦਾ ਰਚਨਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਅਕਤ ਵਿਚਾਰਾਂ ਨਾਲ ਸਹਿਮਤ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਨਹੀਂ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਾਦ-ਵਿਵਾਦ ਦਾ ਹਲ ਜੰਮੂ ਵਿਖੇ ਹੀ ਹੋਵੇਗਾ।

ਛਾਪਕ, ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ ਅਤੇ ਮਾਲਕ ਗੁਰਮੁਖ ਸਿੰਘ ਨੇ ਕਲਾਸਿਕ ਪ੍ਰਿੰਟਰਜ਼, ਬੜੀ ਬ੍ਰਾਹਮਣਾ ਤੋਂ ਛਪਵਾ ਕੇ 'ਦਫ਼ਤਰ ਆਬਰੂ' ਮਕਾਨ ਨੰਬਰ-5, ਕੁੰਜਵਾਨੀ, ਸ਼ਹੀਦ ਫਿਲਿੰਗ ਸਟੇਸ਼ਨ ਦੇ ਪਿੱਛੇ, ਜੰਮੂ 180010 ਤੋਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ। ਸੰਪਾਦਕ: ਬਲਜੀਤ ਸਿੰਘ ਰੈਨਾ
Printer, Publisher, and Owner Gurmukh Singh Printed it at M/S Classic Printers, Bari Brahmana and Published at Aabru office, H.No. 5, Kunjwani, Behind Shaheed Filling Station Jammu-180010. Editor, Baljeet Singh Raina

ਖੋਜ ਪੱਤਰ

ਡਾ. ਸੁਸ਼ੀਲਾ ਟਾਕਭੌਰੇ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿਚ ਦਲਿਤ ਨਾਰੀ ਚੇਤਨਾ

— ਤਪਿੰਦਰ ਕੌਰ, ਗਾਈਡ : ਡਾ. ਸਤਵੰਤ ਸਿੰਘ, ਸਹਾਇਕ ਪ੍ਰੋਫ਼ੈਸਰ —

ਨਾਰੀ ਸਰੀਰ ਰੂਪੀ ਸਮਾਜ ਦਾ ਇੱਕ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਅੰਗ ਹੈ ਜਿਸ ਦੀ ਅਣਹੋਂਦ ਸਦਕਾ ਸਮਾਜ ਦਾ ਅੰਤ ਹੋਣਾ ਸੁਭਾਵਿਕ ਹੀ ਹੈ। ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਪਰਭਾਸ਼ਿਤ ਕਰਨ ਲਈ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਮਰਦ ਦੇ ਸਮਵਿਥ ਰੱਖ ਕੇ ਹੀ ਵਾਚਣਾ ਪੈਂਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਆਪਸੀ ਸਬੰਧ ਮੁੱਢ-ਕਦੀਮੀ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਤੋਂ ਬਗੈਰ ਮਾਨਵ ਸਮਾਜ ਦੀ ਕਲਪਨਾ ਵੀ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ। ਇਹ ਰਿਸ਼ਤਾ ਸਾਡੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸੰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਬੁਨਿਆਦ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਸੰਬੰਧਾਂ ਸਦਕਾ ਮਨੁੱਖੀ ਸਮਾਜ ਦੀ ਉਸਾਰੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਢਾਂਚਾ ਹੋਂਦ ਵਿਚ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਜਾਤੀ ਜਨਮ ਆਧਾਰਿਤ ਵਰਤਾਰਾ ਹੈ। ਇਥੇ ਵਿਅਕਤੀ ਜਨਮ ਤੋਂ ਹੀ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਜਾਤ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਮਰਨ ਤੱਕ ਆਪਣੇ ਜਾਤੀ ਸੰਬੰਧਾਂ ਤੇ ਸੰਸਕਾਰਾਂ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਜਾਤੀ ਪ੍ਰਥਾ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜਿਕ ਪ੍ਰਬੰਧ ਨੂੰ ਸਮੁੱਚੇ ਵਿਸ਼ਵ ਸਮੁਦਾਇ ਤੋਂ ਇਕ ਵੱਖਰੇ ਰੂਪ ਦੇ ਸਮੁਦਾਇ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਜਾਤੀ ਵਿਵਸਥਾ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਮਾਨਸਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ, ਆਰਥਿਕ ਅਤੇ ਰਾਜਨੀਤਕ ਵਰਤਾਰਾ ਹੈ ਜਿਸਦੀਆਂ ਜੜ੍ਹਾਂ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਹੀ ਸੂਖ਼ਮ ਰੂਪ ਵਿਚ ਧਰਮ ਨਾਲੋਂ ਵੀ ਵਧੇਰੇ ਡੂੰਘੀਆਂ ਫੈਲੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਹਨ। ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਉਸ ਵਿਅਕਤੀ ਨੂੰ ਦਲਿਤ ਮੰਨਿਆਂ ਗਿਆ ਹੈ ਜਿਹੜਾ ਕਿ ਆਰਥਿਕਤਾ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸਮਾਜਿਕ, ਧਾਰਮਿਕ, ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ, ਰਾਜਨੀਤਕ, ਮਾਨਸਿਕ ਅਤੇ ਜਾਤੀ ਤੌਰ 'ਤੇ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੁੰਦਾ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਲਿਤ ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਹੀ ਜਾਤ ਆਧਾਰਿਤ ਮਾਨਸਿਕ ਗ਼ੁਲਾਮੀ ਹੰਢਾਉਂਦਾ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਹਜਾਰਾਂ ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਦਲਿਤਾਂ ਨੂੰ ਸੱਤਾ, ਸੰਪਤੀ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਮੌਲਿਕ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਵਾਂਝੇ ਰੱਖਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਚਲਦੇ ਆ ਰਹੇ ਵਰਣ ਵਿਵਸਥਾ ਦੇ ਵਰਤਾਰੇ ਨੇ ਇਹਨਾਂ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਅਜਿਹੀ ਬਣਾ ਦਿੱਤੀ ਹੈ ਕਿ ਇਹਨਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇੰਝ ਜਾਪਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜਾਤੀ ਕੁਦਰਤ ਦੀ ਦੇਣ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਪਿਛਲੇ ਜਨਮ ਦੇ ਕਰਮਾਂ ਦਾ ਫ਼ਲ ਹੈ। ਵਰਣ ਵਿਵਸਥਾ ਦੀ ਆੜ ਵਿਚ ਅਜਿਹਾ ਕਰਮ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤ ਲਾਗੂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਦਲਿਤ ਲੋਕ ਆਦਿ ਕਾਲ ਤੋਂ ਹੀ ਜਾਤੀ ਆਧਾਰਿਤ ਰਾਜਨੀਤੀ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੁੰਦੇ ਆ ਰਹੇ ਹਨ।

ਭਾਰਤ ਦੇ ਹਰ ਰਾਜ ਵਿਚ ਵੱਖਰੀ ਕਿਸਮ ਦੀ ਜਾਤੀ ਵਿਵਸਥਾ ਹੈ, ਇਸ ਨੂੰ ਇਸ ਢੰਗ ਨਾਲ ਵੀ ਬਿਆਨ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੇ ਵੀ ਰਾਜ ਵਿਚ ਇਕ ਭਾਰੂ ਜਾਤੀ ਜਿਹੜੀ ਕਿ ਰਾਜਨੀਤੀ ਅਤੇ ਅਰਥ ਵਿਵਸਥਾ 'ਤੇ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਾਬਜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਉਹ ਸ਼ੋਸ਼ਿਤ ਧਿਰਾਂ 'ਤੇ ਆਪਣਾ ਦਾਬਾ ਲਗਾਤਰ ਬਣਾ ਕੇ ਰੱਖਦੀ ਹੈ।

ਸਮਾਜ ਦੇ ਲਤਾੜੇ ਹੋਏ, ਹੱਕਾਂ ਤੋਂ ਵਾਂਝੇ ਅਤੇ ਧਰਮ ਤੋਂ ਵਿਹੂਣੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਮਾਜ ਦੇ ਦੂਸਰੇ ਵਰਗਾਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਵੇਖਣ ਦਾ ਸਾਡੇ ਯੁੱਗ ਪੁਰਸ਼ਾਂ ਦਾ ਸੁਪਨਾ ਸੀ। ਦਲਿਤ ਸਾਹਿਤ ਸਮਾਜਿਕ, ਆਰਥਿਕ, ਧਾਰਮਿਕ, ਰਾਜਨੀਤਕ, ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ, ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਤੋਂ ਉਤਪੰਨ ਹੋਈ ਮਾਨਸਿਕ ਪੀੜਾ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕਰਦਾ ਹੋਇਆ ਦਲਿਤਾਂ ਨੂੰ ਇਸ ਸਮਾਜਿਕ ਪੀੜਾ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਦਵਾਉਣ ਲਈ ਸੰਘਰਸ਼ ਦਾ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਸਰੋਤ ਬਣਦਾ ਹੈ। ਸਹੀ ਅਰਥਾਂ ਵਿਚ ਦੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਦਲਿਤ ਸਾਹਿਤ ਦਾ ਰਚਿਆ ਜਾਣਾ ਹੀ ਦਲਿਤਾਂ ਲਈ ਸੰਘਰਸ਼ ਅਤੇ ਵਿਦਰੋਹ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕਰਮ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਨਾ ਹੈ। ਦਲਿਤ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਦੇ ਮੁੱਖ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਸਰੋਤਾਂ ਵਿਚ ਬੁੱਧ ਧਰਮ, ਅੰਬੇਡਕਰ ਦਰਸ਼ਨ, ਮਾਰਕਸੀ ਦਰਸ਼ਨ ਅਤੇ ਸਾਡੇ ਅਜੋਕੇ ਦਲਿਤ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਦੀ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਹੈ ਜਿਹੜੇ ਲਗਾਤਾਰ ਆਪਣੀ ਸਖ਼ਤ ਮਿਹਨਤ ਸਦਕਾ ਦਲਿਤ ਸਾਹਿਤ ਲਿਖਣ ਵਿਚ ਜ਼ਿਕਰਯੋਗ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਅ ਰਹੇ ਹਨ। ਦਲਿਤ ਸਾਹਿਤ ਕਵਿਤਾ, ਸਵੈਜੀਵਨੀ, ਨਾਵਲ, ਨਾਟਕ, ਕਹਾਣੀ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਹੋਰ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਰੂਪਾਂ ਰਾਹੀਂ ਪੇਸ਼ ਹੁੰਦਾ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਜਿਥੋਂ ਤੱਕ ਹਿੰਦੀ ਦਲਿਤ ਕਹਾਣੀ ਦਾ ਸੰਬੰਧ ਹੈ ਇਹ ਹਾਲੇ ਤੱਕ ਵੀ ਜਾਤੀ ਵਿਵਸਥਾ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਰਚੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਡਾ. ਸੁਸ਼ੀਲਾ ਟਾਕਭੌਰੇ ਹਿੰਦੀ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਦੀ ਕਤਾਰ ਵਿੱਚੋਂ ਸਿਰਕੱਢਵਾਂ ਸਥਾਨ ਰੱਖਦੀ ਹੈ ਜੋ ਸਾਹਿਤ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਵਿਧਾਵਾਂ ਜਿਵੇਂ ਕਹਾਣੀ, ਨਾਵਲ, ਨਾਟਕ, ਸਵੈਜੀਵਨੀ ਆਦਿ ਦੇ ਕੰਮ ਕਰਕੇ ਪਾਠਕਾਂ ਤੋਂ ਵਾਹ-ਵਾਹ ਕਰਵਾਉਣ ਵਾਲੀ ਲੇਖਿਕਾ ਹੈ। ਉਹ ਦਲਿਤ ਵਰਗ ਵਿੱਚ ਜੰਮੀ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਆਪਣੀ ਲੇਖਣੀ ਦਾ ਕੇਂਦਰ ਬਿੰਦੂ ਦਲਿਤ ਵਰਗ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਮਸਲਿਆਂ ਨੂੰ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜਿਕ ਬਣਤਰ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਕਰਕੇ ਦਲਿਤਾਂ ਨਾਲ ਹੋਣ ਵਾਲੀ ਨਾ-ਬਰਾਬਰੀ ਨੂੰ ਪਹਿਲ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਕਲਮਬੱਧ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਇਤਿਹਾਸ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਗਵਾਹ ਹੈ ਕਿ ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਨਾਰੀ ਮਰਦ-ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਦਾ ਸੰਤਾਪ ਭੋਗਦੀ ਹੋਈ ਆਪਣੀਆਂ ਸੱਧਰਾਂ ਦਾ ਘਾਣ ਕਰਕੇ ਹਾਸ਼ੀਏ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਲੇਖਿਕਾ ਇੱਕ ਔਰਤ ਤੇ ਦੂਜੀ ਦਲਿਤ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਦੀ ਦੋਹਰੀ ਮਾਰ ਸਹਿੰਦੀ ਹੋਈ ਆਪਣੀ ਚੇਤਨਾ ਦਾ ਗਲਾ ਨਹੀਂ ਕੁੱਟਣ ਦਿੰਦੀ ਸਗੋਂ ਉਹ ਹੌਸਲੇ ਤੇ ਦ੍ਰਿੜ੍ਹਤਾ ਨਾਲ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਤਨਦੇਹੀ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੋਈ ਸਮਾਜ ਦੇ ਗੰਭੀਰ ਮਸਲਿਆਂ ਤੇ ਗੱਲ ਕਰਨ ਦੀ ਹਿੰਮਤ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਨਵੇਂ ਰਾਹਾਂ ਨੂੰ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਬਣੇ ਬਣਾਏ ਰਾਹਾਂ ਤੇ ਤਾਂ ਹਰ ਕੋਈ ਚੱਲ ਪੈਂਦਾ ਹੈ ਪਰ ਸਮਾਜਿਕ ਮਨਾਹੀਆਂ ਦਾ ਵਿਰੋਧ ਸਹਿ ਕੇ ਨਵੇਂ ਰਾਹਾਂ ਨੂੰ ਬਣਾਉਣ ਤੇ ਫਿਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਰਾਹਾਂ ਤੇ ਨਿਧੜਕ ਹੋ ਕੇ ਚੱਲਣਾ ਤੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਨਵੀਂ ਸੇਧ ਦੇਣਾ ਕਿਸੇ ਕਿਸੇ ਦੇ ਹਿੱਸੇ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਜੋ ਡਾ. ਸੁਸ਼ੀਲਾ ਜੀ ਦੇ ਹਿੱਸੇ ਆਇਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਲੇਖਣੀਆਂ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਗਵਾਹੀ ਭਰਦੀਆਂ ਹਨ ਕਿ ਲੇਖਿਕਾ ਦਲਿਤ ਵਰਗ ਵਿੱਚ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਉਸ ਨੂੰ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ

ਮਿਲਦੀ ਹੈ। 'ਝਰੋਖੇ' ਕਹਾਣੀ ਵਿਚ ਬਿਆਨ ਕਰਦੀ ਹੋਈ ਉਹ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ :

''ਮੁਝੇ ਅਪਨੀ ਜਾਤਿ ਕੇ ਵਿਸ਼ਯ ਮੇਂ ਬਚਪਨ ਸੇ ਜਾਨਕਾਰੀ ਥੀ। ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ ਬਚਪਨ ਸੇ ਸਿਖਾ ਕਰ ਔਰ ਸਮਝਾ ਕਰ ਰਖਤੇ ਥੇ ਕਿ ਹਮ ਨਿਮ੍ਨ ਜਾਤਿ ਕੇ ਹੈਂ, ਊਂਚੀ ਜਾਤਿ ਕੇ ਲੋਗ ਅਪਨੇ ਸੇ ਭੇਦਭਾਵ ਮਾਨਤੇ ਹੈਂ, ਇਸਲਿਏ ਕਭੀ ਕਿਸੀ ਸਹੇਲੀ ਕੇ ਘਰ ਕੇ ਭੀਤਰ ਨਹੀਂ ਜਾਨਾ ਔਰ ਨਾ ਹੀ ਉਨਕੇ ਘਰ ਕੇ ਬਰ੍ਤਨ ਮੇਂ ਕੁਛ ਖਾਨਾ ਯਾ ਪੀਨਾ। ਵੇ ਲੋਗ ਅਪਨੇ ਸੇ ਏਤਰਾਜ ਕਰਤੇ ਹੈਂ, ਇਸਲਿਏ ਅਪਨੇ ਕੋ ਭੀ ਕੁਛ ਕਹਨੇ ਸੁਨਨੇ ਕਾ ਮੌਕਾ ਨਹੀਂ ਦੇਨਾ। ਮਾਂ ਕੀ ਸਿਖਾਈ ਸਬ ਅਚ੍ਛੀ ਬਾਤੋਂ ਕੇ ਸਾਥ ਯਹ ਬਾਤ ਭੀ ਅਚ੍ਛੀ ਤਰਹ ਯਾਦ ਥੀ ਕਿ ਹਮ ਅਛੂਤ ਹੈ ਔਰ ਜਹਾਂ ਤਕ ਹੋ ਸਕੇ ਹਮੇਂ ਖੁਦ ਸਵਰ੍ਣੋਂ ਸੇ ਦੂਰ ਰਹਨਾ ਚਾਹਿਏ। ਹਮ ਜਾਤਿ ਮੇਂ ਛੋਟੇ ਹੈਂ, ਬਡ਼ੇ ਲੋਗ ਹਮਾਰੇ ਸਾਥ ਖਾਨੇ ਪੀਨੇ ਮੇਂ ਬੁਰਾ ਮਾਨਤੇ ਹੈਂ, ਹਮ ਉਨਕੇ ਘਰ ਕੇ ਭੀਤਰ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਤੇ।''[1]

ਅਜਿਹੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿੱਚੋਂ ਉਪਜੀ ਬੇਚੈਨੀ ਉਸ ਨੂੰ ਕਲਮ ਚੁੱਕਣ ਲਈ ਮਜਬੂਰ ਕਰਦੀ ਹੈ ਜੋ ਇੱਕ ਹਥਿਆਰ ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਕੇ ਸਮਾਜਿਕ ਕੁਰੀਤੀਆਂ ਦਾ ਕਤਲ ਕਰਨ ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਦੀ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਦਲਿਤ ਵਰਗ ਵਿੱਚ ਚੇਤਨਾ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਲਈ ਆਵਾਜ਼ ਉਠਾਉਣ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਦੋਹਰੀ ਮਾਰ ਸਹਿੰਦੀਆਂ ਔਰਤਾਂ ਨਾਲ ਸਬੰਧਿਤ ਮਸਲਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ ਤੇ ਦਲਿਤ ਨਾਰੀ ਦੀ ਦਸ਼ਾ, ਘੁਟਣ, ਚੇਤਨਾ ਆਦਿ ਵਿਸ਼ਿਆਂ ਨੂੰ ਕੇਂਦਰ ਵਿੱਚ ਰੱਖ ਕੇ ਦਲਿਤ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਚੇਤਨ ਕਰਨ ਦਾ ਯਤਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਹੱਥਲੇ ਖੋਜ ਪੇਪਰ ਵਿੱਚ ਅਸੀਂ ਡਾ. ਸੁਸ਼ੀਲਾ ਟਾਕਭੌਰੇ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿਚ ਦਲਿਤ ਨਾਰੀ ਦੀ ਚੇਤਨਾ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਕਰਾਂਗੇ। ਕਹਾਣੀ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਅਜਿਹੀ ਵਿਧਾ ਹੈ ਜੋ ਸਾਹਿਤ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਵਿਧਾਵਾਂ ਤੋਂ ਪੁਰਾਣਾ ਅਤੇ ਲੋਕਪ੍ਰਿਆ ਰੂਪ ਹੈ।

''ਕਹਾਣੀ ਇੱਕੋ ਬੈਠਕ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹੀ ਜਾਣ ਵਾਲੀ ਉਹ ਸਾਹਿਤਕ ਰਚਨਾ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੇ ਆਕਾਰ, ਵਸਤੂ, ਆਸ਼ੇ ਤਰਤੀਬ ਤੇ ਬਣਤਰ ਦੇ ਲਿਹਾਜ਼ ਨਾਲ ਇੱਕ ਸਵੈ-ਧੀਨ ਅੰਗ ਹੈ।''[2]

ਦਲਿਤ ਨਾਰੀ ਚੇਤਨਾ ਬਾਰੇ ਗੱਲ ਕਰਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਅਸੀਂ ਚੇਤਨਾ ਬਾਰੇ ਗੱਲ ਕਰਾਂਗੇ ਕਿ ਚੇਤਨਾ ਦਾ ਸਬੰਧ ਮਨੁੱਖੀ ਅਹਿਸਾਸ ਨਾਲ ਹੈ। ਇਹ ਅਹਿਸਾਸ ਅੰਤਰਮੁਖੀ ਜਾਂ ਬਾਹਰ ਮੁਖੀ ਕਿਸੇ ਵੀ ਕਿਸਮ ਦਾ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਚੇਤਨਾ ਕਿਸੇ ਚੀਜ ਬਾਰੇ ਜਾਣੂ ਹੋਣ ਦੀ ਅਵਸਥਾ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਕਾਰਜ ਦੀ ਮਾਲਕ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਅਜਿਹੀ ਚੇਤਨਾ ਡਾ ਸੁਸ਼ੀਲਾ ਟਾਕਭੌਰੇ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਬਿਰਤਾਂਤ ਰਾਹੀਂ ਦਲਿਤ ਨਾਰੀ ਪਾਤਰਾਂ ਦੇ ਜ਼ਰੀਏ ਉੱਭਰਦੀ ਹੋਈ ਦੇਖੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। 'ਆਤੰਕ ਕੇ ਸਾਏ ਮੇਂ' ਸ਼ੋਲਾ ਨਾਮ ਦੀ ਦਲਿਤ ਪਾਤਰ ਜੋ ਪੜ੍ਹਦੇ ਸਮੇਂ ਇੱਕ ਸਾਧਾਰਨ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਰਹਿੰਦੀ ਸੀ, ਉਸ ਨੂੰ ਸਮਾਜ ਨਾਲ ਕੋਈ ਲੈਣਾ ਦੇਣਾ ਨਹੀਂ ਸੀ ਪਰ ਪੜ੍ਹਾਈ ਪੂਰੀ ਕਰਨ ਉਪਰੰਤ ਉਹ ਚੇਤਨ ਹੋਈ ਦੇਖੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।

''ਮੈਂ ਦਲਿਤ ਸਮਾਜ ਕੇ ਬਾਰੇ ਮੇਂ ਸੋਚਨੇ ਲਗੀ ਹੂੰ, ਵਿਖਮਤਾਵਾਦੀ, ਜਾਤਿਵਾਦੀ ਸਮਾਜ ਵ੍ਯਵਸ੍ਥਾ ਕੇ ਬਾਰੇ ਮੇਂ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨੇ ਲਗੀ ਹੂੰ। ਜਾਤਿ ਵ੍ਯਵਸ੍ਥਾ ਕੇ ਵਿਰੋਧ ਮੇਂ ਤਰ੍ਕ ਵਿਤਰ੍ਕ ਦੇਨੇ ਲਗੀ ਹੂੰ। ਸਮਾਜ ਮੇਂ ਅਪਨਾ ਸ੍ਥਾਨ ਨਿਸ਼੍ਚਿਤ ਕਰਨੇ ਲਗੀ ਹੂੰ।''[3]

ਬੇਸ਼ੱਕ ਸ਼ੋਲਾ ਦਲਿਤ ਵਰਗ ਵਿੱਚ ਪੈਦਾ ਹੋਈ ਸੀ ਅਜਿਹੀ ਹਨੇਰੇ ਵਾਲੀ ਸਿੱਖਿਆ ਹੀ ਉਸ ਨੂੰ ਘਰ ਤੋਂ ਮਿਲਦੀ ਰਹੀ ਪਰ ਪੜ੍ਹ ਲਿਖ ਕੇ ਉਹ ਸਮਾਜ ਦੇ ਦਲਿਤ ਵਰਗ ਦੇ ਮਸਲਿਆਂ ਬਾਰੇ ਸੋਚਣ ਲੱਗੀ ਜੋ ਉਸ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਵਿੱਚ ਗੂੜ੍ਹੇ ਉੱਕਰੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਲੇਖਿਕਾ ਨੇ ਦਲਿਤ ਨਾਰੀ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਅਨੇਕਾਂ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਤੇ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਭਾਰਤੀ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਕਾਣੀ ਵੰਡ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਦਲਿਤ ਵਰਗ ਵਿੱਚ ਪੈਦਾ ਹੋਈ ਨਾਰੀ ਦੀ ਤਸਵੀਰ ਦੇਖੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਦਲਿਤ ਨਾਰੀ ਦੀ ਘੁਟਣ, ਨਾਰੀ ਜਾਗ੍ਰਿਤੀ, ਨਾਰੀ ਸੰਘਰਸ਼, ਨਾਰੀ ਸ਼ੋਸ਼ਣ, ਸਮਾਜਿਕ ਅੱਤਿਆਚਾਰ, ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਆਦਿ ਨੂੰ ਦੇਖਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜੋ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਚੇਤਨ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦੇ ਹਨ। 'ਤ੍ਰਿਸ਼ੂਲ' ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਘੁਟਣ ਵਿੱਚੋਂ ਉਪਜੀ ਚੇਤਨਾ ਨੂੰ ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਨਾਇਕਾ ਰੇਣੂ ਦੇ ਜ਼ਰੀਏ ਦੇਖਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਉਹ ਰਾਤ ਦੇ ਸੁਪਨੇ ਬਾਰੇ ਸੋਚਦੀ ਹੈ ਕਿ ਕੋਈ ਟਰੱਕ ਡਰਾਈਵਰ ਉਸ ਦਾ ਪਿੱਛਾ ਕਰਕੇ ਉਸ ਦੀ ਬੇਟੀ ਨੂੰ ਉਸ ਤੋਂ ਖੋਹਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ ਪਰ ਰੇਣੂ ਭੱਜ ਕੇ ਉਸ ਟਰੱਕ ਡਰਾਈਵਰ ਤੋਂ ਆਪਣਾ ਪਿੱਛਾ ਛੁਡਾਉਂਦੀ ਹੈ ਤੇ ਆਪਣੇ ਕੱਚੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਲੁਕਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਨਾ ਦਰਵਾਜ਼ਾ, ਨਾ ਖਿੜਕੀ ਹੈ। ਫਿਰ ਉਸ ਨੂੰ ਪੁਰਾਣੀ ਗੱਲ ਚੇਤੇ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਕਿ ਜਦ ਉਹ ਦਸਵੀਂ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹਦੀ ਸੀ ਤਾਂ ਉਸ ਦੇ ਲਈ ਕੋਈ ਉੱਚ ਘਰਾਣੇ ਦਾ ਰਿਸ਼ਤਾ ਆਇਆ ਪਰ ਉਸ ਦੇ ਪਿਤਾ ਨੇ ਇਸ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨੂੰ ਕੋਰੀ ਨਾਂਹ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਸੀ। ਰੇਣੂ ਦੇ ਮਨ ਵਿੱਚ ਅੱਜ ਵੀ ਉਹ ਹੀ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਜੇਕਰ ਉਹ ਵੱਡੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਵਿਆਹੀ ਜਾਂਦੀ ਤਾਂ ਅੱਜ ਵਰਗੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਕਿੱਥੇ ਉਸ ਦੇ ਹਿੱਸੇ ਆਉਣੀ ਸੀ। ਉਹ ਆਪਣੀ ਹਾਲਤ ਤੋਂ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਉੱਭਰਨੀ। ਇੱਥੇ ਉਸ ਦੀ ਚੇਤਨਾ ਦੇਖੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ ਜੋ ਇਹ ਸੋਚਦੀ ਹੈ ਕਿ ਚੰਗਾ ਹੋਇਆ ਉਸ ਦੇ ਪਿਤਾ ਨੇ ਅਮੀਰ ਘਰ ਦੇ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨੂੰ ਇਨਕਾਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। 'ਟੂਟਤਾ ਵਹਿਮ' ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਲੇਖਿਕਾ ਜਾਤੀ ਭੇਦ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕਰਕੇ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਜਾਗ੍ਰਿਤ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਦੇਖਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਕਾਲਜ ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਸਫ਼ਾਈ ਸੇਵਿਕਾ ਕਾਲਜ ਦੀਆਂ ਅਧਿਆਪਕਾਵਾਂ ਨੂੰ ਕੋਲ ਬੈਠ ਕੇ ਚਾਹ ਪੀਣ ਬਾਰੇ ਪੁੱਛਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਕਈ ਅਧਿਆਪਕਾਵਾਂ ਉਸ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਬੈਠਣਾ ਚੰਗਾ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦੀਆਂ ਪੰਤੂ ਬਹੁਜਨ ਸਮਾਜ ਦੀ ਇੱਕ ਅਧਿਆਪਕਾ ਉਸ ਨੂੰ ਨਾਲ ਬਿਠਾਉਂਦੀ ਹੋਈ ਇਹ ਕਹਿੰਦੀ ਹੈ :

''ਭਾਈ ਬੈਠ ਗਈ ਤੋ ਕ੍ਯਾ ਹੁਆ, ਵਹ ਭੀ ਤੋ ਇੰਸਾਨ ਹੈ, ਜੈਸੇ ਹਮ ਚਾਯ ਪੀਨੇ ਆਏ ਹੈਂ ਵੈਸੇ ਵਹ ਭੀ ਚਾਯ ਪੀਨੇ ਆਈ ਹੈ, ਮੈਂ ਤੋ ਜਾਤ-ਪਾਤ ਕੋ ਬਿਲ੍ਕੁਲ ਨਹੀਂ ਮਾਨਤੀ, ਸਬ ਕੋ ਭਗਵਾਨ ਨੇ ਬਨਾਯਾ ਹੈ।''[4]

ਡਾ. ਸੁਸ਼ੀਲਾ ਟਾਕਭੌਰੇ ਨੇ ਆਪਣੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿੱਚ ਕੇਵਲ ਸਿਖਿਅਤ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਚੇਤਨ ਹੀ ਨਹੀਂ ਦਿਖਾਇਆ ਸਗੋਂ ਉਹ ਨਾਰੀਆਂ ਜੋ ਕੋਰੀਆਂ ਅਨਪੜ੍ਹ ਨੇ, ਜੋ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਭਰ ਦਲਿਤ ਵਰਗ ਵਿੱਚ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਦਾ ਸੰਤਾਪ ਆਪਣੇ ਪਿੰਡੇ ਤੇ ਹੰਢਾਉਂਦੀਆਂ ਨੇ, ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਚੇਤਨ ਹੋਇਆ ਦਿਖਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਜਿਵੇਂ 'ਸਿਲਿਆ' ਕਹਾਣੀ ਵਿੱਚ ਸਿਲਿਆ ਦੀ ਮਾਂ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਚੇਤੰਨ ਹੈ। ਪੜ੍ਹਾਈ

22-23

ISSN: 2320-9690

PARKH

ਪਰਖ

Refereed Research Journal of
Punjabi Language and Literature

VOL.1, JAN-JUNE 2022

Chief Editor:
Dr. Sarabjit Singh

Editor:
Dr. Yog Raj

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਅੰਕ
ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ
ਬਟਾਲਵੀ

SHIV KUMAR
VISHESH ANK

Department of Punjabi
Panjab University, Chandigarh

ISSN : 2320-9690

PARKH

Refereed Research Journal of Punjabi Language, Culture and Literature

(Bi-Annual)

Vol. I January-June 2022

Shiv Kumar Batalvi Vishesh Ank

Chief Editor
Prof. Sarabjit Singh

Editor
Prof. Yog Raj

55 49 54

ਤਤਕਰਾ

ਦੋ ਸ਼ਬਦ

ਭੂਮਿਕਾ

1. ਮੇਰੇ ਇਕ ਗੀਤ ਦਾ ਜਨਮ — ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ
2. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਦੀ ਕਾਵਿ ਯਾਤਰਾ ਨੂੰ ਭੋਲਾਵੇ ਦੇ ਵਰਦਾਨ ਤੋਂ ਗਿਆਨ ਦੇ ਸਰਾਪ ਤਕ — ਡਾ. ਅਤਰ ਸਿੰਘ
3. ਕੁੱਖ ਵਿਚਲੀ ਕਬਰ ਦਾ ਹਉਕਾ ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਬਟਾਲਵੀ — ਡਾ. ਸੁਖਦੇਵ ਸਿੰਘ ਸਿਰਸਾ
4. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਬਟਾਲਵੀ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਦਾ ਲੋਕਧਾਰਾਈ ਅਵਚੇਤਨ (ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ) — ਡਾ. ਯੋਗ ਰਾਜ
5. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ : ਅਤੀਤ ਅਤੇ ਵਰਤਮਾਨ — ਡਾ. ਸਰਬਜੀਤ ਸਿੰਘ
6. ਲੂਣਾ : ਸਮਾਜਿਕ ਪਰਿਪੇਖ — ਡਾ. ਜਸਪਾਲ ਕੌਰ ਢਿੱਲੋਂ
7. ਸ਼ਿਵ ਕਾਵਿ ਦਾ ਲੋਕਧਾਰਾਈ ਅਧਿਐਨ — ਡਾ. ਜਸਲੀਨ ਕੌਰ
8. ਲੂਣਾ : ਨਾਰੀਵਾਦੀ ਪਰਿਪੇਖ — ਡਾ. ਪਰਮਜੀਤ ਕੌਰ ਸਿੱਧੂ
9. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਦੀ ਕਾਵਿ-ਸਿਰਜਣਾ ਦਾ ਅੰਤਰ-ਦਵੰਦ — ਡਾ. ਯਾਦਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ
10. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਦੀ ਸ਼ਾਹਕਾਰ ਰਚਨਾ "ਲੂਣਾ" ਦਾ ਨਾਰੀਵਾਦੀ ਪਰਿਪੇਖ — ਡਾ. ਅਕਵਿੰਦਰ ਕੌਰ ਤਲਵਾੜ
11. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਬਟਾਲਵੀ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਸ਼ੀਸ਼ੇ ਦੇ ਅਰਥ-ਪਾਸਾਰ — ਡਾ. ਅਮਰਜੀਤ ਸਿੰਘ
12. ਸਦਾਚਾਰਕ ਵਿਵਸਥਾ ਦਾ ਵਿਰੋਧੀ ਪ੍ਰਵਚਨ : ਲੂਣਾ — ਡਾ. ਗੁਰਬੀਰ ਸਿੰਘ ਬਰਾੜ
13. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਬਟਾਲਵੀ ਦੀ ਕਾਵਿ-ਭਾਸ਼ਾ — ਡਾ. ਹਰਪ੍ਰੀਤ ਸਿੰਘ
14. ਲੂਣਾ ਕਾਵਿ ਦਾ ਉਤਰ ਆਧੁਨਿਕ ਪਰਿਪੇਖ — ਡਾ. ਅਮਨਦੀਪ ਬਾਤਿਸ਼
15. ਪੰਜਾਬੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਲੂਣਾ ਦਾ ਸਥਾਨ — ਡਾ. ਵਿਸ਼ਾਲ ਕੁਮਾਰ
16. ਲੂਣਾ : ਮਨੁੱਖੀ ਹੋਣੀ ਦੇ ਦਾਰਸ਼ਨਿਕ ਸੱਚਾਂ ਦੀ ਕਥਾ — ਡਾ. ਪਵਨ ਕੁਮਾਰ
17. ਸ਼ਿਵ ਰਚਿਤ ਕਵਿਤਾ 'ਇਹ ਔਰਤ ਜਾਤ' : ਮਿਥ ਦੀ ਪਾਣ ਚੜ੍ਹੀ ਨਾਰੀ-ਚੇਤਨਾ — ਡਾ. ਹਰਿੰਦਰ ਕੌਰ ਸੋਹਲ
18. Aesthetics and Poetics of Shiv Kumar Batalvi's Poetry — Dr. Monika Sethi
19. Changing India: Modernity and the Women Questions in Shiv Kumar Batalvi's *Luna* — Dr. Rajesh Kumar Jaiswal
20 ਸ਼ਿਵ ਰਚਿਤ 'ਲੂਣਾ' ਦੇ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਪੱਖ — ਰੁਪਿੰਦਰ ਕੌਰ ਸਿੱਧੂ

Aesthetics and Poetics of Shiv Kumar Batalvi's Poetry

Dr. Monika Sethi

The importance, prestige and creativity of Shiv Kumar Batalvi's Poetry, in the history of modern Punjabi Poetry, has not yet been accorded the status that it really deserves. In the aftermath of extraordinary disruption caused by the partition of Punjab, poetry of disillusionment, despair, rage and self-criticism, coloured with left-wing ideology, was in vogue in East Punjab. During the first half of the 20th century, Punjabi poetry went through the process of a complete transformation from the traditional to modern with political, economical and cultural changes that were taking place everywhere. The World Wars on international front, Russian Revolution and Independence Struggle of the nation brought about several changes in the life and outlook of the people that were also reflected in Punjabi literature. By the time, Shiv Kumar Batalvi started writing poetry in the 6th decade of the twentieth century, the classical Punjabi Poetry period was already long over and post-partition poetry was represented by many emerging progressive and emerging trends. It was perhaps not a coincidence that Shiv Kumar came to age and quickly gained prominence at this crucial juncture when the emerging era of modernity was decisively and permanently replacing the traditional way of writing Punjabi poetry. It was the most opportune time for the talented poets like Shiv Kumar to get attention and fame at a young age as the authentic voice of the new times. Shiv Kumar's poetry begins at that time when dreams of poetry of many genres were being created in the field of Punjabi Poetry. Progressive poetry, already enjoying its zenith, had entered a new era. The logic of the experimental poetry was being constructed opposing the romantic notions of the progressive poetry. It was in this noise of the poetry of different ideologies that the poem of the existence of the individual and "self" and separation was emerging in a new form. The real beauty of his poetry is not that he excelled the new and emerging ways to express modern poetical sensibilities better than most of his contemporaries, but that he did it by artistically combining and fusing them perfectly with the spirit of Punjabi culture and with the age old charm of classical Punjabi poetry and folk songs.

Although Shiv Kumar Batalvi had become a legend in his life time, he remained an anathema for the poets and critics of his generation. But Shiv was oblivious to the criticism hurled at him as a hopeless romantic by the exponents of social poetry. By staying clear of all political, social and ideological debates of his times, he immersed himself in writing

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)
ISSN 2349-638x (Peer Review and Indexed Journal) IMPACT FACTOR 7.367
Devgiri Nagar, Ambejogai Road,Latur
Tq. Latur, Dist. Latur, Pincode 413512
State Maharashtra, India
Email ID's: editor@aiirjournal.com , aiirjpramod@gmail.com
Web site: www.aiirjournal.com

22-23

80/82

Certificate of Publication

Awarded to

Dr. Sudhi Gandhi

Assistant Professor in History
Govt. Ranbir College, Sangrur

For Contributing Research Paper

" Status of women in Guru Nanak Dev ji Bani "

In the

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Online Monthly Peer Review & Indexed Journal with ISSN 2349-638x (Impact factor 7.367)

for the month of **JANUARY 2023 Volume: X Issue: I**

Pramod Prakashrao Tandale
(Chief Editor)

3.3.1

2022-2023

3.3.1.1

JME

JOURNAL OF MANAGEMENT & ENTREPRENEURSHIP

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certified that the article entitled

Identification of Factors Influencing Customer Perception about Brand Image in the Retail Industry

Authored By

Mona Garg
Research Scholar
Department of Commerce
Guru kashi University Talwandi Sabo Bathinda, Punjab, India

Published in Vol. 16, No.1S (X), April-June 2022

JOURNAL OF MANAGEMENT & ENTREPRENEURSHIP with ISSN : 2229-5348
UGC-CARE List Group I
Impact Factor: 4.257

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Editor in chief

2022-23
59

How to Cite:
Singla, S., & Rakshit, M. (2022). Mathematical analysis and control of chikungunya (CHIKV) virus by SEIR model. *International Journal of Health Sciences, 6*(S2), 8398–8407. https://doi.org/10.53730/ijhs.v6nS2.7155

Mathematical analysis and control of chikungunya (CHIKV) virus by SEIR model

Seema Singla
Department of Mathematics, Guru Kashi University, Talwandi Sabo, Bathinda, Punjab, India

Madhuchanda Rakshit
Department of Mathematics, Guru Kashi University, Talwandi Sabo, Bathinda, Punjab, India

Abstract---Chikungunya is a re-emerging arboviral disease in Asia and Africa infected by Aedes mosquitoes which had posed a global threat in several countries. Vector borne diseases are the primary cause of death in most of the world countries, hence it becomes pertinent to control these vector borne diseases. In this paper a mathematical model is provided by dividing it in four components namely Susceptible human, Exposed human, Infected human, Recovered human.The study is carried out on basic reproduction number and stability analysis. A mathematical model is developed for globally asymptotically stable disease-free equilibrium, when the associated reproduction number is less than unity. The aim of this study is to formulate a model where number of infectives will not change and the infection rate equals to the recovery rate by reaching stable endemic equilibrium point.

Keywords---mathematical model, epidemic disease, stability, equilibrium point.

Introduction

Chikungunya is seasonal viral-infectious disease. It is an alphvirus infection and spread through bite from Aedes specially mosquitoes in humans pupolation. The common symptoms of infection are fever and join pain.Mostly syptoms are similar as dengus fever. The fever may be accomplished with headache, musle pain, joint sweilling or rashes. The infectious disease has affected approximately two million people, with some areas having attack rate as high as 68% [Roth at al. 2014].Laith Y. et al. (2013) worked on Chikungunya and present a mathematiocal model of Chikungunya dynamics and control: The major epidemic on Reunion island. A simple, determeinitic mathematical model of the transmission of the

International Journal of Health Sciences ISSN 2550-6978 E-ISSN 2550-696X © 2022.
Manuscript submitted: 9 March 2022, Manuscript revised: 18 April 2022, Accepted for publication: 1 May 2022

Seema